दैनिक किस्मत भीलवाड़ा

Email. kismatbhilwara8888@gmail.com | वर्ष 3 अंक-43 | भीलवाड़ा शुक्रवार 25 जुलाई 2025 | मूल्य- 2 रूपये | REGN.NO .RAJHIN/2023/87379

आवश्यकता है

राजस्थान के भीलवाड़ा से प्रकाशित सबसे तेज समाचार पत्र दैनिक किस्मत भीलवाड़ा को तहसील और जिला स्तर पर महिला/पुरुष संवाददाताओं की आवश्यकता है।

संपर्क करें

दैनिक किस्मत भीलवाड़ा

मो. 9214345421, 8233210027, 9828402526, 6376517605

राज्यसभा : तमिलनाडु के छह सांसदों के लिए विदाई भाषण और उज्जवल निकम के शपथ के बाद विपक्ष ने ठप किया कामकाज

नई दिल्ली

लगातार चौथे दिन विपक्षी हंगामे की शिकार हुई राज्यसभा की कार्यवाही। राज्यसभा में प्रश्नकाल सहित संसदीय विधायी कार्य नहीं निपटाये जा सके। विपक्ष पहले ऑपरेशन सिंदूर पर राज्यसभा में बहस की मांग कर रहा था, जो

तय कर दिया गया। मंगलवार का दिन 16 घंटे की व्यापक बहस के लिए मुकर्रर कर दिया गया है। मगर अब विपक्षी दलों की ओर से बिहार में चल रहे मतदाता विशेष पुनरीक्षण अभियान, यानी एसआईआर को बंद किये जाने की मांग को लेकर हंगामा जारी है। जब कि विपक्षी दलों को इस का इल्म है कि एसआईआर से केंद्र सरकार का कोई लेनादेना नहीं। ये विशेष अभियान पूरी तरह से चुनाव आयोग के अधीन है। चुनाव आयोग की देखरेख में ये अभियान बिहार में चल रहा है और आयोग एक संवैधानिक स्वायत्तशासी संस्था है, न कि केंद्र सरकार के अधीन है। ये बात अलग है कि चुनाव आयोग ने एसआईआर केवल बिहार में ही नहीं, बल्कि देशभर में कराने की घोषणा पहले कर रखी है। विपक्षी दलों ने इस मामले में सुप्रीम कोर्ट में भी याचिका

दाखिल की हुई है। इन सबके बावजूद राज्यसभा के वेल में आकर विपक्षी दलों ने 'एसआईआर वापिस लो' का नारा तब तक बुलंद किया जब तक उच्चसदन की कार्यवाही शुक्रवार के लिए स्थगित नहीं की गई।

इससे पहले उपसभापति हरिवंश ने राज्यसभा की कार्यवाही शुरू की। महाराष्ट्र से राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत राज्यसभा सांसद वरिष्ठ अधिवक्ता उज्जवल निकम ने संसद सदस्यता की शपथ मराठी में ली। शपथ ग्रहण के बाद उपसभापति ने तीन पेज का रिवाइज्ड बिजनेस सदन पटल पर रखने को बारी बारी से संबंधित मंत्रियों और सांसदों से कहा। केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, डा. चंद्रखेखर पेम्मासानी, सुश्री शोभा करांदलाजे ने अपने अपने मंत्रालयों पेपर सदन के पटल पर रखे। जब कि शिवसेना, शिंदे गुट के सांसद मिलिंद देवडा ने टेलिकॉम साइबर सिक्योरिटी रूल्स के पेपर्स रखे। बीजद संसदीय दल के नेता सस्मित पात्रा ने सूचना एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय की संसदीय स्थायी समिति की रिपार्ट उपसभापति के निर्देश पर सदन पटल पर रखा। इरन्ना कराडी ने पंचायती राज मंत्रालय की संसदीय स्थायी समिति की रिपोर्ट पटल पर रखी और केंद्रीय मंत्री डा. जितेंद्र सिंह ने विभिन्न मंत्रालयों के स्टेटमेंट रखे।

उपसभापति ने सदन को बताया कि उन्हें नियम 267 के तहत 13 विपक्षी सांसदों के नोटिस विभिन्न विषयों को लेकर मिले हैं लेकिन सभी तय नियमों की कसौटी पर खरे नहीं लिहाजा सभी नोटिसों को खारिज किया जाता है। उनके इतना कहते ही विपक्षी दल नेता शोर शराबा करने लगे। उपसभापति ने तुरंत स्थिति संभालने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि आज छह सांसदों का कार्यकाल समाप्त हो रहा है। हम सभी को उन्हें विदाई देनी है इसीलिए विपक्षी दलों से आग्रह है कि संयम से सदन की कार्यवाही चलने दें। राज्यसभा के इतिहास में लंबे समय के बाद ऐसा मौका आया जब एक ही राज्य के छह सांसद एक साथ अपना कार्यकाल पूरा कर गुरूवार को निवृत हुए। सभी सांसद तमिलनाडु से हैं। अंबुमणि रामदॉस, वाइको, मोहम्मद अब्दुल्ला, एन चंद्रशेखरन, एम शनमुगम और पी विल्सन आज रिटायर हो गए। इनमें से डीएमके के पी विल्सन को फिर से उनके दल ने राज्यसभा भेजा है। सभी सांसदों का विदाई भाषणा लगभग एक घंटा बीस मिनट तक चला।

सदन के नेता जेपी नड्डा से लेकर कांग्रेस संसदीय दल के उपपनेता प्रमोद तिवाडी और सभी दलों के संसदीय दल के नेताओं ने रिटायर हो रहे सांसदों के उत्तम स्वास्थ्य और बेहतर राजनीतिक जीवन के लिए मंगलकामनाएं दी। उनके बेहतर संसदीय कार्यों को याद किया। खासकर तमिलनाडु के वरिष्ठतम नेताओं में शुमार वाइको के भाषण कला और राज्य के विषय उठाने की कला का समूचे सदन ने एकसुर में खैरमगदम किया। रिटायर हो रहे सभी छह सांसदों ने भी अपने संसदीय अनुभव सदन में साझा किये। सभी दल के नेताओं का बेहतर समन्वय और साथ के लिए शुक्रिया अदा किया। सुबह 11 बजे से दोपहर 12.20 रिटायर हो रहे सांसदों के विदाई भाषण तक राज्यसभा की कार्यवाही चली। सदन पटल पर रखे जाने वाले कुछ विधायी कार्य भी निपटाये गये लेकिन उसके बाद न जीरो ऑवर हो सका, न प्रश्नकाल। दोहपर 2.20 पर उपसभापति भुबनेश्वर कालीता ने विपक्ष के हंगामें के बीच पूरे दिन के लिए उच्चसदन की कार्यवाही स्थगित कर दी। संसद का मॉनसून सत्र 21 अगस्त तक चलेगा, जिसमें 12 से 18 अगस्त तक का अवकाश भी शामिल है।

खबर संक्षेप

महिमा गोसाईं एक्सप्रेस की बोगी पटरी से उतरी

संबलपुर। ओडिशा के संबलपुर में गुरुवार की सुबह महिमा गोसाईं एक्सप्रेस की एक बोगी अचानक

पटरी से उतर गई। यह घटना संबलपुर सिटी स्टेशन के पास सुबह करीब 9:15 बजे हुई, जब ट्रेन भुवनेश्वर से संबलपुर की ओर आ रही थी। खबर मिलते ही रेलवे और पुलिस विभाग तुरंत हरकत में आए। राहत रही कि किसी को कोई चोट नहीं पहुंची।

खिलाड़ी हुड्डा को गंगा में डूबने से बचाया

प्रयागराज। गंगा में बह रहे युवक को बचाकर बुधवार को उत्तराखंड पुलिस ने दावा किया कि भारतीय

कबड्डी टीम के पूर्व कप्तान दीपक हुड्डा को बहने से बचाया गया है। हुड्डा ने पहले तो पुलिस के इस दावे को खारिज कर दिया। लेकिन कबूला कि वे ही नदी में गिर गए थे। हरकी पैड़ी क्षेत्र में उनको घाट पर मौजूद 40वीं वाहिनी पीएसी की आपदा राहत टीम ने सकुशल बचा लिया।

निकम ने ली राज्यसभा में मनोनीत सदस्य की शपथ

नई दिल्ली। राज्यसभा में वरिष्ठ वकील एवं न्यायविद् उज्वल निकम ने मनोनीत सदस्य के रूप में शपथ ली। निकम ने मराठी में ईश्वर के नाम पर शपथ ली। शपथ लेने के बाद सदस्यों ने मेजें थपथपाकर उनका स्वागत किया। निकम एक विख्यात वकील हैं, जिन्होंने सरकारी वकील के रूप में 2008 सहित विभिन्न महत्वपूर्ण मुकदमों को अभियोजन पक्ष की ओर से लड़ा था। उन्होंने 2024 में मुंबई उत्तर मध्य सीट से भाजपा के टिकट पर लोकसभा चुनाव लड़ा था, जिसमें वह हार गये थे।

15 दिन में बनाएंगे नई पार्टीः टीएमसी विधायक

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की भरतपुर विधानसभा सीट से विधायक हुमायूं कबीर ने बगावती

तेवर दिखाने शुरू कर दिए हैं। पूर्व आईपीएस अधिकारी ने अपनी ही पार्टी को अल्टीमेटम देते हुए 15 दिन का समय दिया है। उनका कहना है अगर पार्टी के अंदर सब कुछ ठीक नहीं हुआ तो वह नई पार्टी बना लेंगे। पार्टी के ही नेता विकासमें बाधा डाल रहे हैं।

सुरों के सरताज बाबला मेहता का निधन

नई दिल्ली। 'वॉयस ऑफ मुकेश' के जरिए सिनेमा जगत में अपनी खास पहचान बनाने वाले प्लेबैक

सिंगर बाबला मेहता को लेकर बुरी खबर सामने आई है। बताया जा रहा है कि अब बाबला इस दुनिया में नहीं रहे हैं। 90 के दशक में अपनी जादुई आवाज से बाबला मेहता ने फैंस के दिलों को सुकून पहुंचाया था। उनके निधन से फिल्म इंडस्ट्री को एक बड़ा झटका पहुंचा है।

अवैध खनन के मामले में जिंदल के स्पष्टीकरण से स्थिति साफ

जिंदल सॉ लिमिटेड ने अवैध खनन के आरोपों को बताया बेबुनियाद

सरकारी सर्वे रिपोर्ट में पुष्टि, लीज क्षेत्र में ही कर रही है जिंदल सॉ लिमिटेड खनन - सिन्हा

किस्मत भीलवाड़ा

भीलवाड़ा । देश की प्रतिष्ठीत कम्पनी जिंदल सॉ लिमिटेड को जिले के ग्राम सुरास में खान विभाग ने क्षेत्र की आराजी नम्बर 2096 का कुल रकबा 172 बीघा 07 बिस्वा (43.5931 हैक्टेयर) चारागाह भूमि पर153 बीघा 10 बिस्वा (38.8240 हैक्टेयर) में खनन स्वीकृति जारी की गई । उक्त आराजी को रेखांकित करते हुए अलग से दर्ज कर राजस्व रिकॉर्ड में कम्पनी के नाम दर्ज है। इस मामले में कम्पनी के डॉ.एसपी सिन्हा ने बताया कि कतिपय अखबार में अवैध खनन एवं काम रूकवाने सम्बधित समाचार के बारे में जिन्दल सॉ लिमिटेड की ओर से स्पष्ट किया कि कम्पनी ने राज्य सरकार द्वारा आयरन ओर के खनन कार्य के लिए खनन पट्टा संख्या 631/05 जारीशुदा क्षेत्र में ही कम्पनी अपनी लीजशुदा एरिया में ही खनन कार्य कर रही है। उन्होने स्पष्ट किया की शिकायत करता द्वारा वास्तविक तथ्यों को पोशीदा रख कर कार्यवाही करवाई जा रही है। जिंदल सॉ लिमिटेड ने शिकायत को मिथ्या व आधारहीन बताया। इस बारे में जिंदल सॉ लिमिटेड में वास्तविक स्थिति बताते हुए ग्राम सुरास में कम्पनी को खनन के लिए लीज किये गये भूमि के बारे में बताया गया कि राज्य सरकार में संख्या 631/05 आवंटित है, जिसके अन्तर्गत राजस्व ग्राम सुरास की आराजी संख्या 2096 रकबा 172 बीघा 07 बिस्वा (43.5931 हैक्टेयर) किस्म चारागाह जिसमें से रकबा 153 बीघा 10 बिस्वा (38.8240 हैक्टेयर) में खनन स्वीकृति जारी होकर नया आराजी नं. 2096/1 रेखांकित किया जाकर अलग से दर्ज किया किया है, जो राजस्व रिकॉर्ड में कम्पनी के नाम दर्ज है। उन्होने बताया कि कि आराजी संख्या 2096 का शेष रकबा जो खनन क्षेत्र की सीमा से बाहर आता है जो कि राजस्व रिकॉर्ड में रेखांकित है। उक्त दोनों खसरे पटवार नक्शे के अनुरूप कम्प्युटर में ऑन लाईन दर्ज करते समय पटवार नक्शे के अनुरूप दर्ज/दर्शित नहीं किया गया है। उन्होने स्पष्ट किया कि पूर्व में भी इसी आराजी के संबंध में विवाद की स्थिति उत्पन्न हुई थी तब भी भीलवाड़ा के जिला कलेक्टर के आदेशानुसार भू-प्रबन्ध विभाग एवं राजस्व विभाग की संयुक्त टीम ने ग्राम सुरास की आराजी नम्बर 2096 व 2096/1 का संयुक्त सर्वे किया जाकर मौका रिपोर्ट एवं सर्वे सुपरइम्पोज नक्शा रिपोर्ट 09.फरवरी 2024 को भीलवाड़ा के जिला कलेक्टर को पेश की गई, जिसके अनुसार शीट नम्बर 6 में आराजी नम्बर 2096 का रकबा 10.7773 हैक्टेयर बनता है। आराजी नं. 2096/1 का राजस्व नक्शा शीट नं. 4 में रकबा 0.6687 हैक्टेयर व शीट नं. 5 में रकबा 4.6938 हैक्टेयर कुल रकबा 5.3625 हैक्टेयर जो कि डॉटेड लाईन से दर्शाया गया है, जबकि नवम्बर 2020 में किये गये डिजिटलाईजेशन में उक्त डॉटेड लाईन ऑनलाईन नक्शे में सहवन से नही दर्शायी गई जिसके कारण ऑनलाईन नक्शे में यह आराजी नम्बर 2096 चारागाह (राजकीय) दर्ज हो गया। जबकि वास्तविकता में उक्त रकबा 5.3625 हैक्टेयर राजस्व नक्शा शीट अनुसार आराजी नं. 2096/1 का ही भाग है। इस प्रकार उक्त एरिया जिन्दल सॉ लिमिटेड को आवंटित होकर खनन कार्य हेतु अनुमत है और कम्पनी द्वारा किसी प्रकार से अवैध खनन नहीं किया जा रहा है। कम्पनी ने उपखण्ड अधिकारी, माण्डल द्वारा कलक्टर, भीलवाड़ा को प्रस्तुत पत्र दिनांक 09.02.2024 के साथ मौका रिपोर्ट एवं सर्वे सुपरइम्पोज नक्शा रिपोर्ट की प्रमाणित प्रति संलग्न है। कम्पनी के डॉ . एसपी सिन्हा ने स्पष्ट किया कि इस मामले में पूर्व में प्रकाशित एक समाचार के मामले में जिला कलक्टर के आदेशानुसार अधीक्षण खनि अभियन्ता एवं सहायक खनि अभियन्ता, खान एवं भू-विज्ञान विभाग, भीलवाड़ा की टीम ने 4 जून.2025 को तहसीलदार, माण्डल मय राजस्व टीम की उपस्थिति में पुन- उक्त क्षेत्र का सर्वे किया जाकर भीलवाड़ा के जिला कलक्टर को अवगत कराया गया है कि कम्पनी द्वारा आवंटित क्षेत्र में ही खनन कार्य किया जा रहा है और किसी भी तरह की अवैध खनन गतिविधियां नहीं की जा रही है। इस मामले में कम्पनी का दावा है कि सुरास ग्राम में नियमानुसार वैध खनन कार्य किया जा रहा है। कम्पनी का आरोप है कि बाहरी तथ्यों/आर्थिक प्रलोभन के वशीभूत होकर बिना किसी औचित्य व आधार के कार्य को बाधित किया जा रहा है और वास्तविक तथ्यों पोशीदा रखकर बिना कम्पनी का पक्ष जाने ही ऐसी मिथ्या व आधारहीन समाचार को उचित नही कहा जा सकता है।

युवक ने जहर खाकर सुसाइड कर लिया

परिजनों से बोला- मुझे बचा लो, मैं मरना नहीं चाहता; एमजी हॉस्पिटल में तोड़ा दम

भीलवाड़ा

भीलवाड़ा जिले के पारोली थाना क्षेत्र में एक युवक ने जहर खाकर सुसाइड कर लिया। पॉइजन खाने के बाद जब परिजनों को पता चला तो उसे हॉस्पिटल लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। मामला भगवानपुरा गांव का है।

मुझे बचा लो, मैं मरना नहीं चाहता

पारोली थाने के हेड कॉन्स्टेबल रणवीर ने बताया कि भगवानपुरा निवासी सरदार (20) पिता विजय सिंह बंजारा ने बीती रात अपने माता पिता के सोने के बाद जहर खा लिया। रात करीब 2 बजे युवक की हालत बिगड़ने पर उसने परिजनों को बताया और कहा कि मैंने जहर की गोली खा ली है, मुझे बचा लो में मरना नहीं चाहता। इस पर परिजन तुरंत उसे पहले शाहपुरा अस्पताल ले गए, जहां युवक की हालत ज्यादा बिगड़ने पर प्राथमिक उपचार के बाद उसे भीलवाड़ा के महात्मा गांधी हॉस्पिटल रेफर कर दिया गया।

परिजनों को सौंपा शव

भीलवाड़ा के एमजी हॉस्पिटल के आईसीयू वार्ड में आज उसने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। पुलिस ने युवक के शव पोस्टमॉर्टम करवाकर परिजनों को सौंप दिया।

कारणों का पता नहीं

युवक के जहर खाकर सुसाइड करने के कारणों का फिलहाल कोई पता नहीं चल पाया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

हरियाणा में कुपोषण की गिरफ्त में बच्चे, भाजपा सरकार की नाकाम योजनाओं का परिणामः सैलजा

सांसद बोली, हरियाणा सरकार की पोषण संबंधी योजनाएं जमीनी स्तर पर बेअसर

नई दिल्ली

सांसद कुमारी सैलजा ने कहा है कि हरियाणा में बच्चों की सेहत को लेकर जो आंकड़े सामने आए हैं, वे अत्यंत गंभीर और चिंताजनक हैं। उन्होंने कहा कि हजारों नन्हे जीवन आज पोषण की कमी और सरकारी उपेक्षा के कारण खतरे में हैं।

ये स्थिति सरकार की नाकाम योजनाओं का ही परिणाम है। सरकार इस गंभीर स्थिति पर आत्ममंथन करने के बजाय केवल आंकड़ों को चमकाने और विज्ञापन में करोड़ों खर्च करने में व्यस्त है। कांग्रेस हर बच्चे के अधिकार, पोषण और स्वास्थ्य के लिए आवाज़ बुलंद करती रहेगी। मीडिया को जारी बयान में सैलजा ने कहा कि हरियाणा में खेल-खिलाड़ी और मजबूत कद-काठी को लेकर दूध दही का खाणा, यो मेरा हरियाणा कहावत काफी प्रसिद्ध है। वर्तमान में प्रदेश की नई पीढ़ी की स्थिति पर यह कहावत फिट नहीं बैठ रही है। राज्य में 25,962 आंगनवाड़ी केंद्र हैं, जिनमें 23,447 आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और 21,127 आंगनवाड़ी सहायिका हैं। सुधार की दिशा में 149 प्रोजेक्ट भी चल रहे हैं। वहीं, कुल 19 लाख 85 हजार 134 बच्चे लाभार्थी है। दूध उपहार योजना के तहत बच्चों (1-6 वर्ष) के साथ-साथ गर्भवती और स्तनपान कराने वाली माताओं को इंस्टेंट खीर, प्रोटीन मिल्क बार और स्किम्ड मिल्क पाउडर सहित विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराए जा रहे हैं। बावजूद इसके बच्चों का कुपोषण का शिकार होना गंभीर चिंता विषय है। राज्य में जन्म से 5 वर्ष तक की आयु के 23.41 प्रतिशत बच्चे बौनेपन का शिकार हैं। यह उत्तर भारत में सबसे अधिक है। इसके अतिरिक्त 7.85 प्रतिशत बच्चे कम वजन के हैं और 3.83 प्रतिशत बच्चे अत्यधिक कुपोषित हैं। यह स्थिति केवल सरकारी आंकड़ों की बात नहीं है, बल्कि हरियाणा के हजारों नन्हे जीवन आज पोषण की कमी और सरकारी उपेक्षा के कारण खतरे में हैं। सैलजा ने कहा है कि भाजपा सरकार द्वारा चलाई जा रही अन्नपूर्णा योजना, पोषण मिशन और आंगनवाड़ी केंद्रों के माध्यम से बच्चों को पोषण देने की व्यवस्था है। इनका जमीनी असर न के बराबर रह गया है।

छत्तीसगढ़िया हरेली की महक पहुंची दिल्ली आवासीय आयुक्त ने कर्मियों संग मनाया पर्व

नई दिल्ली

छत्तीसगढ़ की मिट्टी की सुगंध आज दिल्ली तक पहुंची- जब छत्तीसगढ़ भवन में हरेली पर्व पूरे उत्साह और लोक परंपरा के साथ मनाया गया। आवासीय आयुक्त श्रुति सिंह के नेतृत्व में भवन परिसर में सभी अधिकारियों और कर्मचारियों ने न केवल परंपरा निभाई, बल्कि पर्यावरण संरक्षण का भी संकल्प लिया। दिल्ली में छत्तीसगढ़ की परंपरा, प्रकृति से प्रेम और सांस्कृतिक आत्मा का अद्भुत संगम देखने को मिला। छत्तीसगढ़ भवन, नई दिल्ली में हरेली पर्व पूरे उत्साह, श्रद्धा और सामूहिक सहभागिता के साथ मनाया गया। छत्तीसगढ़ की यह पारंपरिक कृषि आधारित त्योहार अब केवल गांवों और खेतों तक सीमित नहीं, बल्कि राजधानी की रिहायशी गलियों में भी अपनी हरियाली बिखेर रहा है।

हरेली, छत्तीसगढ़ का पहला त्योहार होता है, जो सावन माह के अमावस्या को मनाया जाता है। यह पर्व धरती, बैल, किसान और प्रकृति के प्रति आभार प्रकट करने का प्रतीक है। आमतौर पर इस दिन किसान अपने कृषि उपकरणों की पूजा करते हैं, पशुओं को नहलाते हैं, गांवों में गेड़ी चढ़ी जाती है और बच्चे पारंपरिक खेलों में भाग लेते हैं। यह केवल उत्सव नहीं, बल्कि पर्यावरण, कृषि संस्कृति और लोकजीवन से जुड़ने की प्रेरणा है।

दिल्ली में जैसे ही हरेली की तैयारी शुरू हुई, वातावरण में लोकगीतों और मिट्टी की खुशबू तैरने लगी। सिंह के नेतृत्व में आयोजित इस आयोजन में भवन के समस्त अधिकारियों और कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भागीदारी की। हर हाथ में एक पौधा और हर चेहरे पर मुस्कान यह दृश्य जैसे प्रकृति से एक नये संवाद का प्रतीक बन गया। सिंह ने पौधरोपण कर कार्यक्रम की शुरुआत की। कर्मचारियों को हरेली के महत्व से अवगत कराते हुए कहा, हरेली केवल परंपरा नहीं, प्रकृति के साथ हमारी साझेदारी का उत्सव है। छत्तीसगढ़ भवन इसे पर्यावरणीय जिम्मेदारी के रूप में भी निभा रहा है।

संसद में गांधी मूर्ति से मकर द्वार तक मार्च निकालेगी

देश भर के ओबीसी नेताओं को जुटाकर कांग्रेस 50 फीसदी आरक्षण सीमा को हटाने की करेगी केंद्र सरकार से मांग

नई दिल्ली

कांग्रेस पार्टी ने सामाजिक न्याय, समानता और कमजोर वर्गों के सशक्तिकरण के लिए अपने अभियान 'सामाजिक न्याय 2.0' को मजबूती देने के लिए शुक्रवार को संसद में ओबीसी नेताओं के साथ गांधी मूर्ति से मकर द्वार तक मार्च निकालने और ओबीसी नेताओं की बैठक आयोजित करने की घोषणा की है। तालकटोरा स्टेडियम में कांग्रेस ओबीसी नेतृत्व भागीदारी न्याय सम्मेलन भी आयोजित करने की योजना बनाई है। सम्मेलन का उद्घाटन कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे करेंगे। समापन भाषण लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी देंगे। इस आयोजन में तेलंगाना, कर्नाटक, और अन्य राज्यों से ओबीसी समुदाय के मंत्रियों, सांसदों, विधायकों, युवा कांग्रेस, एनएसयूआई, और सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि शामिल होंगे। मार्च और बैठक का उद्देश्य ओबीसी समुदाय के सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक हितों को बढ़ावा देना है।

सामाजिक न्याय 2.0

खड़गे ने कहा कि तेलंगाना में शुरू हुआ सामाजिक न्याय 2.0 आंदोलन देश भर में कमजोर वर्गों को सशक्त बनाने की दिशा में एक नया कदम है। उन्होंने बताया कि देश की अधिकांश आबादी एससी, एसटी, ओबीसी और ईडब्ल्यूएस समुदायों से होने के बावजूद, इन समुदायों का कॉरपोरेट बोर्ड, न्यायपालिका, नौकरशाही और प्रमुख संस्थानों में प्रतिनिधित्व न के बराबर है। केंद्रीय विश्वविद्यालयों में प्रोफेसरों के लिए 80 फीसदी ओबीसी पद और 83 फीसदी एसटी पद खाली पड़े हैं। कांग्रेस ने लंबे समय से राष्ट्रव्यापी जाति जनगणना और आरक्षण पर 50 फीसदी की सीमा हटाने की मांग की है। खड़गे ने कहा कि केंद्र सरकार ने जन दबाव के कारण जाति जनगणना कराने की सहमति दी है, लेकिन आरक्षण की सीमा हटाने पर अभी कोई प्रगति नहीं हुई है। तेलंगाना में किए गए सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण को राष्ट्रीय मॉडल के रूप में अपनाने की वकालत करते हुए, खड़गे ने कहा कि तेलंगाना सरकार ने इस सर्वेक्षण के आधार पर स्थानीय निकाय चुनावों और शैक्षिक संस्थानों में ओबीसी के लिए 42 फीसदी आरक्षण की सिफारिश की है। विधेयक वर्तमान में भारत की माननीय राष्ट्रपति की मंजूरी के लिए लंबित है।

तेलंगाना मॉडल और नेतृत्व की सराहना

कांग्रेस ने तेलंगाना में इस सर्वेक्षण के लिए स्वतंत्र विशेषज्ञ कार्य समूह (आईईडब्ल्यूजी) के नेतृत्व में पूर्व सुप्रीम कोर्ट जज, जस्टिस बी. सुदर्शन रेड्डी, तेलंगाना कांग्रेस अध्यक्ष, मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री, कैबिनेट मंत्रियों और सांसदों के योगदान की सराहना की है। तेलंगाना के इस मॉडल को देश भर में लागू करने की मांग को लेकर कांग्रेस ने अपने अभियान को तेज कर दिया है।

बेंगलुरु भगदड़ मामले में कैबिनेट का फैसला

आरसीबी और डीएनए एंटरटेनमेंट नेटवर्क्स कंपनियों पर होगी कार्रवाई

एजेंसी बेंगलुरु

कर्नाटक मंत्रिमंडल ने चिन्नास्वामी स्टेडियम के निकट हुई भगदड़ की घटना पर न्यायमूर्ति जॉन माइकल डी कुन्हा की रिपोर्ट को स्वीकार कर लिया है। स्टेडियम में चार जून को हुई भगदड़ की घटना में 11 लोगों की मौत हो गई थी, जबकि कई अन्य घायल हो गए थे।कर्नाटक के कानून एवं संसदीय कार्य मंत्री एच के पाटिल ने बैठक के बाद बताया कि मंत्रिमंडल ने यह भी निर्णय किया कि वह रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) की जीत का जश्न मनाने में शामिल निजी संगठनों के खिलाफ कार्रवाई शुरू करेगी। उन्होंने कहा कि मंत्रिमंडल ने न्यायमूर्ति जॉन माइकल डी कुन्हा की रिपोर्ट को स्वीकार करने और उसके आधार पर कानूनी कार्रवाई करने का निर्णय किया है। उन्होंने कहा कि कानूनी कार्रवाई निजी संघों, आरसीबी, कर्नाटक राज्य क्रिकेट संघ (केएससीए) और डीएनए एंटरटेनमेंट नेटवर्क्स जैसी कंपनियों के खिलाफ की जाएगी।

बड़लियास में ब्लॉक स्तरीय वाक्पीठ का आयोजन

किस्मत भीलवाड़ा

भीलवाड़ा सवाईपुर क्षेत्र के बड़लियास कस्बे के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में कोटड़ी ब्लॉक स्तरीय वाक्पीठ का आयोजन हुआ, जिसमें माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालय के संस्था प्रधान शामिल हुए । कार्यक्रम का उद्घाटन मांडलगढ़ विधायक गोपाल खंडेलवाल व? कोटडी प्रधान करण सिंह बेलवा ने किया । इस मौके पर मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी अशोक कुमार पारीक व पंचायत समिति सदस्य दिलीप सिंह उपस्थित रहे, कार्यक्रम की शुरुआत में मां सरस्वती को माल्यार्पण व दीप प्रचलित कर किया, विद्यालय स्टाफ ने अतिथियों का माला में सफा बनाकर स्वागत किया । मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी अशोक कुमार पारीक ने विद्यालय संचालक से जुड़े दिशा निर्देश दिए, सुबह के सत्र में वक्ता अरविंद शर्मा प्रधानाचार्य सांखड़ा रहे । ममता गोठवाल लसाडिया, सत्यनारायण शर्मा जीवा का खेड़ा, कौशल श्रृंगी मंशा ने वार्ता की । प्रतिष्ठा ठाकुर प्रधानाचार्य सवाईपुर ने प्रधानाचार्यो में नेतृत्व क्षमता विकास पर वार्ता की । इसके अलावा फारूक मोहम्मद अशोक रामदेव मेघवंशी छापने भी वार्ता की ।

अवैध देशी शराब के साथ दो गिरफ्तार, जीप भी जब्त

किस्मत भीलवाड़ा

बिजौलिया। अवैध शराब निर्माण और परिवहन के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत बिजौलिया थाना पुलिस ने बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया है। कार्रवाई के दौरान 1298 पव्वे देशी शराब बरामद करते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने शराब की तस्करी में प्रयुक्त मेजर जीप को भी जब्त किया है। थानाधिकारी लोकपाल सिंह ने बताया कि 23 जुलाई को पुलिस टीम ने गश्त के दौरान सूचना के आधार पर नारायणपुरा गांव में नाकाबंदी की। इस दौरान भोपतपुरा गांव की ओर से आ रही एक संदिग्ध जीप को रोका गया। तलाशी लेने पर उसमें 1298 पव्वे अवैध देशी शराब पाई गई। पुलिस ने मौके से लादूराम गुर्जर पुत्र प्रभुलाल गुर्जर (45) निवासी गरड़दा, थाना नमाना, जिला बूंदी और बजरंगलाल मीणा पुत्र उंकारलाल (71) निवासी बालकुंड, कोटा शहर को हिरासत में लिया है। दोनों आरोपियों के खिलाफ आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है।

हरियाली अमावस्या पर जोगणिया माता धाम पर श्रद्धालुओं का सैलाब

किस्मत भीलवाड़ा

बिजौलिया। हरियाली अमावस्या पर जोगणिया माता शक्तिपीठ में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी। सुबह से ही मंदिर परिसर में दर्शनार्थियों की लंबी कतारें लगी रहीं। संस्थान अध्यक्ष सत्यनारायण जोशी ने बताया कि लगभग एक लाख श्रद्धालुओं ने माता के दर्शन किए। सुगम दर्शन के लिए तीन पंक्तियों में लाइनें बनाई गईं और सुरक्षा हेतु पुलिस व निजी गार्ड तैनात किए गए। श्रद्धालुओं ने माता रानी को चुनरी अर्पित कर मन्नतें मांगीं। मंदिर से लगे बाजारों में दिनभर चहल-पहल रही। व्यवस्थाओं में रमेश गुर्जर, प्रेमचंद धाकड़ सहित कई स्वयंसेवक सक्रिय रहे।

बापूनगर में नि:शुल्क स्वर्ण प्राशन व आयुर्वेद चिकित्सा परामर्श शिविर आज

किस्मत भीलवाड़ा

भीलवाड़ा। शहर के राजकीय आयुर्वेद औषधालय बापूनगर द्वारा 25 जुलाई को नि:शुल्क स्वर्ण प्राशन शिविर आयोजित किया जा रहा है, जिसमें 0 से 16 साल तक के बच्चों को सुबह 9:00 बजे से 3 :00 बजे तक नि:शुल्क स्वर्णप्राशन दवा पिलाई जायेगी । शिविर में डॉ उगन्ता मीणा (शिशु रोग विशेषज्ञ) द्वारा थायराइड, खांसी जुकाम, बालों का झड़ना, जोड़ो का दर्द, घुटनों का दर्द, गठिया रोग, तान आना, बिस्तर में पेशाब करना, सेरिब्रल पाल्सी, खुजली एलर्जी, भूख न लगना, श्वास, अस्थमा, यौन रोग, नि:सन्तानता, सफेद दाद, पथरी आदि पर निशुल्क परामर्श दिया जाएगा । डॉ मीणा ने बताया कि स्वर्णप्राशन का 6 माह तक नियमित सेवन करने से बच्चों की स्मरण शक्ति तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। किसी बच्चे का अपने उम्र के साथियों की तुलना में विकास (जैसे चलना, बोलना, या सामाजिक कौशल) को हासिल करने में देरी होना ऐसे बच्चों के लिए बापूनगर औषधालय पर निशुल्क पंचकर्म थेरेपी भी की जाती है। शिविर में बी. पी. एवं शुगर की जांच नि:शुल्क की जायेगी।

गणेश चतुर्थी को लेकर श्री रिद्धि सिद्धि गजानंद मंदिर समिति की प्रथम बैठक सम्पन्न

किस्मत भीलवाड़ा

शिवगंज, राड़बर गांव स्थित प्राचीन श्री रिद्धि सिद्धि गजानंद मंदिर में आगामी 27 अगस्त को मनाए जाने वाले गणेश चतुर्थी पर्व की तैयारियों को लेकर समिति की प्रथम बैठक मंदिर परिसर में आयोजित हुई। बैठक में मुख्यत: आयोजन की रूपरेखा और पूर्व पुजारी द्वारा दो वर्षों से चांदी जड़ित आभूषण समिति को नहीं सौंपने का मुद्दा चर्चा का केंद्र रहा। बैठक में बताया गया कि पुजारी के पास करीब 14 किलो चांदी जड़ित आभूषण हैं, जिनकी अनुमानित कीमत 14 लाख रुपये से अधिक है। पुजारी ने बैठक में आभूषण लौटाने का आश्वासन दिया था, लेकिन उनकी अनुपस्थिति को समिति ने निंदनीय बताया। इस अवसर पर पिछले वर्ष गणेश चतुर्थी की उत्कृष्ट कवरेज करने पर वरिष्ठ पत्रकार एवं नवनियुक्त मीडिया प्रभारी पुखराज परिहार का गजानंद जी का दुपट्टा व पुष्पाहार पहनाकर सम्मान किया गया। बैठक में कार्यवाहक अध्यक्ष हडमत सिंह, उपाध्यक्ष उम्मेद सिंह, कोषाध्यक्ष ईश्वर सिंह, सचिव लक्ष्मण सिंह सहित कई पदाधिकारी व सदस्य उपस्थित रहे और आयोजन को सफल बनाने हेतु विचार साझा किए।

राजस्थान में 305 नगरीय निकायों के वार्डों का होगा पुनर्गठन

मंत्रिमंडल उप समिति की बैठक में हुआ फैसला, कांग्रेस सरकार के फैसलों का हुआ रिव्यू

किस्मत भीलवाड़ा

जयपुर राजस्थान में नगरीय निकायों के पुनर्गठन और पुनर्सीमांकन को लेकर राज्य सरकार की मंत्रिमंडलीय उप समिति ने सभी 305 नगरीय निकायों के वार्डों के पुनर्गठन को मंजूरी दे दी है। यह फैसला स्वायत्त शासन विभाग के सभागार में आयोजित मंत्रिमंडल उप समिति की समीक्षा बैठक के दौरान लिया गया। बैठक की अध्यक्षता नगरीय विकास विभाग के राज्य मंत्री झाबर सिंह खर्रा ने की। जिसमें जल संसाधन मंत्री सुरेश सिंह रावत, वन राज्य मंत्री संजय शर्मा और सहकारिता राज्य मंत्री गौतम कुमार दक भी मौजूद रहे। इस दौरान जयपुर, भरतपुर और जोधपुर

संभाग के नगरीय निकायों के पुनर्गठन और पुनर्सीमांकन से जुड़े प्रस्तावों पर गहन परीक्षण और विचार-विमर्श किया गया। वहीं अब से सभी निकायों के वार्डों के पुनर्गठन के प्रस्ताव अब स्वायत्त शासन विभाग की ओर से मंत्रिमंडलीय उप समिति को भेजे जाएंगे। इन प्रस्तावों पर समिति की औपचारिक स्वीकृति के बाद संबंधित अधिसूचना जारी की जाएगी। बैठक में पता चला कि साल 2019 में पूर्ववर्ती सरकार के समय राज्य की कुल 196 नगरीय निकायों में वार्ड सीमांकन और पुनर्गठन किया गया था। उस समय 10 प्रतिशत तक के विचलन का मापदंड तय किया गया था। लेकिन 196 में से 128 निकायों में इस मापदंड से कहीं अधिक विचलन देखा गया। जो कि कुल निकायों का लगभग 65 प्रतिशत है। यूडीएच मंत्री झाबर सिंह खर्रा ने निकायों के पुनर्गठन के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि यह प्रक्रिया नगरीय प्रशासन को अधिक संगठित, उत्तरदायी और जनोन्मुखी बनाएगी। इसके साथ ही स्थानीय शासन में पारदर्शिता, समावेशिता और उत्तरदायित्व की भावना को भी मजबूत करेगी। उन्होंने इसे राजस्थान को शहरी सुशासन की दिशा में एक नई ऊंचाई तक पहुंचाने वाला फैसला बताया।

गेगा का खेड़ा में भगवान लक्ष्मीनाथ भगवान का दान पात्र खोला

लाख 35 हज़ार 870 रुपए की राशि निकली

आकोला कस्बे के निकटवर्ती गेगा का खेडा गांव में गुरुवार को अमावस्या पर्व पर भगवान लक्ष्मी नाथ का दान पात्र खोला। पुजारी दिनेश जोशी ने बताया कि भगवान लक्ष्मी नाथ का दान पात्र प्रति माह खोला जाता है। इस दिन दान पात्र से श्री लक्ष्मीनाथ भगवान के दान पात्र से 3 लाख 35 हज़ार 870 रुपए की राशि निकली। इस मौके पर बंशी लाल पुरोहित, भैरू लाल तिवाड़ी, बालकृष्ण पंचोली, चंद्रप्रकाश उपाध्याय, बंशी लाल पुरोहित, अंकित तिवाड़ी, दुर्गेश तिवाड़ी, नयन तिवाड़ी सहित ग्रामीण मौजूद थे।

बाण माता शक्ति पीठ पर दान पात्र खोला

किस्मत भीलवाड़ा

आकोला बाण माता शक्तिपीठ गोवटा बांध पर हरियाली अमावस्या को शक्तिपीठ विकास संस्थान की बैठक अध्यक्ष अशोक कुमार शर्मा के निर्देशन में आयोजित हुई। बैठक में शक्तिपीठ ज़पर नवनिर्माण कार्यों पर चर्चा करते हुए दान पात्र खोला जिसमें 6 लाख 33 हजार 046 रुपए सहयोग राशि प्राप्त हुई। इस अवसर पर संस्थान के कन्हैयालाल धाकड़, अमितकुमार शर्मा, प्रदीप पोरवाल, देबीलाल धाकड़, मोहनलाल धाकड़, उम्मेदसिंह, अशोक कुमार, बालू सिंह देवड़ा, बालू लाल धाकड़, धनराज कुमावत, छीतरलाल सुथार, हीरालाल धाकड़, शंभूसिंह, लादू लाल कुमावत , कालूसिंह, प्रमोद कुमार सहित श्रद्धालु उपस्थित थे।

त्रिवेणी संगम पर हरियाली अमावस्या पर भीड़ उमड़ी

किस्मत भीलवाड़ा

आकोला हरियाली अमावस्या को त्रिवेणी तीर्थ धाम में काल सर्प रुद्राभिषेक पाठ पंडितोके राजकुमार जी सोनू आचार्य देवली ओमप्रकाश व्यास दुर्गाशंकर भट्ट पंकज भट्ट शिव प्रकाश भट्ट जयप्रकाश भट्ट हरियाली अमावस्या को त्रिवेणी तीर्थ स्थल पर शिव भक्तो कि भीड़ बनी रही कावड़ यात्रा के भक्तों ने जय घोष शिव भोले कि जय कारें से त्रिवेणी संगम में शिव भोले मंत्र से महिलाओं ने बिल्वपत्र शिव लिंग में चढ़ायें फुल माला भांग धतूरा काभोग लगाया विद्वानों ने पुजा पाठ के बाद महाआरती के बाद भोग लगाया फिर प्रसाद वितरण किया

सिंगोली चारभुजा में हरियाली अमावस्या पर श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी

किस्मत भीलवाड़ा

आकोला सिंगोली श्याम धार्मिक तीर्थ स्थल पर हरियाली अमावस्या पर्व धूमधाम के साथ मनाया । मंदिर प्रबंधक अर्जुन सिंह सोलंकी ने बताया कि पुजारी जवाहर मल पाराशर, अखिलेश पाराशर ने चारभुजा नाथ का दुग्धाभिषेक कर आकर्षक श्रृंगार किया। पंडित कमलेश कुमार शर्मा के वेद मंत्रों से बालू लाल जोशी, रामनिवास जोशी, सुरेश चंद्र जोशी शिवराज जोशी देवरिया, राजेंद्र कुमार व्यास भीलवाड़ा, गोविंद कुमार चंपावत सुठेपा, सुरभि साड़ी सेंटर भीलवाड़ा ,महिला भजन कीर्तन मंडल सिंगोली चारभुजा द्वारा चारभुजा नाथ का अभिषेक कराया। भंडारी सुरेंद्र पाराशर ने बताया कि सुबह से ही पदयात्रियों के जत्थे चारभुजा नाथ का जयकारा लगाते हुए आते रहे। श्रद्धालु के लिए ठंडे पेयजल की व्यवस्था की गई। मंदिर परिसर दिन -भर भजन कीर्तन पर श्रद्धालु थिरकते रहे । श्रद्धालुओ की भीड़ को

देखते हुए दर्शन कराने की विशेष व्यवस्था की गई । मनिहारी की दुकानों पर महिलाओं की अच्छी- खासी भीड़ रही ।

प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी ने विधालयो का शाला सम्बलन के तहत किया निरिक्षण

किस्मत भीलवाड़ा

गुलाबपुरा हुरडा मे पंचायत प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी रेखा कुमारी ने राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय हुरडा, राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय हुरडा, राजकीय प्राथमिक विद्यालय आगूचा रोड हुरडा का शाला सम्बलन के तहत सघन निरीक्षण किया। पीईईओ द्वारा एमडीएम, बाल गोपाल योजना के अंतर्गत दूध के साथ साथ विद्यालय के समस्त रिकॉर्ड की जांच कर संतोष जाहिर किया। प्रधानाध्यापक सत्येंद्र गर्ग ने बताया कि पीईईओ द्वारा शैक्षिक एवं सह शैक्षिक

गतिविधियों का अवलोकन कर प्रधानाध्यापक एवं विद्यालय स्टाफ की सराहना की। निरीक्षण के दौरान व्याख्याता वीरेंद्र टेलर मौजूद रहे। विद्यालय में उपलब्ध भौतिक सुविधाओं वाटर कूलर छात्र-छात्राओं के लिए टेबल कुर्सी आदि प्रयास के लिए प्रधानाध्यापक सत्येंद्र गर्ग की प्रशंसा की ।

हरियाली अमावस पर नीलेश्वर महादेव का हुआ जलाभिषेक

गुलाबपुरा श्री संकट मोचन बालाजी मंदिर मे स्थित श्री नीलेश्वर महादेव का हरियाली अमावस के पावन पर्व पर भक्तजनों ने नीलेश्वर महादेव का जलाभिषेक कर खुशहाली की कामना की। श्री संकट मोचन बालाजी मंदिर के महंत पवन दास वैष्णव ने बताया कि हरियाली अमावस्या पर पितरों का तर्पण किया जाता है। ऐसा कहा जाता है कि अमावस्या पर पितरों का तर्पण करने से पितृ प्रसन्न हो जाते हैं। हरियाली अमावस्या का मुख्य उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना है. यह त्योहार हमें याद दिलाता है कि हम प्रकृति के ऋणी हैं और हमें इसे सुरक्षित रखने के लिए पूरा प्रयास करना चाहिए। पंडित गोपाल लाल तिवारी

ने मंत्रोंच्चार द्वारा पूजा अर्चना करवाई। तत्पश्चात महाआरती के बाद प्रसाद वितरण किया गया। इस दौरान पुजारी अजय वैष्णव, महावीर लढा पार्षद, लक्ष्मी लाल गुर्जर, विकास शर्मा ,धनी माली, छोटी प्रजापत,नीतू खारोल ,कोमल वर्मा,, सहित भक्तजन मौजूद थे।

आईजी हेमंत शर्मा ने किया राजलदेसर थाने का निरीक्षण, वृक्षारोपण कर दी पर्यावरण सुरक्षा की प्रेरणा

किस्मत भीलवाड़ा

राजलदेसर (चूरू), बीकानेर रेंज के आईजी हेमंत शर्मा ने गुरुवार को राजलदेसर थाने का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने थाना परिसर, रिकॉर्ड, मालखाना, हवालात व महिला डेस्क की व्यवस्था देखी और पेंडिंग मामलों के शीघ्र निस्तारण के निर्देश दिए। साफ-सफाई व रिकॉर्ड व्यवस्था की सराहना की गई। "हरियालो राजस्थान" अभियान के तहत वृक्षारोपण कर पर्यावरण बचाने का संदेश दिया। राजलदेसर पत्रकार संघ व व्यापार मंडल ने आईजी का सम्मान किया। उन्होंने भामाशाहों द्वारा बनाए गए थाने की प्रशंसा करते हुए जनसहयोग की सराहना की।

साइबर ठगी पीड़ित को मिली राहत, पुलिस ने दिलवाई 50,136 की राशि

किस्मत भीलवाड़ा

केकड़ी, अजमेर एसपी वंदिता राणा (IPS) के निर्देश पर चलाए जा रहे साइबर अपराध रोकथाम अभियान के तहत केकड़ी शहर थाना पुलिस को बड़ी सफलता मिली। बघेरा निवासी सीताराम माली के खाते से साइबर ठगों ने ?50,136 की ऑनलाइन ठगी की थी। शिकायत मिलने पर थानाधिकारी कुसुमलता मीणा व कांस्टेबल नीरज की टीम ने त्वरित कार्रवाई कर ठग के खाते को फ्रीज कर राशि वापस दिलवाई। यह कार्रवाई एएसपी सोराजमल मीणा और वृताधिकारी हर्षित शर्मा के सुपरविजन में हुई।

भूरिया बाबा मेले में उमड़ा आस्था का सैलाब, लाखों श्रद्धालु पहुंचे दर्शन को

किस्मत भीलवाड़ा

शिवगंज/सुमेरपुर। हरियाली अमावस्या पर भारूंदा की पहाड़ी स्थित भूरिया बाबा मंदिर पर वार्षिक मेला धूमधाम से आयोजित हुआ। सिरोही, पाली व जालौर जिलों से लाखों श्रद्धालु बाबा के दर्शन को पहुंचे। "जय जय बम भोले" व "हर हर महादेव" के जयकारों से पहाड़ियां गूंज उठीं। मंदिर पर बाबा को 38 क्विंटल लापसी का भोग लगाकर प्रसाद वितरित किया गया। भक्तों ने अच्छी वर्षा की कामना की। भारी भीड़ के चलते चार किलोमीटर लंबा जाम लगा, जिससे श्रद्धालुओं को पैदल चलकर मंदिर पहुंचना पड़ा।

डॉ. जसवंत लाल खटीक को मिलेगा 'कलाम यूथ लीडरशिप अवार्ड'

किस्मत भीलवाड़ा

राजसमंद, ख्वाब फाउंडेशन द्वारा जयपुर में आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन "डॉ. कलाम यूथ लीडरशिप कॉन्फ्रेंस 7.0" में राजसमंद जिले से समाजसेवी व कवि डॉ. जसवंत लाल खटीक का चयन 'कलाम यूथ लीडरशिप अवार्ड' के लिए हुआ है। 'मिशन नींव' संस्था के संस्थापक डॉ. खटीक ने जरूरतमंदों के लिए 35 लाख रुपये से अधिक के सेवा कार्य किए हैं। सम्मेलन में देश-विदेश से 250 युवा भाग लेंगे। डॉ. खटीक को अब तक समाजसेवा और साहित्य के क्षेत्र में 150 से अधिक राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय सम्मान मिल चुके हैं।

पुजा अवाना ने संभाला पाली एसपी का पदभार, संगठित अपराध व साइबर क्राइम पर रहेगा फोकस

किस्मत भीलवाड़ा

पाली, आईपीएस पुजा अवाना ने बुधवार को पाली जिले के नए पुलिस अधीक्षक (एसपी) का पदभार ग्रहण किया। वे फलोदी से ट्रांसफर होकर पाली आई हैं और इससे पूर्व 2020 में सिरोही जिले की एसपी भी रह चुकी हैं। अवाना 2012 बैच की तेजतर्रार आईपीएस अधिकारी हैं, जिनकी पहली पोस्टिंग पुष्कर में हुई थी। पदभार ग्रहण के दौरान एसएपी विपिन कुमार शर्मा और अन्य अधिकारियों ने गुलदस्ता देकर उनका स्वागत किया। जवानों ने उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर भी दिया। इस मौके पर सीओ सिटी ऊषा यादव, सीओ ग्रामीण रतनाराम देवासी, नरेंद्र सिंह देवड़ा, कोतवाल अनिल कुमार व टीपी नगर थाना प्रभारी भंवरलाल माली सहित कई अधिकारी मौजूद रहे। एसपी अवाना ने कहा कि संगठित अपराध की रोकथाम, नशा तस्करों पर कड़ी कार्रवाई और साइबर ठगी के प्रति आमजन को जागरूक करना उनकी प्राथमिकता रहेगी। पुलिस मुख्यालय की गाइडलाइंस के अनुसार ईमानदारी से कार्य किया जाएगा।

विधायक खंडेलवाल ने बड़लियास विद्यालयों में किया सवा करोड़ के कार्यो का लोकार्पण, उद्घाटन व शिलान्यास

किस्मत भीलवाड़ा

भीलवाड़ा सवाईपुर क्षेत्र के बड़लियास कस्बे में गुरुवार को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय व महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय में मांडलगढ़ विधायक गोपाल खंडेलवाल व कोटड़ी प्रधान करण सिंह बेलवा द्वारा करीब सवा करोड़ के निर्मित कमरों का लोकार्पण, उद्घाटन व शिलान्यास किया, इस दौरान अन्य कई घोषणाएं भी की गई । गुरुवार को मांडलगढ़ विधायक गोपाल खंडेलवाल व कोटड़ी प्रधान करण सिंह बेलवा बड़लियास के महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय में पहुंचे, जहां डीएमएफटी से 50 लाख की लागत से निर्मित 6 कमरों का लोकार्पण व उद्घाटन किया गया, वही इस दौरान एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पौधारोपण किया, इस दौरान विद्यालय परिवार के द्वारा सभी अतिथियों का स्वागत सत्कार

किया गया, वही विद्यालय की छात्र-छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुत दी । इसके बाद राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में पहुंचे, यहां डीएमएफटी से 48 लाख की लागत से निर्मित 6 कमरों का लोकार्पण व उद्घाटन किया गया । इसके साथ ही डीएमएफटी 25 लाख की लागत से विद्यालय की मरम्मत के कार्यों का शिलान्यास भी किया गया । विद्यालय परिवार के द्वारा अतिथियों का माला व साफा पहनाकर कर स्वागत सत्कार किया । विधायक खंडेलवाल ने बजट में क्रमोन्नत हुए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का पट्टा सौपा, इसके साथ ही डीएमएफटी फंड के द्वारा बड़लियास से सवाईपुर रोड को चौड़ा करवाने की घोषणा की । इस दौरान कोटड़ी प्रधान बेलवा ने 3 लाख की लागत से शौचालय निर्माण की घोषणा की । इस दौरान उप जिला प्रमुख शंकर लाल गुर्जर, विधानसभा संयोजक अनिल पारीक, नंदराय मंडल अध्यक्ष प्रकाश सांगावत, पूर्व नंदराय मंडल अध्यक्ष सुरेश पाराशर, नंदराय मंडल उपाध्यक्ष लादू लाल व्यास, पंचायत समिति सदस्य दिलीप सिंह, किसान नेता भंवर जाट, प्रधानाचार्या अरविंद कंसारा, प्रधानाचार्या करणी दान सिंह आदि कई मौजूद रहे ।।

संगम यूनिवर्सिटी में मैनेजमेंट स्टडीज एलुमनी मीट 2025 का भव्य आयोजन

पूर्व छात्रों ने साझा किए करियर अनुभव, विद्यार्थियों को मिला मार्गदर्शन

किस्मत भीलवाड़ा

भीलवाड़ा, जुलाई। संगम यूनिवर्सिटी द्वारा मैनेजमेंट स्टडीज के पूर्व छात्रों के लिए "एलुमनी मीट 2025" का आयोजन विश्वविद्यालय परिसर में उत्साहपूर्वक किया गया। इस आयोजन का उद्देश्य पूर्व छात्रों और वर्तमान विद्यार्थियों के बीच संवाद स्थापित कर एक मजबूत पेशेवर नेटवर्क बनाना था। ट्रेनिंग एवं प्लेसमेंट विभाग के डिप्टी डायरेक्टर और एलुमनी एसोसिएशन के सचिव डॉ. अनुराग शर्मा ने बताया कि इस अवसर पर मैनेजमेंट क्षेत्र में कार्यरत करीब 80 पूर्व छात्र-छात्राएं शामिल हुए। उन्होंने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि संगम यूनिवर्सिटी में प्राप्त शिक्षा और प्रशिक्षण ने उनके करियर को नई दिशा दी। कुलपति प्रो. डॉ. करुणेश सक्सेना

ने कहा कि यह मीट विश्वविद्यालय की उस सोच को दर्शाती है, जिसमें हम अपने पूर्व छात्रों को एक साझा मंच देकर वर्तमान विद्यार्थियों को उनके अनुभवों से प्रेरणा दिलाते हैं। उप-कुलपति प्रो. डॉ. मानस रंजन पाणिग्रही ने भी एलुमनी की सक्रिय भागीदारी की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन छात्रों को उद्योग जगत की आवश्यकताओं के प्रति सजग बनाते हैं। कुलसचिव डॉ. आलोक कुमार ने पूर्व छात्रों के विश्वविद्यालय से निरंतर जुड़ाव को अकादमिक विरासत का अहम हिस्सा बताया। डीन डॉ. मुकेश शर्मा ने कहा कि यह आयोजन केवल मेलजोल का अवसर नहीं बल्कि सीखने का एक महत्वपूर्ण मंच भी था। कार्यक्रम का संचालन अतुल पाराशर ने किया तथा आयोजन में डॉ. सुरभि बिरला, डॉ. नेहा सबरवाल, साक्षी पटवारी, मीनल शर्मा और उनकी टीम का विशेष सहयोग रहा।

हरियाली अमावस्या पर चारभुजा के ध्वजा अर्पण कर लगाया भोग

किस्मत भीलवाड़ा

भीलवाड़ा 24 जुलाई श्री माहेश्वरी समाज श्री चारभुजा जी मंदिर ट्रस्ट के बडा मंदिर में आज हरियाली अमावस्या,अमृत सर्वार्थ सिद्धि योग, देव पितृ कार्य अमावस्या ,गुरु पुष्य योग के विशेष अवसर पर शिखर पर लाल ध्वजा अर्पण कर भोग लगाया गया । ट्रस्ट मीडिया प्रभारी महावीर समदानी ने बताया कि बड़ी अमावस्या के विशेष दिन संगम ग्रुप के रामपाल सोनी परिवार द्वारा चारभुजा नाथ के चरणों में ध्वजा अर्पण कर ध्वजा की परिक्रमा लगाकर उसे शिखर पर अर्पण कर केसरिया राजभोग लगाया। इसअवसर पर रामपाल सोनी, श्रीनिवास मोदानी, ममता मोदानी , अर्चना सोडाणी अंजना ठाकुर, अनुराग सोनी कृपी सोनी, अंतिमा बेंजामिन प्रणल मोदानी, पलक मोदानी संजय जागेटिया, के जी सोनी, राधेश्याम सोनी, अनिल सोनी, संजीव सोनी, सुनील सोनी,गौरव सोनी, मनोज सोनी, ट्रस्ट संरक्षक उदयलाल समदानी, रामेश्वर तोषनीवाल, अध्यक्ष चंद्र सिंह तोषनीवाल ,मंत्री प्रहलाद भदादा बाल मुकुंद राठी, रामस्वरूप तोषनीवाल ,सत्यनारायण सोमानी ,रमेश जागेटीया, ओम मालू, प्रमोद डाड, रमेश बाहेती, राजेंद्र कचोलिया, दिलीप तोषनीवाल, राजेंद्र तोषनीवाल उपस्थित थे ।

माटी कामगारों हेतु जागरूकता शिविर एवं चयन प्रक्रिया सम्पन्न

किस्मत भीलवाड़ा

भीलवाड़ा, श्री यादे माटी कला बोर्ड द्वारा माटी कारीगरों के लिए एक जागरूकता शिविर एवं पारदर्शी लॉटरी प्रक्रिया का आयोजन किया गया। प्रजापति नवयुवक संस्था, भीलवाड़ा में चेयरमैन प्रहलाद राय टाक के निर्देशन में गुरुवार को इसका आयोजन हुआ। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा हाल ही में की गई राज्य बजट 2025-26 की घोषणा के अनुपालन में यह आयोजन किया गया, जिसमें पारंपरिक माटी कारीगरों को तकनीकी सहयोग व आधुनिक उपकरणों की सहायता प्रदान करने की योजना को स्वीकृति दी गई थी। इस योजना के तहत प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र से 10 माटी कारीगरों का चयन किया गया, जिन्हें निःशुल्क विद्युत चालित चाक और मिट्टी गूंधने की मशीन प्रदान की जाएगी। यह पहल राज्य सरकार द्वारा पारंपरिक शिल्प को प्रोत्साहन देने और स्थानीय कारीगरों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक सशक्त कदम है। इस दौरान श्री यादे माटी कला बोर्ड सीईओ डॉ. राहुल राज ने कहा, "यह योजना मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की दूरदर्शिता का परिणाम है, जिसके माध्यम से परंपरागत माटी कला से जुड़े श्रमिकों को तकनीकी संसाधन और आर्थिक संबल प्रदान किया जा रहा है।" इस शिविर में जिलेभर से आए माटी कामगारों ने भाग लिया और सरकार की इस पहल की सराहना की। कार्यक्रम में संस्थापक प्रजापति नवयुवक संस्था सुखदेव प्रजापति, संस्थान अध्यक्ष कन्हैया लाल प्रजापति उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ और चयनित कारीगरों को जल्द ही उपकरण प्रदान किए जाएंगे।

भीलवाड़ा से पांच बच्चे कटे ओष्ठ-तालु के निःशुल्क ऑपरेशन के लिए जयपुर रवाना

राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत मिलेगा नया जीवन

भीलवाड़ा, राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम (RBSK) के अंतर्गत जिले के कटे ओष्ठ और तालु से पीड़ित पाँच बच्चों को जयपुर स्थित अभिषेक हॉस्पिटल में निःशुल्क ऑपरेशन के लिए भेजा गया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. सी. पी. गोस्वामी ने हरी झंडी दिखाकर वाहन को रवाना किया और बच्चों व परिजनों को शुभकामनाएं दीं। डॉ. गोस्वामी ने बताया कि यह योजना उन जरूरतमंद परिवारों के लिए वरदान है, जो महंगे इलाज का खर्च नहीं उठा सकते। 0 से 18 वर्ष तक के बच्चों की स्क्रीनिंग के बाद जन्मजात रोगों की पहचान कर उन्हें मुफ्त उपचार उपलब्ध कराया जाता है। ऑपरेशन के लिए भेजे गए बच्चों में राधे, मेहुल, माया, श्रीया और प्रिया शामिल हैं। इनके इलाज का संपूर्ण खर्चा राज्य सरकार वहन करेगी। इस अवसर पर एडीएनओ डॉ. दिनेश कुमार शर्मा, अभिषेक हॉस्पिटल से गिरिश माथुर, अभिभावकगण और स्वास्थ्य विभाग की टीम मौजूद रही। अब तक जिले में कई बच्चों का सफल ऑपरेशन किया जा चुका है, जो विभाग और चिकित्सकों के सामूहिक प्रयास का परिणाम है।

पालड़ी (आर) में चंद्रशेखर आजाद जयंती हर्षोल्लास से मनाई गई, वृक्षारोपण कर दी श्रद्धांजलि

किस्मत भीलवाड़ा

पालड़ी महान स्वतंत्रता सेनानी चंद्रशेखर आजाद की जयंती पर अखिल भारतीय "भारत रत्न नेताजी सुभाषचंद्र बोस राष्ट्रीय सेवा समिति" की उपसमिति आजाद हिन्द सैना द्वारा मेघवाल समाज सामुदायिक भवन में भव्य समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में नेताजी फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष लुम्बाराम मेघवाल ने आजाद साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि दी और उनके देशभक्ति से ओतप्रोत जीवन पर प्रकाश डाला। मेघवाल ने कहा, "दुश्मन की गोलियों का सामना हम करेंगे, आजाद हैं, आजाद ही रहेंगे।" उन्होंने आजाद के त्याग, बलिदान और महिलाओं के प्रति सम्मान की भावना को युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत बताया। समारोह के उपलक्ष्य में गवाई तालाब और मुक्तिधाम पर वृक्षारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया। हरे कृष्ण फार्म में खजूर की खेती का अवलोकन भी किया गया तथा वहां भी एक पौधा लगाया गया। कार्यक्रम में पुखराज रांगी, बदाराम माली, डुंगाराम, हिरालाल, किशन जोगसन, ग्रामवासियों व महिलाओं की उत्साहपूर्वक भागीदारी रही।

जयपुर में युवक को लगी गोली, डरे बदमाश पैदल भागे

बचने के लिए किया था फायर,शौक के लिए लूट करने थे निकल

किस्मत भीलवाड़ा

जयपुर जयपुर में लूट के दौरान फायरिंग कर युवक को गोली मारने के मामले में बजाज नगर थाना पुलिस ने खुलासा किया है। पुलिस टीम को सप्ताहभर बाद दो बदमाशों को पकड़ने में सफलता हाथ लगी है। पुलिस फरार दो साथी बदमाशों की तलाश में दबिश दे रही है। पूछताछ में सामने आया है कि शौक के लिए लूट की वारदात करने निकलते थे। पकड़े जाने के चलते फायर किया, लेकिन युवक को गोली लग गई। डर के मारे पैदल भागकर फरारी के लिए शहर से बाहर जाना चाहते थे। ACP

(मालवीय नगर) आदित्य पूनिया ने बताया- मामले में आरोपी विकास यादव (23) पुत्र ओमवीर यादव निवासी प्रागपुरा कोटपूतली बहरोड को अरेस्ट किया है। पुलिस ने वारदात में शामिल नाबालिग साथी को भी पकड़ा है। लूट व हत्या के प्रयास में शामिल उनके साथी मोनू धनकड़ और जसराज गुर्जर उर्फ जस्सी की तलाश की जा रही है। पुलिस टीमें फरार साथियों को पकड़ने के लिए दबिश देने के साथ ही पकड़े गए आरोपियों से वारदात में यूज अवैध देसी कट्टे की बरामदगी के प्रयास कर रही है। पुलिस ने वारदातस्थल पर छोड़कर भागी बिना नंबर की स्विफ्ट कार को पहले ही जब्त कर लिया था।

फरारी के लिए पकड़नी थी बस

पकड़े गए बदमाशों ने पूछताछ में बताया- शौक के लिए लूट की वारदात करने चारों साथी कार लेकर निकले थे। 18 जुलाई की रात करीब 12 बजे गांधी नगर रेलवे स्टेशन के बाहर खड़ी युवती से मोबाइल छीन लिया। कार से भागते समय शाहिद के गट्टे वाले बाबा की दरगाह के पास आगे रोड बंद होने पर रुक गए। पीछा कर रहे कार सवार के पकड़ने आने पर देसी कट्टा निकालकर फायर किया। वहां से निकल रहे राहगीर को गोली जा लगी। लहूलुहान होकर जमीन पर गिरने पर उसे देखकर डर गए। कार को छोड़कर हम पैदल ही भाग निकले। फरारी काटने के लिए गोपालपुरा से बस पकड़ने के लिए पहुंचने पर पुलिस ने दबिश देकर पकड़ लिया।

एक दिवसीय गणित,अंग्रेजी विषय की कार्यशाला आयोजित

किस्मत भीलवाड़ा

गुलाबपुरा राजकीय महात्मा गांधी उच्च माध्यमिक विधालय जूना गुलाबपुरा मे FLN आधारित कलस्टर स्तरीय एक दिवसीय गणित अंग्रेजी विषय की कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला की अध्यक्षता ब्लॉक CBEEO आशा लड्डा मैडम ने की एवं प्रशिक्षणार्थी शिक्षक शिक्षिकाओं को बच्चों में संस्कार देने श्रेष्ठ नागरिक बनाने हेतु प्रेरित किया।मुख्य अतिथि समाजसेवी,से.नि.प्राचार्य किशोर राजपाल ने गुरुपद की मौलिकता पर जोर देते हुए समाजसेवा हेतु प्रेरित किया,विशिष्ठ अतिथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ गुलाबपुरा खंड के संघचालक नरेंद्र कैलानी ने समाज में पंचसूत्रो पर्यावरण,सामाजिक समरसता, चरित्र निर्माण का संदेश दिया। इस अवसर पर रामकिशन कुमावत RP ,देवेंद्र देव जोशी RP CBEEO ऑफिस, शिविर प्रभारी मैना देवी चारण ष्टश्चह्र गुलाबपुरा, प्रधानाचार्या सीता सुखवाल, अविनाश शर्मा मंच पर उपस्थित रहे। मंच संचालन KRP नागेश्वर दाधीच ने किया। कार्यशाला में गुलाबपुरा शहरी क्षेत्र, बडला ,रूपाहेली व भोजरास पंचायतों के शिक्षक प्रशिक्षण में भाग लिया ।

गौभक्त, पालिका पार्षद मेवाडा ने श्री माधव गौ उपचार केन्द्र मे एक लाख रुपये की सहयोग राशि एम्बुलेंस हेतु दी

किस्मत भीलवाड़ा

गुलाबपुरा स्थानीय श्री माधव गौ उपचार केन्द्र मे बीमार गौमाता को केन्द्र पर उपचार हेतु लाने के लिए एम्बुलेंस की जरुरत है, जिसे खरीदने के लिए गौभक्तो से सहयोग राशि एकत्रित की जारही है, जिसके तहत पालिका पार्षद गौभक्त , गौ माता की सेवा में सदैव अग्रणी बलवीर मेवाड़ा ने गौमाता के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हुए एक लाख एक हजार रुपए की सहयोग राशि एंबुलेंस हेतु समर्पित कि गई। पार्षद मेवाडा वर्षों से गौ माता की रक्षा हेतु अपने आप को समर्पित रखते आये, अनेकों बार अपनी जान की परवाह नहीं करते हुए गौ तस्करों से मुकाबला कर गौमाता की छुडवाते रहे है । श्री माधव गौ उपचार समिति पदाधिकारियों ने पार्षद मेवाडा का आभार प्रकट किया।

जलभराव क्षेत्रो से निकलने वाली कावड़ यात्राओ को लेकर सी एल जी बैठक संपन्न

क्षतिग्रस्त सडको की मरम्मत व गड्ढे भरवाने के दिए निर्देश

किस्मत भीलवाड़ा

केकड़ी जल भराव क्षेत्रो से आगामी दिनों मे निकलने वाली कावड़ यात्राओं की सुरक्षा के मद्दे नजर गुरूवार की सिटी पुलिस थाने मे सी एल जी मीटिंग का आयोजन किया गया बैठक की अध्यक्षता उपखण्ड अधिकारी सुभाष हेमानी द्वारा की गई बैठक सिटी पुलिस थाने मे आयोजित हुई बैठक मे क्षेत्र मे हुई भारी वर्षा से क्षतिग्रस्त सडको एवम जल भराव क्षेत्रो पर विस्तार से चर्चा कर सुझाव लिए जाकर निर्णय लिया गया की क्षतिग्रस्त सडको मे हुये गड्ढे भरवाए जाये जिससे कावड़ यात्राओ के दौरान किसी भी प्रकार की अनहोनी घटना से बचा जा सके इसके साथ ही जल भराव क्षेत्रो से पानी की निकासी करवाने का भी निर्णय लिया गया बैठक मे पुलिस उप अधीक्षक हर्षित शर्मा अजमेर विद्युत वितरण निगम के सहायक अभियंता मुकेश मीणा सिटी थाना धिकारी कुसुम लता मीणा सहित सी एल जी सदस्योंगन उपस्थित थे

भाविप शाखा द्वारा हरियाली अमावस्या पर चिकित्सालय मे फल और किट वितरण किये

किस्मत भीलवाड़ा

गुलाबपुरा भारत विकास परिषद द्वारा हरियाली अमावस्या के अवसर पर अपने सेवा प्रकल्प अंतर्गत रेफरल चिकित्सालय और जननी केंद्र पर भर्ती मरीजों को फल और नवजात शिशुओं को किट वितरित कर उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की । प्रभारी मीनाक्षी भाटिया ने बताया कि चिकित्सक सोनू चौधरी के सानिध्य में फल वितरण किया गया।फल व्यवस्था परिषद परिवार के नंद किशोर काबरा और पवन गोधा तथा किट की व्यवस्था साक्षी एंटरप्राइज के अनुराग चौधरी द्वारा की गई। इस अवसर पर कन्हैया लाल सोनी,किशोर राजपाल , ओम प्रकाश शर्मा ,अनुराग चौधरी, ज्योति दिनवानी, भगवती देवी मूंदड़ा लीला देवी गग्गड आदि ने सहयोग प्रदान किया। प्रति पूर्णिमा और अमावस्या पर परिषद द्वारा यह सेवा कार्य किया जा रहा है ।

श्री देवनारायण मंदिर से रणकेश्वर महादेव मंदिर आगूंचा विशाल कावडा यात्रा का पोस्टर विमोचन किया गया

किस्मत भीलवाड़ा

गुलाबपुरा आगूंचा ग्रामवासियो द्वारा सावन के तृतीय सोमवार को विशाल कावड यात्रा का आयोजन 28 जुलाई को किया जायेगा, गुरुवार को विशाल कावड यात्रा के आयोजन का पोस्टर विमोचन पूर्व नगर पालिका चेयरमैन धनराज गुर्जर व आगूंचा सरपंच प्रतिनिधि जितेन्द्र नागर सहित अतिथियों द्वारा किया गया। विशाल कावड यात्रा गुलाबपुरा खेडा चौसला श्री देवनारायण भगवान के मंदिर से सुबह गाजेबाजे के साथ शुरू होकर शहर के मुख्य मार्गो से होते हुए हुरडा से आगूंचा रणकेश्वर श्री महादेव पहुंच कर भगवान महादेव का जलाभिषेक किया जायेगा।

हरियाली अमावस्या पर बाड़ी माता तीर्थ धाम पर कल्पवृक्ष की पूजा अर्चना की

किस्मत भीलवाड़ा

गुलाबपुरा निकटवर्ती श्री माता तीर्थ धाम पर हरियाली अमावस्या के शुभ अवसर पर अखंड रामधुनी का आयोजन व श्रद्धालु व भक्तों के द्वारा कल्पवृक्ष का पूजन किया गया। हरियाली अमावस्या के शुभ अवसर पर बाड़ी माता तीर्थ धाम पर कल्पवृक्ष का विधि विधान से 108 मंत्रोचार के साथ पूजन हवन किया , 24 घंटे की अखंड रामधुनी का आयोजन किया गया, सुबह से ही श्रद्धालु, महिला भक्तों के द्वारा कल्पवृक्ष की पूजा अर्चना कर सुख समृद्धि की कामना की

काछोला में गोलछा फाउंडेशन ने किया 5000 पौधों का वृक्षारोपण, एडीएम माथुर ने बढ़ाया उत्साह

किस्मत भीलवाड़ा

काछोला, गोलछा फाउंडेशन द्वारा घेवरिया माइंस क्षेत्र में 5000 छायादार, फलदार और फूलदार पौधों का सघन वृक्षारोपण किया गया। कार्यक्रम में खनन विभाग के एडीएम महेश माथुर ने कहा कि स्वच्छ और स्वस्थ पर्यावरण के लिए वृक्षारोपण अत्यंत जरूरी है। ग्रामीणों को निःशुल्क पौधे भी वितरित किए गए। सीईओ विघ्नेश्वर स्वाइन, लाइजनिंग हेड राजीव कपूर और एजीएम असकरण अग्रवाल ने पौधों के संरक्षण पर जोर दिया। कार्यक्रम में थाना प्रभारी श्रद्धा पचौरी सहित कई अधिकारी और गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

देवगढ़ में रावत राजपूत कर्मचारियों का महाअधिवेशन सम्पन्न, सामाजिक कुरीतियों पर जताई चिंता

किस्मत भीलवाड़ा

देवगढ़, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय देवगढ़ में रावत राजपूत समाज के सरकारी कर्मचारियों का महाअधिवेशन सम्पन्न हुआ। अधिवेशन की अध्यक्षता एसपी सिंह ने की, जबकि मुख्य अतिथि अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कान सिंह चौहान रहे। कार्यक्रम में समाज में व्याप्त बुराइयों और सामाजिक कुरीतियों को रोकने हेतु एजेंडा तैयार किया गया। इस अवसर पर 31 जुलाई को सेवानिवृत्त हो रहे कान सिंह चौहान का सम्मान भी किया गया। अधिवेशन में हेमसिंह, अजीत सिंह, अभय सिंह, गोविंद सिंह, मनोहर सिंह सहित कई अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

केकड़ी में थल सेना स्कंध एनसीसी कैडेट्स की भर्ती, 60 विद्यार्थियों का चयन

किस्मत भीलवाड़ा

केकड़ी, 24 जुलाई। पीएम श्री राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय केकड़ी में 11 राजस्थान बटालियन एनसीसी अजमेर के निर्देशन में थल सेना स्कंध के लिए एनसीसी कैडेट्स की भर्ती की गई। प्राचार्य ऋतु पाराशर ने बताया कि कर्नल अजय दाधीच के मार्गदर्शन में सीएमएच लालाराम चौधरी और एनसीसी ऑफिसर हरिराम दरोगा ने शारीरिक व मानसिक परीक्षा लेकर 8वीं व 9वीं कक्षा के 100 विद्यार्थियों में से 60 कैडेट्स का चयन किया। चयनित कैडेट्स को दो वर्षीय प्रशिक्षण के बाद 'एनसीसी-' प्रमाण पत्र मिलेगा, जो सरकारी सेवाओं में बोनस अंक दिलाएगा।

हरियाली अमावस्या पर 'एक व्यक्ति, एक पौधा' मिशन के तहत तुलसी उपहार का वितरण

किस्मत भीलवाड़ा

सुमेरपुर, हरियाली अमावस्या के अवसर पर 'एक व्यक्ति, एक पौधा' मिशन के तहत तुलसी उपहार योजना का आयोजन किया गया। पर्यावरण प्रेमी ओमप्रकाश कुमावत और सीए चेतन अरोड़ा ने डॉ. सुरेश सिंह राजपुरोहित और हिन्दुस्थान एल्युमिनियम के कपिल लुणिया को तुलसी का पौधा भेंट कर कार्यक्रम की शुरुआत की। कार्यक्रम में डॉ. देवल पटेल और डॉ. आशीष मोदी ने इसे पर्यावरण जागरूकता की दिशा में सराहनीय पहल बताया। डॉ. रश्मि बाला, डॉ. हिमानी पटेल, डॉ. रौनक सुराणा, डॉ. राजलक्ष्मी सिंह और डॉ. जगदीश किरी सहित अस्पताल स्टाफ को भी तुलसी उपहार स्वरूप दी गई। पन्नालाल वेराजेतपुरा ने बताया कि डॉक्टरों को तुलसी उपहार देने का उद्देश्य मरीजों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। डॉ. रश्मि बाला ने कहा कि जन्मदिन, पुण्यतिथि और विवाह वर्षगांठ जैसे अवसरों पर पौधे उपहार में देना एक प्रेरणादायक पहल है।

बाणमाता शक्तिपीठ के विकास हेतु पांच सूत्रीय मांग पत्र सौंपा गया

किस्मत भीलवाड़ा

आकोला, श्री बाणमाता शक्तिपीठ प्रबंध एवं विकास संस्थान गोवटा की ओर से विधायक गोपाललाल शर्मा को बाणमाता मंदिर क्षेत्र के समग्र विकास हेतु पांच सूत्रीय मांग पत्र सौंपा गया। अध्यक्ष अशोक कुमार शर्मा के नेतृत्व में सौंपे गए ज्ञापन में बताया गया कि यह शक्तिपीठ मेवाड़ का प्रमुख धार्मिक स्थल है, जहां हर रविवार और नवरात्रि में हजारों श्रद्धालु आते हैं। संस्थान ने फलासिया से बाणमाता तक 7.5 मीटर चौड़ी सड़क, मंदिर मार्ग पर बायपास सड़क, मेनाली नदी किनारे आधुनिक घाट और स्नान पश्चात वस्त्र बदलने के कमरे, रोगियों के ठहरने हेतु डोम निर्माण, तथा बाणमाता से खंगारजी का खेड़ा तक 3 किमी सड़क निर्माण की मांग रखी। विधायक शर्मा ने मांगों को प्राथमिकता से पूरा करने का आश्वासन दिया। इस अवसर पर मनोज सनाढ्य, रामप्रसाद जाट, गणेश जाट, प्रमोद धाकड़ सहित अनेक पदाधिकारी और भक्तजन उपस्थित रहे।

नगर निगम का श्रावण मास में विशिष्ट आयोजन

वार्ड 55 और 64 के चारभुजानाथ मंदिर एवं चिंताहरण महादेव मंदिर में हुआ सहस्त्रधारा अभिषेक

किस्मत भीलवाड़ा

भीलवाड़ा नगर निगम भीलवाड़ा द्वारा श्रावण मास के पावन अवसर पर 70 वार्डों के 70 मंदिरों में 70 अभिषेक कार्यक्रम के चौदहवें दिन दो वार्डों में महापौर राकेश पाठक के नेतृत्व में आयोजन संपन्न हुआ। इस अवसर पर वार्ड 64 के अंतर्गत मलान स्थित चारभुजानाथ मंदिर शिवालय में पुजारी मस्तराम एवं पार्षद जगदीश गुर्जर द्वारा भगवान श्री चारभुजा नाथ को भोलेनाथ की पोशाक का श्रृंगार भी किया गया। इसी प्रकार वार्ड 55 में चित्रकूट नगर डी सेक्टर स्थित चिंता हरण महादेव मंदिर में मंदिर समिति अध्यक्ष डी के दाधीच की उपस्थिति में सहस्त्रधारा अभिषेक का आयोजन हुआ। इस दौरान भाजपा जिला मंत्री

सुरेंद्र सिंह मोटरास, सुभाष मंडल अध्यक्ष ऋतु शेखर शर्मा, पार्षद राधेश्याम भड़ाना, नंदराम जाट, भेरू भड़ाना, प्रभु सिंह शेखावत, लक्ष्मण गुर्जर, भेरूलाल गुर्जर, लादूदास वेष्णव, नंदलाल सुवाल, प्रताप सिंह राणावत, मदन माली, कन्हैयालाल मूंदड़ा, केपी व्यास, प्रेम गवारिया, विनोद लक्षकार, राजेश शर्मा, गोवर्धन चोटिया, चंद्र प्रकाश गट्टानी, लादूलाल पारीख, राजेंद्र पारीख, नरेंद्र पारीख, देव प्रकाश उपाध्याय, ललित तिवारी, राकेश खंडेलवाल, मुकेश तुरकिया, गोपाल डागा एवं अनेक वार्डवासी एवं श्रद्धालु मौजूद रहे।

आज वार्ड 6 और 19 में होगा सहस्त्रधारा अभिषेक

नगर निगम द्वारा आयोजित श्रावण मास सहस्त्रधारा अभिषेक कार्यक्रम आज प्रातः 8 बजे वार्ड 6 के अंतर्गत कालका चौराहा स्थित हनुमान मंदिर और प्रातः 11 बजे वार्ड 19 में आजाद नगर स्थित मुंदरी वाले बालाजी मंदिर में आयोजित होगा।

प्रभु पार्श्वनाथ की स्तुति में डूबे श्रद्धालु, महासाध्वी कुमुदलता म.सा. के सानिध्य में हुआ दिव्य अनुष्ठान

किस्मत भीलवाड़ा

भीलवाड़ा, तीर्थंकर प्रभु पार्श्वनाथ की स्तुति में गुरुवार को सुभाषनगर श्रीसंघ द्वारा आयोजित साप्ताहिक अनुष्ठान आराधना में श्रद्धा व भक्ति का अद्भुत संगम देखने को मिला। महासाध्वी डॉ. कुमुदलताजी म.सा. आदि ठाणा के सानिध्य में आयोजित अनुष्ठान में हजारों श्रावक-श्राविकाएं शामिल हुए। तीव्र उमस के बावजूद श्रद्धालु भक्ति में लीन रहे और पांडाल छोटा प्रतीत हुआ। "प्रणमामि सदा प्रभु पार्श्वजिनं" जैसे भक्तिमय स्तोत्रों के सामूहिक जाप से वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा से भर गया। महासाध्वीजी ने स्तुति का महत्व बताते हुए कहा कि तीर्थंकरों की आराधना से मन, समाज और राष्ट्र में शांति, समृद्धि और मोक्ष की राह प्रशस्त होती है। इस अवसर पर व्रज

पंज्जर स्तोत्र की आराधना, नवकार मंत्र चौकी की स्थापना और सैकड़ों श्रावकों द्वारा तपस्वी संकल्प लिए गए। सुश्राविका मनोहरदेवी बिलवाड़िया ने अठाई तप का प्रत्याख्यान लेकर तपस्या का संकल्प लिया, जिनका स्वागत पांडाल में जयकारों के साथ किया गया। कार्यक्रम में चित्तौड़गढ़, गुलाबपुरा, मांडल आदि क्षेत्रों से श्रद्धालु पहुंचे। अनुष्ठान के पश्चात जीवदया कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। आयोजन में चातुर्मास समिति, श्रीसंघ पदाधिकारियों व महिला मंडल का सराहनीय योगदान रहा। आगामी 31 जुलाई को भक्तामर स्तोत्र के 45वें श्लोक के जाप के साथ अगला अनुष्ठान आयोजित होगा।

दुनिया की लाखों जिन्दगियां में जहर घोलता अकेलापन

ललित गर्ग

डब्ल्यूएचओ की रिपोर्ट बताती है कि दुनिया की लगभग 16 प्रतिशत आबादी आज किसी न किसी रूप में अकेलेपन, सामाजिक अलगाव या भावनात्मक दूरी का शिकार है। यह स्थिति केवल वृद्धजनों तक सीमित नहीं रही, बल्कि युवाओं, कामकाजी पेशेवरों, और यहां तक कि बच्चों तक फैल चुकी है। डिजिटल युग में जहां सब कुछ 'कनेक्टेड' लगता है, वहीं इंसानी रिश्तों में एक अदृश्य दूरी, कृत्रिमता और आत्मीयता का अभाव देखने को मिल रहा है।

'हर छठा व्यक्ति अकेला है'-यह निष्कर्ष विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की ताजा रिपोर्ट का है, जिसने पूरी दुनिया को चिन्ता में डाला है एवं सोचने पर मजबूर कर दिया है कि आखिर हम कैसी समाज-संरचना कर रहे हैं, जो इंसान को अकेला बना रही है। निश्चित ही बढ़ता अकेलापन कोई साधारण सामाजिक, पारिवारिक एवं व्यक्तिगत समस्या नहीं, बल्कि एक ऐसा वैश्विक मानसिक स्वास्थ्य संकट बनता जा रहा है, जो व्यक्तियों, समाजों, और व्यावसायिक संस्थानों को अंदर ही अंदर खोखला कर रहा है। दुनिया के करोड़ों लोग टूटे रिश्तों व संवादहीनता की स्थितियों में नितांत खामोशी का जीवन जी रहे हैं। गौर करे तो इंसान के भीतर की ये खामोशी लाखों जिंदगियां में महामारी के रूप में जहर घोल रही है। विडंबना यह है कि इस संकट का सबसे ज्यादा शिकार युवा हो रहे हैं। वृद्ध तो पहले से ही सामाजिक एवं पारिवारिक विसंगतियों में उपेक्षित है। निश्चय ही जीवन की विसंगतियां एवं विषमताएं बढ़ी हैं। कई तरह की चुनौतियां सामने हैं। पीढ़ियों के बीच का अंतराल विज्ञान व तकनीक के विस्तार के साथ तेज हुआ है।

डब्ल्यूएचओ की रिपोर्ट बताती है कि दुनिया की लगभग 16 प्रतिशत आबादी आज किसी न किसी रूप में अकेलेपन, सामाजिक अलगाव या भावनात्मक दूरी का शिकार है। यह स्थिति केवल वृद्धजनों तक सीमित नहीं रही, बल्कि युवाओं, कामकाजी पेशेवरों, और यहां तक कि बच्चों तक फैल चुकी है। डिजिटल युग में जहां सब कुछ 'कनेक्टेड' लगता है, वहीं इंसानी रिश्तों में एक अदृश्य दूरी, कृत्रिमता और आत्मीयता का अभाव देखने को मिल रहा है। सोशल मीडिया की आभासी दुनिया में हम जितने अधिक जुड़े हैं, उतने ही भावनात्मक रूप से अकेले हो गए हैं। व्यक्तिवादी सोच, सामाजिक दुष्प्रभाव एवं रिश्तों की बिखरती दीवारों में अकेलेपन का घातक प्रभाव सामाजिक ढांचे पर गहरे रूप में पड़ रहा है। पारिवारिक संबंधों में दरारें, विवाहों में असंतोष, और तलाक की बढ़ती दरें इसकी साफ निशानी हैं। युवा पीढ़ी में अवसाद, आत्महत्या की प्रवृत्ति और नशे की ओर झुकाव एक चिंताजनक ट्रेंड बन गया है। बुजुर्गों में अकेलेपन से उत्पन्न अल्जाइमर, डिमेंशिया और अन्य मानसिक रोग तेजी से बढ़ रहे हैं।

अकेलापन केवल किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत कमजोरी नहीं है, बल्कि यह समाज की सामूहिक विफलता का संकेत है। जब हम तकनीक, दौड़ और स्वार्थ में इतने उलझ जाते हैं कि किसी के पास 'सुनने का समय' नहीं रहता, तब

अकेलापन जन्म लेता है। अब समय आ गया है कि हम फिर से रिश्तों, संवाद और करुणा की दुनिया की ओर लौटें। अन्यथा अकेलापन, उदासी और असंतुष्टि की भावनाएं कचोटती रहेगी। मानो खुद के होने का एहसास, कोई इच्छा ही ना बची हो। तब छोटी-छोटी चीजों में छिपी खूबसूरती नजर ही नहीं आती। ऐसा प्रतीत होता है कि बहुत से लोग जिंदा हैं, पर जीवित होने के जादुई एहसास को कम ही छू पाते हैं। सोच के भौतिकवादी एवं सुविधावादी होने से हमारी आकांक्षाओं का आसमान ऊंचा हुआ है। लेकिन यथार्थ से साम्य न बैठा पाने से कुंठा, हताशा व अवसाद का विस्तार हो रहा है। जिसके चलते निराशा हमें एकाकीपन या अकेले होने की ओर धकेल देती है। निश्चित ही सोशल मीडिया का क्रांतिकारी ढंग से विस्तार हो रहा है। लेकिन इसकी हकीकत आभासी है, कृत्रिम है, दिखावटी है। हर कोई सोशल मीडिया मंचों पर हजारों मित्र होने का दावा करता है, लेकिन ये मित्र कितने संवेदनशील है? कितने करीब है? इन प्रश्नों का उत्तर नकारात्मक ही है, यथार्थ के जीवन में व्यक्ति बिल्कुल अकेला एवं गुमशुम होता है। आभासी मित्रों का कृत्रिम संवाद हमारी जिंदगी के सवालों का समाधान नहीं दे सकता, अकेलापन दूर नहीं कर सकता। निश्चित रूप से कृत्रिम रिश्ते हमारे वास्तविक रिश्तों के ताने-बाने को मजबूत नहीं कर सकते।

विडंबना यह है कि कृत्रिमताओं के चलते कहीं न कहीं हमारे शब्दों की प्रभावशीलता में भी कमी आई है। जिससे व्यक्ति लगातार एकाकी जीवन की ओर उन्मुख होना लगा है। हमारे संयुक्त परिवारों का बदलता स्वरूप एवं एकल परिवारों का बढ़ता प्रचलन भी इसके मूल में है। पहले घर के बड़े बुजुर्ग किसी झटके या दबाव को सहजता से झेल जाते थे। सब मिल-जुलकर आर्थिक व सामाजिक संकटों का मुकाबला कर लेते थे। लेकिन अब बुजुर्ग एकाकीपन एवं अकेलापन से जूझ रहे है। केरल में इसी तरह के वृद्ध-संकट को महसूस करते हुए वहां की सरकार ने वरिष्ठ नागरिक आयोग बनाया है, जो एक सूझबूझभरा कदम है। आज वृद्धों को अकेलापन, परिवार के सदस्यों द्वारा उपेक्षा, दुर्व्यवहार, तिरस्कार, कटुक्तियां, घर से निकाले जाने का भय या एक छत की तलाश में इधर-उधर भटकने का गम हरदम सालता रहता। वृद्ध समाज इतना कुंठित, अकेला एवं उपेक्षित क्यों है, एक अहम प्रश्न है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं उनकी सरकार अनेक स्वस्थ एवं आदर्श समाज-निर्माण की योजनाओं को आकार देने में जुटी है, उन्हें वृद्धों को अकेलेपन को लेकर भी चिन्तन करते हुए वृद्ध-कल्याण योजनाओं को लागू करना चाहिए, ताकि वृद्धों की प्रतिभा, कौशल एवं अनुभवों का नये भारत-सशक्त भारत के निर्माण में समुचित उपयोग हो सके एवं आजादी के अमृतकाल में अकेलापन एक त्रासदी न बन सके।

कामकाजी परिस्थितियों का लगातार जटिल होना एवं महंगी होती जीवनशैली ने अकेलापन के संकट को गहरा बनाया है। उन परिवारों में यह स्थिति और जटिल है, जहां पति-पत्नी दोनों कामकाजी हैं और बच्चे हॉस्टलों व बोर्डिंग स्कूल में रह रहे हैं। व्यावसायिक क्षेत्रों में भी काम का बोझ इंसानों को अकेला बना रहा है। कार्यालयों और कार्यस्थलों पर भी अकेलापन एक गंभीर चुनौती बन रहा है। कर्मचारी भावनात्मक जुड़ाव की कमी के कारण कार्य में रुचि नहीं लेते। टीम वर्क, इनोवेशन और सहयोग पर इसका नकारात्मक असर पड़ता है। अकेलापन लंबे समय तक बना रहा तो यह बर्नआउट, कार्य से असंतोष और कर्मचारी त्यागपत्र जैसी स्थितियों को जन्म देता है। इससे उत्पादकता में भी गिरावट आती है। मेकिन्से और डेलॉइट जैसी वैश्विक कंसल्टिंग फर्म्स की रिपोर्टें दशार्ती हैं कि अकेलापन कर्मचारियों की उत्पादकता को 15-20 प्रतिशत तक घटा सकता है, जिससे कंपनियों को अरबों डॉलर का नुकसान हो सकता है। अकेलेपन के इस संकट से निपटने के लिए व्यक्तिगत, सामाजिक और संस्थागत स्तर पर सामूहिक प्रयास जरूरी हैं। परिवार, मित्रों और सहयोगियों के साथ समय बिताना ही असली 'समृद्धि' है। कंपनियों और संस्थानों में कर्मचारियों की मानसिक और भावनात्मक स्थिति को समझने वाला नेतृत्व चाहिए। डिजिटल संवाद की जगह आमने-सामने संवाद, 'वर्क फ्रॉम होम' की जगह 'वर्क विद कम्युनिटी' को प्राथमिकता देनी होगी। ऑफिसों और समाज में काउंसलिंग, समूह चर्चा, मेडिटेशन, और योग को प्रोत्साहन दिया जाए। सरकारों को अकेलेपन को एक जनस्वास्थ्य समस्या के रूप में मान्यता देनी चाहिए और सामाजिक समावेश के लिए ठोस कार्यक्रम चलाने चाहिए। डब्ल्यूएचओ का वह आंकड़ा भी चौंकाता है कि अकेलापन हर साल तकरीबन आठ लाख लोगों की जीवन लीला समाप्त कर रहा है। जो यह दशार्ता है कि व्यक्ति न केवल समाज व अपने कार्यालयी परिवेश से अलग-थलग हुआ है, बल्कि वह परिवार से भी कटा है। पिछले दिनों देश के शीर्ष उद्योगपतियों ने कार्यालयों में काम के घंटे बढ़ाने का आग्रह किया था। एक उद्यमी ने तो यहां तक कहा कि क्या जरूरी है कि घर में रहकर पत्नी का ही चेहरा देखा जाए। यह एक संवेदनहीन एवं बेहूदा प्रतिक्रिया थी। दरअसल, लोगों में यह आम धारणा बलवती हुई है कि जिसके पास पैसा है तो वह सबकुछ कर सकता है। जिसके चलते उसने आस-पड़ोस से लेकर कार्यस्थल पर सीमित पहुंच बनायी है। यही वजह है कि हमारे इर्द-गिर्द की भीड़ और ऑनलाइन जिंदगी के हजारों मित्रों के बावजूद व्यक्ति अकेलेपन को जीने के लिये अभिशप्त है। सही बात ये है कि लोग किसी के कष्ट और मन की पीड़ा के प्रति संवेदनशील व्यवहार नहीं करते। हर तरफ कृत्रिमताओं का बोलबाला है। हमारे मिलने-जुलने वाले त्योहार भी अब दिखावे व कृत्रिम सौगातों की भेंट चढ़ गए हैं। हमें उन कारकों पर मंथन करना होगा, जिनके चलते व्यक्ति निजी जीवन में लगातार अकेला या एकाकी होता जा रहा है। असल में अकेलापन तभी मिटेगा जब हम फिर से इंसान बनेंगे- संवेदनशील, सजीव, संवाद और रिश्तों की गर्माहटत से भरे हुए।

संपादकीय

एसआईआर और नागरिकता

बिहार विधानसभा चुनाव से कुछ महीने पहले ही निर्वाचन आयोग स्पेशल इंटैंसिव रिवीजन (एसआईआर) करवा रहा है। उसका कहना है कि कानून व संविधान के तहत उसे यह अधिकार प्राप्त है कि नागरिकता से जुड़े दस्तावेज मांग सकता है ताकि नागरिकों को उचित मताधिकार मिल सके। विपक्ष का आरोप है, आयोग इसकी आड़ में नागरिकता की जांच कर रहा है। वे इस पर कानूनी व वैधानिक सवाल भी उठा रहे हैं। आयोग ने शीर्ष अदालत को दिए 88 पन्नों के हलफनामे में इस प्रक्रिया के तहत किसी की नागरिकता इस आधार पर न समाप्त करने की बात है कि उसका नाम मतदाता सूची के बाहर हो गया। पहचान के सीमित उद्देश्य के लिए आधार, मतदाता-पत्र व राशन-कार्ड पर विचार करने की बात भी की है। आयोग के आदेशानुसार आठ करोड़ मूल बिहारियों को मतदाता सूची में शामिल रहने के लिए 25 जुलाई तक गणना फॉर्म भर कर जमा करना है जिसकी सूची पहली अगस्त को जारी की जा सकती है। संविधान के अनुच्छेद 325 के अनुसार किसी भी शख्स को केवल धर्म, नस्ल, जाति या लिंग के आधार पर मतदाता सूची से बाहर नहीं किया जा सकता। कानूनन देश का प्रत्येक नागरिक, जो 18 साल या उससे अधिक है, मतदाता के तौर पर पंजीकरण करा सकता है। इसमें सिर्फ गैर-नागरिक को नाम दर्ज कराने के अयोग्य ठहराया गया है। सुप्रीम कोर्ट अपने फैसले में स्पष्ट कर चुका है कि मताधिकार केवल संवैधानिक अधिकार है, मौलिक अधिकार नहीं। मगर भारतीय नागरिक होने के बावजूद उसे शत्रे पूरी करनी होती है, और आवश्यक दस्तावेज देने होते हैं। आयोग की मंशा पर उंगली उठाने वालों का आरोप है कि गणना फार्म में मांगे गए दस्तावेज में आधार, मतदाता-पत्र व राशन-कार्ड का न शामिल होना संदेह उपजाता है। चूंकि सरकार आधार को केवल पहचान-पत्र मान रही है, इसलिए यह संशय उठा है। यदि जल्द ही आयोग इसमें सुधार कर ले तो शायद इन आरोपों-प्रत्यारोपों से बचा जा सकता है। आयोग को अपनी छवि और स्वायत्तता का विशेष ख्याल रखना होगा। भारत लोकतांत्रिक देश ही नहीं है, दुनिया के समक्ष मताधिकार की ताकत की मिसाल भी पेश करता है। खास मतदाताओं को उनके अधिकार से वंचित करने की किसी राजनीतिक दल की साजिश का हिस्सा बनने से उसे न सिर्फ बचना होगा, बल्कि अपने पूर्ववर्तियों के नक्शे-कदम पर चल कर सख्त रवैया अपनाते हुए लोकतंत्र का रक्षा कवच बनने से भी हिचकिचाना नहीं चाहिए।

चिंतन-मनन

उपयोगी हल

एक बार की बात है एक राजा था। उसका एक बड़ा-सा राज्य था।एक दिन उसे देश घूमने का विचार आया और उसने देश भ्रमण की योजना बनाई और घूमने निकल पड़ा। जब वह यात्रा से लौट कर अपने महल आया। उसने अपने मंत्रियों से पैरों में दर्द होने की शिकायत की। राजा का कहना था कि मार्ग में जो कंकड़ पत्थर थे वे मेरे पैरों में चुभ गए और इसके लिए कुछ इंतजाम करना चाहिए। कुछ देर विचार करने के बाद उसने अपने सैनिकों व मंत्रियों को आदेश दिया कि देश की संपूर्ण सड़कें चमड़े से ढंक दी जाएं। राजा का ऐसा आदेश सुनकर सब सकते में आ गए। लेकिन किसी ने भी मना करने की हिम्मत नहीं दिखाई। यह तो निश्चित ही था कि इस काम के लिए बहुत सारे रुपए की जरूरत थी। लेकिन फिर भी किसी ने कुछ नहीं कहा। कुछ देर बाद राजा के एक बुद्धिमान मंत्री ने एक युक्ति निकाली। उसने राजा के पास जाकर डरते हुए कहा कि मैं आपको एक सुझाव देना चाहता हूँ। अगर आप इतने रुपयों को अनावश्यक रूप से बर्बाद न करना चाहें तो एक अच्छी तरकीब मेरे पास है। जिससे आपका काम भी हो जाएगा और अनावश्यक रुपयों की बबार्दी भी बच जाएगी। राजा आश्चर्यचकित था क्योंकि पहली बार किसी ने उसकी आज्ञा न मानने की बात कही थी। उसने कहा बताओ क्या सुझाव है। मंत्री ने कहा कि पूरे देश की सड़कों को चमड़े से ढंकने के बजाय आप चमड़े के एक टुकड़े का उपयोग कर अपने पैरों को ही क्यों नहीं ढंक लेते। राजा ने अचरज की दृष्टि से मंत्री को देखा और उसके सुझाव को मानते हुए अपने लिए जूता बनवाने का आदेश दे दिया। यह कहानी हमें एक महत्वपूर्ण पाठ सिखाती है कि हमेशा ऐसे हल के बारे में सोचना चाहिए जो ज्यादा उपयोगी हो। जल्दबाजी में अप्रायोगिक हल सोचना बुद्धिमानी नहीं है। दूसरों के साथ बातचीत से भी अच्छे हल निकाले जा सकते हैं।

करोड़ों का सवाल : कौन बनेगा उप-राष्ट्रपति.... नीतीश या कोई ओर...?

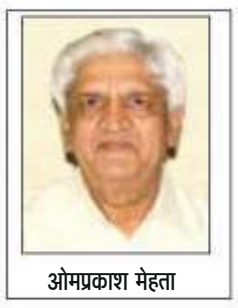

ओमप्रकाश मेहता

श्री जगदीप धनखड़ ने उप-राष्ट्रपति पद से अचानक इस्तीफा क्यों व किसके निर्देश पर दिया? यह सवाल तो अब पुराना हो गया है, बदलते राजनीतिक घटनाक्रम में अब अहम् सवाल यह है कि अगला उप- राष्ट्रपति कौन? क्या बिहार के विधानसभा चुनावों की राजनीतिक प्रतिष्ठा के दौर में वहां के मौजूदा मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार को यह पद सौंपा जा सकता है? इस प्रयोग से केन्द्र में सत्तारूढ़ भाजपा को दोहरी राजनीतिक उपलब्धि हो सकती है, एक ओर जहां बिहार के सशक्त नेता का भाजपा प्रवेश दूसरा बिहार में भाजपा की बढ़ती संभावनाएं, वैसे भी पिछले कुछ समय से मोरी और नीतीश के बीच राजनीतिक सौहार्द में अभिवृद्धि जगजाहिर हो रही है, इसलिए दिल्ली से पटना तक चल रहे मौजूदा राजनीतिक घटनाक्रम को पूर्णतः प्रायोजित समझना कतई गलत नही होगा और जहां तक जगदीप धनखड़ का सवाल उन्हें तो चंद घण्टों में ही सड़क पर अकेले खड़ा कर दिया गया है, यह मोदी की राजनीतिक कूटनीति का ताजा ज्वलंत उदाहरण है।

वैसे भी इस पूरे राजनीतिक घटनाक्रम को सूक्ष्म नजरों से देखा जाए तो यह परिलक्षित होता है कि भाजपा एक कमजोर पार्टी नही कहलाना चाहती थी, पिछले एक साल से प्रधानमंत्री नरेन्द्र भाई मोदी केन्द्र में स्थिरता का आभास कराने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे है और उनके इस प्रयास में जो भी बाधा बनता है, उसे वे अलग-थलग कर देते है, दो न्यायाधीशों के महाभियोग के प्रकरण में चूंकि धनखड़ भी दिलचस्पी दिखा रहे थे, जो मोदी को बिल्कुल पसंद नही था, इसलिए यह घटनाक्रम घटित हुआ साथ ही धनखड़ ने राज्यसभा में विधायी कार्यों को नियंत्रित करने का प्रयास भी किया था, जो मोदी जी को पसंद नही था और इस कारण से यह पूरा राजनीतिक घटनाक्रम घटित हुआ और धनखड़ को उसका खामियाजा भुगतना पड़ा, नेतृत्व की नाराजी रातों-रात किसी राजनेता का क्या हश्र कर देती है, यह इसका सबसे बड़ा और ताजा उदाहरण है।

हाँ, तो आज का मुख्य बिन्दू कौन बनेगा उप-राष्ट्रपति था, संविधान के नियमानुसार उप- राष्ट्रपति पति के इस्तीफें के बाद साठ दिवस की अवधि में नए उप-राष्ट्रपति का चुनाव होना चाहिए, इसलिए सितम्बर अंत तक नया उप- राष्ट्रपति चुनना मौजूदा नरेन्द्र मोदी सरकार की पहली प्राथमिकता होगी, जिसके लिए प्रयास शुरू हो गए है और अब इस पद के लिए नीतीश कुमार जी का नाम ही सुर्खियों में है, जिनको मूर्तरूप देने के बाद बिहार में भाजपा का दमखम बढ़ सकता है और तीन-चार चुनाव में भाजपा की संभावनाएं बलवती हो सकती है।

....और मोदी के इस प्रयोग से भाजपा और उनकी केन्द्र सरकार दोनों को ही राजनीतिक लाभ हासिल हो सकता है। इस राजनीतिक घटना के तारतम्य में यदि यह कहा जाए कि मोदी जी ने तीन साल बाद होने वाले लोकसभा चुनावों के लिए अपनी जड़े अभी से मजबूत करना शुरू कर दिया है तो कतई गलत नही होगा, क्योंकि मोदी के राजनीतिक भविष्य को लेकर अभी से विभिन्न क्षेत्रों में कयासों का दौर शुरू हो गया है, कहा तो यहां तक भी गया कि यदि 75 का बंधन सामने आया तो स्वयं मोदी जी प्रधानमंत्री पद अपने विश्वस्त सहयोगी को सौंप कर स्वयं उप- राष्ट्रपति बन सकते है, लेकिन मौजूदा राजनीतिक दौर में यह कयास राजनीतिक पंड़ितों के गले नही उतर रहा है।

....लेकिन यही सही भी है कि मौजूदा राजनीतिक माहौल और उसमें घट रहे राजनीतिक घटनाक्रम मोदी जी के राजनीतिक भविष्य के लिए काफी महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकते है, इसलिए उन्हें काफी सूक्ष्म दृष्टि से देखा परखा जा रहा है। अब यह तो भविष्य ही बताऐगा कि मोदी जी का 2029 के बाद राजनीति भविष्य क्यों व कैसा होगा?

एंटी एजिंग दवा : फैला है सेवाओं का भ्रमजाल

अमित बैजनाथ गर्ग

हाल में मॉडल-अभिनेत्री शेफाली जरीवाला की कार्डियक अरेस्ट के चलते 42 वर्ष की उम्र में मृत्यु हो गई। उनके कार्डियक अरेस्ट आने की वजह एंटी-एजिंग दवाओं का सेवन भी बताई जा रही है।

शेफाली सात-आठ सालों से ये दवाएं ले रही थीं। जिस दिन उनकी मौत हुई उस दिन उनका व्रत था। वह खाली पेट भी इन दवाओं को ले रही थीं। असल में पिछले कुछ सालों में लोगों में उम्र को छिपाने और जवान दिखने का चलन तेजी से बढ़ा है। इसके लिए वे जम कर पैसा बहा रहे हैं।

अगर एंटी-एजिंग दवाओं-सेवाओं के कारोबार की बात की जाए तो यह देश में तेजी से बढ़ रहा है। इसमें कॉस्मेटिक यानी सर्जरी एवं फिलर्स ट्रीटमेंट और दवाइयां, दोनों शामिल हैं। यह बाजार त्वचा की देखभाल, झुर्रियां हटाने और उम्र बढ़ने के लक्षणों को कम करने वाली दवाओं और उत्पादों की बढ़ती मांग से प्रेरित है। एक अनुमान के मुताबिक, 2023 में देश में एंटी-एजिंग दवाओं-सेवाओं का कारोबार करीब 3,500 करोड़ रु पये का था। 2024 में इसका आकार 4,000 करोड़ रुपये से ज्यादा हो गया। 2035 तक इसके 8,000 करोड़ रुपये से ज्यादा होने की उम्मीद है। यह कारोबार 7-8 प्रतिशत की सालाना दर से बढ़ रहा है।

कुछ कंपनियों का दावा है कि यह कारोबार दस साल बाद दस हजार करोड़ रुपये से भी ज्यादा का होगा। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि एंटी-एजिंग दवाओं-सेवाओं का कारोबार कितनी तेजी से पैर पसार रहा है। एक्सपर्ट बताते हैं कि लोगों में जवां दिखने की चाहत तेजी से बढ़ रही है। इनमें 30-50 साल तक की उम्र वाले लोगों की संख्या सबसे अधिक है। देश में एंटी-एजिंग उपचार के लिए कई तरह की दवाएं, इंजेक्शन तथा सर्जरी बाजार में आसानी से उपलब्ध हैं। इस बिजनेस में दखल रखने वाली कई कंपनियों ने अलग-अलग शहरों में अपने क्लिनिक खोल लिए हैं। मार्केट एक्सपर्ट बताते हैं कि एंटी-एजिंग दवाओं-सेवाओं के मौजूदा कारोबार में अंग्रेजी, आयुर्वेदिक और होम्योपैथिक दवाइयां, स्किन संबंधी कॉस्मेटिक प्रॉडक्ट्स, बोटोक्स सर्जरी तथा फिलर्स ट्रीटमेंट के बिजनेस शामिल हैं।

एंटी-एजिंग उपचार वह प्रक्रिया है, जिसमें आपको बढ़ती उम्र में भी जवान दिखाया जाता है। यह त्वचा पर झुर्रियां बढ़ने से रोकने का उपचार है। इसके तहत कॉस्मेटिक, दवाइयां, सर्जरी, इंजेक्शन और कोलेजन सप्लीमेंट्स आते हैं। एंटी-एजिंग उपचार अंग्रेजी के साथ आयुर्वेदिक तरीके से भी करने का दावा किया जाता है। अंग्रेजी कंपनियों के साथ कुछ आयुर्वेदिक और होम्योपैथिक कंपनियों ने भी दवाएं, ब्यूटी प्रॉडक्ट्स और कोलेजन सप्लीमेंट्स बनाने शुरू कर दिए हैं।

कहने का अभिप्राय यह है कि आयुर्वेदिक-होम्योपैथिक कंपनियों की भी अंग्रेजी दवा कंपनियों की तरह इस बाजार पर पूरी नजर है। हालिया कई सर्वे और रिपोर्ट्स बताती हैं कि दुनिया की तरह भारत में भी एक बड़ी आबादी सोशल मीडिया पर विज्ञापन देख कर प्रॉडक्ट्स का जम कर उपयोग कर रही है। कई सेलेब्रिटी हैं, जो टीवी और सोशल मीडिया पर इस तरह की दवाओं का प्रचार कर रहे हैं।

डॉक्टरों का कहना है कि एंटी-एजिंग की कुछ दवाओं में हार्मोन, स्टेरॉयड या अन्य केमिकल्स होते हैं, जो शरीर के नेचुरल सिस्टम से छेड़छाड़ करते हैं। इससे हार्ट और लिवर को नुकसान पहुंच सकता है। हार्मोन बैलेंस भी बिगड़ सकता है। इन दवाओं का लगातार सेवन करना ब्लड प्रेशर, कोलेस्ट्रॉल या हार्ट से जुड़ी बीमारियों का कारण भी बन सकता है। कई लोगों की स्किन बहुत ज्यादा संवेदनशील होती है, कुछ को एलर्जी की समस्या भी होती है। डॉक्टरों का कहना है कि हर किसी को किसी भी नए प्रॉडक्ट का उपयोग करने से पहले एक बार डमेटोलॉजिस्ट से सलाह ले लेनी चाहिए। कोई भी दवा या सप्लीमेंट डॉक्टर की देखरेख में इस्तेमाल करने से ही उसके सुरक्षित बने रहने के चांस ज्यादा होते हैं।

डॉक्टरों का कहना है कि बिना दवा के भी बढ़ती उम्र में जवान दिखा जा सकता है। इसके लिए फल एवं हरी सब्जियों का सेवन करें। वे एवाकाडो, ब्ल्यूबेरी, हल्दी, नट्स और सीड्स तथा हरी पत्तेदार सब्जियां खाने की सलाह देते हैं। ये फल-सब्जियां कोलेजन प्रोडक्शन को बढ़ावा देते हैं, जिससे त्वचा टाइट और ग्लोइंग बनी रहती है।

वहीं, पालक-मेथी जैसी हरी सब्जियों में विटामिन-के, आयरन और फोलेट होता है, जो ब्लड सकरुलेशन को बेहतर बनाता है। इन सभी को नियमित रूप से डाइट में शामिल करें। इसके साथ हेल्दी लाइफस्टाइल फॉलो करें। रोजाना 30 मिनट व्यायाम करें, पूरी नींद लें, भरपूर मात्रा में पानी पिएं और जंक फूड कम से कम खाएं। सबसे जरूरी बात यह है कि दौड़ती-भागती जिंदगी में तनाव का प्रबंधन करें।

ऑस्ट्रेलिया के मेलबर्न में नस्लीय हमला

स्वामीनारायण मंदिर पर दीवारों पर लिखे गए नफरत भरे संदेश

हिटलर का ग्राफिटी से बनाया चार स्थानों पर चित्र

हिंदू काउंसिल ऑफ ऑस्ट्रेलिया ने जताया आक्रोश

एजेंसी ▶▶ मेलबर्न

ऑस्ट्रेलिया के मेलबर्न शहर में एक बार फिर नस्लीय नफरत का चेहरा सामने आया है। यहां बोरोनिया इलाके में स्थित श्री स्वामीनारायण मंदिर को अज्ञात लोगों ने अपमानजनक और नस्लीय भाषा वाले संदेशों से बदनाम करने की कोशिश की। यह घटना सिर्फ एक धार्मिक स्थल पर हमला नहीं, बल्कि भारतीय समुदाय की भावनाओं पर सीधा प्रहार है। मंदिर की दीवार पर लाल रंग से 'गो होम ब्राउन...' जैसे नफरत भरे नस्लीय शब्द लिखे गए। यही नहीं, पास के दो एशियाई रेस्टोरेंट की दीवारों पर भी इसी तरह की अभद्र भाषा पाई गई है।

हिंदुओं की धार्मिक स्वतंत्रता पर हमला

हिंदू काउंसिल ऑफ ऑस्ट्रेलिया (विक्टोरिया चैप्टर) के अध्यक्ष मकरंद भगवत ने इस घटना पर गहरा आक्रोश व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि यह मंदिर शांति, भक्ति और एकता का प्रतीक है। इस तरह की घटना हमारी धार्मिक स्वतंत्रता और पहचान पर हमला है। उन्होंने बताया कि मंदिर में रोजाना प्रार्थनाएं, सामूहिक भोजन और सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं, जिसमें मेलबर्न के भारतीय समुदाय से लोग भाग लेते हैं। इस घटना के बाद हिंदू और बहुसांस्कृतिक संगठनों ने एकजुट होकर नफरत के खिलाफ आवाज उठाई है। स्थानीय समुदाय और 'सिटी ऑफ ग्रेटर नॉक्स' की मल्टीफेथ नेटवर्क ने मंदिर को समर्थन देने का भरोसा दिलाया है।

पहले भी हो चुकी हैं ऐसी घटनाएं

बुधवार को ही 23 वर्षीय भारतीय युवक चरनप्रीत सिंह पर एडिलेड शहर में नस्लीय टिप्पणी करते हुए जानलेवा हमला किया गया। जनवरी, 2023 में मेलबर्न के मिल पार्क में स्वामीनारायण मंदिर पर खालिस्तानी समर्थकों ने हिंदुस्तान मुर्दाबाद और मोदी हिटलर जैसे नारे लिखे थे। मई, 2023 में सिडनी के रोसहिल मंदिर पर भी आपत्तिजनकर नारे लिखे गए थे।

विक्टोरिया की प्रीमियर ने की निंदा

विक्टोरिया की प्रीमियर जैकिंटा एलन ने घटना की निंदा की और कहा कि जो कुछ हुआ वह हेट क्राइम, नस्लवादी और बेहद परेशान करने वाला है। उन्होंने कहा कि यह सिर्फ बर्बरता नहीं है - यह नफरत का एक जानबूझकर किया गया कृत्य है, जिसे डराने, अलग-थलग करने और डर फैलाने के लिए अंजाम दिया गया है। यह आपके सुरक्षित महसूस करने और अपनेपन के अधिकार पर और उन मूल्यों पर हमला था जो हमें जोड़ता हैं। विक्टोरिया में कहीं भी इसके लिए कोई जगह नहीं है। और यह जिस रूप में है उसका उसी रूप में विरोध किया जाना चाहिए। एलन ने विक्टोरिया पुलिस से मामले को गंभीरता से लेने का आग्रह किया और कहा कि ऑस्ट्रेलिया के बहुसांस्कृतिक मामलों के मंत्री समुदाय की बात सीधे सुनने के लिए जल्द ही मंदिर का दौरा करेंगे।

पुलिस ने जांच शुरू की

ऑस्ट्रेलियाई पुलिस ने मंदिर और दो रेस्टोरेंट सहित बोरोनिया में चार जुड़ी घटनाओं की जांच शुरू कर दी है। पुलिस ने बताया कि 21 जुलाई को बेजवाटर और बोरोनिया में ग्रेफिटी (स्प्रे पेंट से दीवारों पर लिखना) की रिपोर्ट के बाद पुलिस जांच कर रही है। ऐसा समझा जाता है कि ग्रेफिटी को रात भर माउंटेन हाईवे पर एक उपचार केंद्र के सामने स्प्रे-पेंट किया गया था। उन्होंने कहा कि कुछ ही समय बाद, सुबह करीब साढ़े नौ बजे बोरोनिया में वाडहर्स्ट ड्राइव पर एक मंदिर पर ग्रेफिटी देखी गई। बोरोनिया रोड पर दो और रेस्टोरेंट पर भी ऐसे ग्रेफिटी मिले।

पीएम मोदी और स्टार्मर ने लंदन में प्रमुख उद्योगपति से की मुलाकात

सीईटीए से मिलने वाले अवसरों का लाभ उठाने के लिए किया प्रोत्साहित

व्यापार, निवेश और नवाचार साझेदारी को गहरा करें उद्योगपति

पीएम मोदी और स्टार्मर ने ऐतिहासिक व्यापार समझौते की सराहना की और उम्मीद जताते हुए कहा कि ये व्यापक रणनीतिक साझेदारी में एक नए युग की शुरुआत करेगा। जिससे न केवल व्यापार, अर्थव्यवस्था बल्कि उभरती हुई प्रौद्योगिकियों, शिक्षा, नवाचार, अनुसंधान और स्वास्थ्य के क्षेत्रों में भी सहयोग में मदद मिलेगी

दोनों देशों की अर्थव्यवस्थाओं और वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में बढ़ावा देगा

यह समझौता व्यापक रणनीतिक साझेदारी में एक नए युग की शुरुआत

▶▶ नई दिल्ली

अपनी दो दिवसीय ब्रिटेन यात्रा के दूसरे और अंतिम दिन गुरुवार को पीएम नरेंद्र मोदी और ब्रिटेन के पीएम कीर स्टार्मर ने लंदन (चेकर्स) में दोनों देशों के उद्योगपतियों के साथ एक अहम मुलाकात की। जिसमें स्वास्थ्य, फार्मास्यूटिकल्स, रत्न एवं आभूषण, ऑटोमोबाइल, ऊर्जा, विनिर्माण, दूरसंचार, प्रौद्योगिकी, आईटी, लॉजिस्टिक्स, वस्त्र, और वित्तीय सेवा जैसे क्षेत्रों के प्रमुख उद्योगपति मौजूद थे।

यह वो क्षेत्र हैं, जो दोनों देशों में रोजगार सृजन और समावेशी आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। दोनों शीर्ष नेता इस दौरान चाय पर चर्चा करते हुए भी नजर आए। भारत-ब्रिटेन के बीच व्यापक आर्थिक और व्यापार समझौते (सीईटीए) पर हस्ताक्षर के बाद दोनों नेताओं की उद्योगपतियों के साथ यह मुलाकात हुई। जिसमें उन्होंने व्यापार, निवेश और नवाचार साझेदारी को गहरा करने के लिए इस समझौते से मिलने वाले अवसरों का पूरी क्षमता से लाभ उठाने के लिए उद्योगपतियों को प्रोत्साहित किया। विदेश मंत्रालय ने एक बयान जारी कर यह जानकारी दी।

आपसी सहयोग को देंगे गति

दोनों नेताओं ने बीते कुछ वर्षों में द्विपक्षीय व्यापार, निवेश संबंधों में हुए विस्तार का जिक्र भी उद्योगपतियों के साथ किया। इसके अलावा आपसी सहयोग को बढ़ाकर आर्थिक विकास को गति देने की अपनी साझा प्रतिबद्धता की पुष्टि की। साथ ही कहा कि यह नया समझौता दोनों अर्थव्यवस्थाओं और वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में व्यापारिक भावना को बढ़ावा देगा।

प्रदर्शनी का किया अवलोकन

कार्यक्रम के दौरान सीईटीए के जरिए भारत और ब्रिटेन के प्रमुख उत्पादों, नवाचारों की एक प्रभावशाली श्रृंखला को प्रदर्शनी के जरिए दोनों नेताओं के समक्ष प्रदर्शित किया गया। जिसका दोनों ने अवलोकन किया। प्रदर्शनी में रत्न, आभूषण, इंजीनियरिंग सामान, गुणवत्तापूर्ण उपभोक्ता उत्पाद और उन्नत तकनीकी समाधान मुख्य रूप से शामिल किए गए।

समझौते की सराहना की

पीएम मोदी और स्टार्मर ने ऐतिहासिक व्यापार समझौते की सराहना की और उम्मीद जताई कि ये व्यापक रणनीतिक साझेदारी में एक नए युग की शुरुआत करेगा। जिससे न केवल व्यापार, अर्थव्यवस्था बल्कि उभरती हुई प्रौद्योगिकियों, शिक्षा, नवाचार, अनुसंधान और स्वास्थ्य के क्षेत्रों में भी सहयोग को और अधिक गहनता प्रदान करने में मदद मिलेगी।

अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप की टेक कंपनियों को चेतावनी

चीन में फैक्ट्री और भारत में हायरिंग के दिन करें समाप्त

राष्ट्रपति ट्रंप के कार्यकाल में वे दिन अब गए

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने देश की प्रमुख टेक कंपनियों की आलोचन की है। उन्होंने चीन में फैक्ट्रियां स्थापित करने और भारत में कर्मचारियों की भर्ती करने पर कड़ा ऐतराज जताया है।

ट्रंप ने चेतावनी दी है कि उनके राष्ट्रपति कार्यकाल में वे दिन खत्म हो गए हैं। ट्रंप ने यह टिप्पणी बुधवार को एआई शिखर सम्मेलन में की। उन्होंने एआई से संबंधित तीन कार्यकारी आदेशों पर हस्ताक्षर किए। एआई के उपयोग के लिए व्हाइट हाउस की कार्य योजना भी शामिल थी। उन्होंने कहा कि बहुत लंबे समय तक अमेरिका का अधिकांश तकनीकी उद्योग कट्टरपंथी वैश्वीकरण का अनुसरण करता रहा।

आजादी का उठाया फायदा

ट्रंप ने कहा कि कट्टरपंथी वैश्वीकरण का मतलब है कि ये कंपनियां अमेरिकी हितों की बजाय अंतरराष्ट्रीय लाभ को प्राथमिकता देती रही हैं। उन्होंने कहा कि हमारी कई बड़ी टेक कंपनियों ने चीन में अपनी फैक्ट्रियां बनाकर, भारत में श्रमिकों को नियुक्त करके और आयरलैंड में मुनाफे में कटौती करके अमेरिकी आजादी का फायदा उठाया है। इस सबसे बीच, वे अपने ही देश में अपने नागरिकों को बरगलाने और यहां तक की उन पर सेंसरशिप लगाने का काम भी कर रही हैं। राष्ट्रपति ट्रंप के कार्यकाल में, वे दिन अब गए।

अमेरिका को दें प्राथमिकता

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि हमें अमेरिकी प्रौद्योगिकी कंपनियों की पूरी तरह से अमेरिका के लिए प्रतिबद्धता की जरूरत है। हम चाहते हैं कि आप अमेरिका को प्राथमिकता दें। आपको ऐसा करना ही होगा।

ओपनएआई सीईओ सैम ऑल्टमैन की चेतावनी

एआई के कारण पूरी तरह से खत्म होंगी सर्विस सेक्टर की नौकरियां

एजेंसी ▶▶ वॉशिंगटन

ओपनएआई के सीईओ सैम ऑल्टमैन ने हाल ही में वाशिंगटन में आयोजित फेडरल रिजर्व सम्मेलन में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के भविष्य और इसके असर को लेकर बेबाकी से अपनी राय रखी। ऑल्टमैन ने कस्टमर सपोर्ट जॉब्स को लेकर दो टूक कहा कि एआई अब इतना सक्षम हो गया है कि वह साधारण सवालों से लेकर जटिल समस्याओं तक सब कुछ खुद ही संभाल सकता है, वो भी बिना किसी इंसानी मदद के। उन्होंने कहा कि जब आप कस्टमर सपोर्ट पर कॉल करते हैं और सामने एआई होता है, तो अब वह बिल्कुल ठीक है।

हेल्थकेयर में एआई बढ़ रहा

उन्होंने कहा कि एआई यह काम तेजी से, बिना गलती और इंसान से बेहतर ढंग से कर सकता है। ऑल्टमैन का साफ मानना है कि यह एक ऐसा क्षेत्र है, जहां इंसानों की जरूरत बहुत जल्द खत्म हो सकती है। ऑल्टमैन ने यह भी बताया कि हेल्थकेयर में भी एआई का रोल तेजी से बढ़ रहा है।

खबर संक्षेप

बांग्लादेश के पूर्व मुख्य न्यायाधीश हक गिरफ्तार

ढाका। गुरुवार सुबह बांग्लादेश के पूर्व मुख्य न्यायाधीश एबीएम खैरुल हक को उनके धनमंडी स्थित घर से गिरफ्तार कर लिया गया है। ढाका मेट्रोपॉलिटन पुलिस की जासूसी शाखा (डीबी) ने ये गिरफ्तारी की है।डीबी के संयुक्त आयुक्त मोहम्मद नसीरुल इस्लाम के अनुसार एबीएम खैरुल हक के खिलाफ कई मामले दर्ज हैं। पूछताछ के लिए उन्हें मिंटो रोड स्थित डीबी मुख्यालय ले जाया गया। खैरुल हक ने 2010 में पदभार ग्रहण करते हुए देश के 19वें मुख्य न्यायाधीश के रूप में कार्य किया था।

चीन में खनन क्षेत्र के दौरे पर छह छात्र डूबे

बीजिंग। चीन की एक स्वर्ण उत्पादक कंपनी से जुड़े एक खनन संयंत्र के शैक्षिक दौरे पर एक औद्योगिक टैंक में गिरने से छह चीनी छात्र डूब गए। चीनी मीडिया ने ये जानकारी दी है। रिपोर्ट के अनुसार, नॉर्थईस्टर्न यूनिवर्सिटी के छात्र बुधवार को उत्तरी चीन के इनर मंगोलिया स्वायत्त क्षेत्र में एक संयंत्र के दौरे के दौरान एक फ्लोटेशन सेल में गिर गए। यह संयंत्र हुलुनबुइर में चाइना नेशनल गोल्ड ग्रुप कंपनी लिमिटेड के अंतर्गत एक खनन कंपनी द्वारा संचालित है।

भारत-नेपाल के बीच हुई बातचीत

दोनों देश सुरक्षा सहयोग को मजबूत करने पर हुए सहमत

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

भारत और नेपाल ने द्विपक्षीय सुरक्षा सहयोग को और मजबूत करने पर सहमति जताई। दोनों देशों के बीच गृह सचिव स्तर की बातचीत के दौरान सीमा प्रबंधन की समीक्षा की गई।

एक बयान के मुताबिक 22 जुलाई को भारत और नेपाल के गृह सचिव स्तर की बैठक में यह चर्चा हुई। भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व केंद्रीय गृह सचिव गोविंद मोहन ने किया जबकि नेपाली प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व वहां के गृह सचिव गोकर्ण मणि दुवादी ने किया।

सीमा प्रबंधन की समीक्षा की

दोनों पक्षों ने द्विपक्षीय सुरक्षा सहयोग के साथ-साथ सीमा प्रबंधन के संपूर्ण पहलुओं की समीक्षा की। दोनों पक्षों ने आपराधिक मामलों में पारस्परिक कानूनी सहायता पर समझौते के मसौदे को अंतिम रूप दिए जाने का स्वागत किया तथा संशोधित प्रत्यर्पण संधि को शीघ्र पूरा करने की दिशा में काम करने पर सहमति व्यक्त की।

अंगारा एयरलाइंस का रूसी एन-24 प्लेन चीन सीमा के पास क्रैश

रूस की एविएशन सेफ्टी एजेंसी जांच करेगी

सभी 49 लोगों की मौत, कुछ घंटे पहले कंट्रोल रूम से संपर्क टूटा

एजेंसी ▶▶ मॉस्को

रूस के अमूर क्षेत्र में अंगारा एयरलाइंस का एक यात्री विमान एएन-24 पूर्वी रूस के अमूर इलाके में टिंडा शहर के पास क्रैश हो गया। हादसे में 49 लोगों की मौत हो गई, जिनमें पांच बच्चे भी शामिल हैं। हादसे की पुष्टि क्षेत्रीय प्रशासन और आपातकालीन विभाग ने की है। इस विमान ने टाइंडा शहर की ओर उड़ान भरी थी, लेकिन अपने गंतव्य से कुछ ही दूरी पर एयर ट्रैफिक कंट्रोल रूम से उसका संपर्क टूट गया।

विमान तेज गति से जमीन से टकराया

हादसे के समय एएन-24 विमान में कुल 49 लोग सवार थे, जिनमें 5 बच्चों सहित 43 यात्री और चालक दल के 6 सदस्य शामिल थे। सभी यात्रियों की मौत की पुष्टि हो चुकी है। ऐसा लगता है विमान बहुत तेज गति से जमीन से टकराया था।

सरकार पीड़ितों के साथ

क्षेत्रीय गवर्नर वासिली ओरलोव ने हादसे की पुष्टि करते हुए शोक व्यक्त किया और कहा कि यह हमारे लिए एक गहरी क्षति है। सरकार पीड़ितों के परिवारों के साथ खड़ी है और हर संभव मदद की जाएगी।

फिलिस्तीनी मुद्दे पर भारत की दो टूक

युद्धविराम और बंधकों की रिहाई हो, मानवीय त्रासदी पर लगे रोक

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

संयुक्त राष्ट्र में भारत के राजदूत और स्थायी प्रतिनिधि पर्वतनेनी हरीश ने फिलिस्तीनी मुद्दे सहित पश्चिम एशिया की वर्तमान स्थिति पर भारत का रुख साफ किया।

उन्होंने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) की त्रैमासिक खुली बहस के दौरान भारत का पक्ष रखते हुए कहा कि मानवीय त्रासदी जारी नहीं रहनी चाहिए। शांति का कोई विकल्प नहीं है। युद्धविराम लागू होना चाहिए। सभी बंधकों को रिहा किया जाना चाहिए।

फिलिस्तीनियों के साथ खड़ा है भारत

पी. हरीश ने कहा कि इन उद्देश्यों को हासिल करने के लिए संवाद और कूटनीति ही एकमात्र विकल्प हैं। इसके अलावा कोई अन्य समाधान नहीं है। हरीश ने फिलिस्तीन के प्रति भारत के समर्थन को भी दोहराया। उन्होंने कहा कि भारत के फिलिस्तीनी भाइयों और बहनों के साथ ऐतिहासिक और मजबूत संबंध हैं। हम हमेशा उनके साथ खड़े रहे हैं।

9 लाख सिम ब्लॉक, साइबर फ्रॉड वार में बचाए 5,489 करोड़ रुपए

नई दिल्ली। भारत में बढ़ते साइबर क्राइम और डिजिटल अरेस्ट के मामलों के सवाल पर केंद्र सरकार ने बताया कि साइबर क्राइम और डिजिटल अरेस्ट से जुड़े 9 लाख 42 हजार सिम कार्ड और 2,63,348 आईएमई को ब्लॉक किया जा चुका है। साथ ही 17.82 लाख से अधिक शिकायतों में 5,489 करोड़ रुपये साइबर अपराधियों के पास जाने से रोके गए हैं। साइबर क्राइम के मामलों से निपटने के लिए 11 तरीके की रणनीति तैयार की गई है। यह जानकारी केंद्रीय गृह राज्यमंत्री संजय बंदी राज्यसभा में दी। उन्होंने बताया साइबर क्राइम के मामलों से निपटने के लिए 11 तरीकों की रणनीति बनाई गई है। गृह मंत्रालय ने इंडियन साइबर क्राइम कोऑर्डिनेशन सेंटर बनाया है। जो कि पूरे देश में साइबर क्राइम के मामलों के लिए मिलकर काम करता है।

थाईलैंड-कंबोडिया के बीच सीमा विवाद हिंसक टकराव में बदला

हवाई हमलों और गोलीबारी में 11 लोगों की मौत

एजेंसी ▶▶ बैंकॉक

थाईलैंड और कंबोडिया के बीच सीमा विवाद गुरुवार को हिंसक टकराव में बदल गया है। इस संघर्ष में अब तक 11 नागरिकों की मौत हो चुकी है। थाईलैंड ने कड़ा कदम उठाते हुए अपने घातक एफ-16 फाइटर जेट्स से कंबोडिया के अंदर सैन्य ठिकानों पर सीधा हवाई हमला कर दिया है। वहीं जवाबी कार्रवाई में कंबोडिया ने भी मिसाइल दागकर थाई क्षेत्र को निशाना बनाया है।

थाई रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता सुरसंत कोंगसिरी ने बताया कि सबसे ज्यादा हताहत सिसा केट प्रांत में हुए, जहां एक पेट्रोल पंप पर गोलीबारी में छह लोगों की जान चली गई। तीन सीमा प्रांतों में कुल 14 लोग घायल बताए गए हैं। थाईलैंड और कंबोडिया के बीच 817 किलोमीटर लंबी सीमा है, जहां दशकों से सीमा निर्धारण को लेकर विवाद चल रहा है।

अंतरराष्ट्रीय न्यायालय ने प्रेह विहेयर मंदिर को कंबोडिया का हिस्सा माना था

एफ-16 ने मचाया तांडव

थाईलैंड की सेना ने आधिकारिक बयान में स्वीकार किया है कि उसने अपने छह एफ-16 लड़ाकू विमानों को सीमा क्षेत्र में उतारा, जिनमें से एक ने सीधे कंबोडिया के सैन्य बेस को निशाना बनाकर तबाह कर दिया।

राजनयिक संबंधों में गिरावट

गुरुवार सुबह कंबोडिया ने थाईलैंड के साथ अपने राजनयिक संबंधों को सबसे निचले स्तर पर लाने की घोषणा की। उसने थाई राजदूत को निष्कासित किया और अपने सभी स्टाफ को बैंकॉक स्थित दूतावास से वापस बुला लिया।

इतिहास में उलझा विवाद

1962 में अंतरराष्ट्रीय न्यायालय ने प्रेह विहेयर मंदिर जो एक शिव मंदिर है को कंबोडिया का हिस्सा माना था, लेकिन यह फैसला आज तक थाईलैंड को रास नहीं आया। 2011 में हुए झड़पों में करीब 20 लोग मारे गए थे और हजारों विस्थापित हुए थे। 2013 में अदालत ने एक बार फिर कंबोडिया के पक्ष में फैसला दिया, जिससे थाईलैंड में असंतोष बढ़ा। अब एक बार फिर वही पुराने जख्म हरे हो गए हैं।

संक्षिप्त खबरें

सेलोरैप का आईपीओ आज

नई दिल्ली। मुंबई स्थित निर्माण कंपनी सेलोरैप इंडस्ट्रीज का आईपीओ 25 जुलाई को खुलकर 29 जुलाई 2025 को बंद होगा। यहां जारी विज्ञप्ति में कंपनी ने बताया कि इसका लिस्टिंग प्रस्ताव 1 अगस्त 2025 को एनएसई इमर्ज प्लेटफॉर्म पर किया गया है। यह आईपीओ 36,48,000 इक्विटी शेयरों के नए निर्गम का होगा। 1983 में सुशील कुमार पोद्दार द्वारा एक प्रोपरायटरशिप फर्म के रूप में स्थापित और 2004 में एक प्राइवेट लिमिटेड कंपनी के रूप में शामिल की गई सेलोरैप इंडस्ट्रीज ने चार दशकों में स्वयं को एक विश्वसनीय निर्माता के रूप में स्थापित किया है, जो चिपकने वाले और गैर-चिपकने वाले दोनों प्रकार के प्रोसेस्ड कंपोनेंट्स बनाती है।

प्रदर्शनी मंचों का विलय

नई दिल्ली। पेपरवर्ल्ड इंडिया, कॉर्पोरेट गिफ्ट्स शो और गिफ्ट्स वर्ल्ड एक्सपो के आयोजकों ने अपने प्रदर्शनी पोर्टफोलियो के विलय की घोषणा की है। इस विलय से अब दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु और कोलकाता में अब समर्पित शो आयोजित हो सकेंगे। इस विलय से तीनों मंचों को कई शहरों में खरीदारों और वितरकों तक पहुंचने का मौका मिलेगा। इस मौके पर मेसे फ्रैंकफर्ट एशिया होल्डिंग के कार्यकारी निदेशक राज मानेक ने कहा कि एमईएक्स एक्ज़िबिशन्स के साथ हमारी निरंतर साझेदारी का उद्देश्य हमारी क्षमताओं और उद्योग की अंतर्दृष्टि को एक साथ लाकर एक राष्ट्रीय स्तर पर प्रासंगिक और क्षेत्रीय रूप से गहन पोर्टफोलियो का निर्माण करना है।

अमारा बेस फंड को अभिदान

नई दिल्ली। अमारा पार्टनर्स ने घोषणा की है कि उसे 600 करोड़ रुपये के बेस फंड के लिए अपेक्षा से अधिक निवेश प्रतिबद्धताएं प्राप्त हुई हैं। यह निवेशकों के भरोसे को दर्शाता है। इस फंड में भारत भर के प्रतिष्ठित संस्थागत परिवारों की भागीदारी रही है। इसे प्रमुख निवेशक आनंद महिंद्रा का भी समर्थन प्राप्त है। अब अमारा 200 करोड़ तक के ग्रीन शू ऑप्शन का उपयोग कर रही है। ग्रीन शू ऑप्शन के हिस्से के रूप में अमारा लीडरशिप सर्कल की शुरुआत की गई है। अमारा पार्टनर्स के फाउंडर पराग शाह ने कहा, 'हमारे बेस फंड को मिली जबरदस्त प्रतिक्रिया और ओवरसब्सक्रिप्शन से हम बेहद उत्साहित हैं।

टोरेंट का न्यूट्रिशन सप्लीमेंट

नई दिल्ली। टोरेंट फार्मास्युटिकल्स ने शेल्कल टोटल के लांच की घोषणा की है। यह एक वैज्ञानिक तरीके से तैयार किया गया वयस्कों के लिए न्यूट्रिशन सप्लीमेंट पाउडर है, जो कंपनी के प्रमुख ब्रांड शेल्कल को तेजी से बढ़ते न्यूट्रिशन सेगमेंट में आगे बढ़ा रहा है। इस ब्रांड की रेंज में समय के साथ कई उपभोक्ताओं के लिए उपयोगी इनोवेशन जोड़े गए हैं, जैसे शेल्कल प्रो गमीज़ और शेल्कल प्रो किड्स गमीज़, जो हर उम्र के लोगों और उनकी बदलती स्वास्थ्य जरूरतों को ध्यान में रखते हुए लाए गए हैं। टोरेंट फार्मा के चीफ कमर्शियल ऑफिसर (इंडिया बिज़नेस), अमल केलशिकर ने कहा, 'हमारा सप्लीमेंट पोषण की कमी को पूरा करेगा।

हिमालया के ब्रेस्टफीडिंग रूम्स

नई दिल्ली। हिमालया बेबीकेयर ने पूरे भारत में 500 से अधिक ब्रेस्टफीडिंग रूम्स की सफलतापूर्वक स्थापना की घोषणा की है, जो माताओं को अपने शिशुओं को गरिमा व सुविधा के साथ दूध पिलाने के लिए स्वच्छ और निजी स्थान प्रदान करते हैं। हिमालया वेलनेस कंपनी के बेबीकेयर डिवीजन के निदेशक चक्रवर्ती एन. वी. ने कहा कि ये ब्रेस्टफीडिंग रूम देशभर के 27 हवाईअड्डों में स्थित हैं, जिनमें मुंबई, बेंगलुरु, हैदराबाद, कोलकाता, लखनऊ, वाराणसी और गोवा जैसे प्रमुख ट्रांजिट हब शामिल हैं। प्रमुख राज्यों के 33 रेलवे स्टेशनों पर भी ये सुविधाएं उपलब्ध हैं।

आईकू का नया फोन लांच

नई दिल्ली। हाई-परफॉर्मेंस स्मार्टफोन ब्रांड आईकू ने बृहस्पतिवार को अपना नया स्मार्टफोन आईकू ज़ेड 10 आर लांच कर दिया है। यह फोन खासतौर पर उन नए जमाने केकंटेंट क्रिएटर्स के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो अपने आइडियाज़ को शानदार क्वालिटी में कैद करके दुनिया तक पहुंचाना चाहते हैं। कैमरा, परफॉर्मेंस और डिज़ाइन हर पहलू में यह फोन पूरी तरह से लोडेड है। आईकू के सीईओ निपुन मार्या ने कहा आईकूमें हमारा मानना है कि आज की युवा पीढ़ी के लिए कंटेंट बनाना खुद को अभिव्यक्त (एक्सप्रेस) करने का एक सशक्त माध्यम बन चुका है।

भारत-ब्रिटेन एफटीए से व्यापार में होगी 20 अरब डालर की वृद्धि

■ उद्योग जगत ने कहा, दुनिया की पांचवीं और छठी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच हुए इस समझौते से निकलेंगे ढेरों रोजगार

नई दिल्ली (भाषा)।

भारत और ब्रिटेन के बीच मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर बृहस्पतिवार को हस्ताक्षर होने के बाद वेदांता समूह के चेयरमैन अनिल अग्रवाल ने कहा कि इससे दोनों देशों के बीच व्यापार में कम से कम 20 अरब डॉलर की वृद्धि होगी और रोजगार के अधिक अवसरों का सृजन होगा।

दुनिया की पांचवीं और छठी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं ने बृहस्पतिवार को एक ऐतिहासिक एफटीए पर हस्ताक्षर किए। इससे सौंदर्य प्रसाधन और कपड़ों से लेकर व्हिस्की और कारों तक के शुल्क में कमी आएगी और दोनों देशों के व्यवसायों के लिए अधिक बाजार पहुंच संभव होगी। इस समझौते पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की ब्रिटेन यात्रा के दौरान हस्ताक्षर किए गए।

अग्रवाल ने कहा, 'मैं इस ऐतिहासिक समझौते के लिए प्रधानमंत्री मोदी और (ब्रिटेन के) प्रधानमंत्री (केअर) स्टार्मर को बधाई देता हूं। यह ब्रिटेन और

भारत के बीच एक बड़ी उपलब्धि है क्योंकि वे प्रगति के पथ पर अग्रसर है।' उन्होंने कहा कि यह समझौता तीन वर्षों की बातचीत के बाद हुआ है तथा इस समझौते तक पहुंचने में काफी मेहनत लगी है।

उन्होंने कहा, 'यह मुक्त व्यापार समझौता दोनों देशों के लिए फ़ायदेमंद होगा। इससे आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा और दोनों देशों में रोज़गार और उद्यमिता के नए अवसर पैदा होंगे। इससे दोनों देशों के बीच व्यापार में कम से कम 20 अरब डॉलर की वृद्धि होगी।'

बीपी इंडिया के चेयरमैन कार्तिकेय दुबे ने कहा कि भारत और ब्रिटेन के बीच समझौता नवीकरणीय ऊर्जा सहित ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग और निवेश बढ़ाने का रास्ता साफ करेगा।

उन्होंने कहा, ''ब्रिटेन-भारत एफटीए दो साझेदार देशों के बीच व्यापार संबंधों को बढ़ाने की दिशा में एक बड़ा कदम है। इससे न सिर्फवस्तुओं और सेवाओं का व्यापार आसान होगा, बल्कि प्रतिभा और विशेषज्ञता का निर्बाध प्रवाह भी संभव होगा। ऊर्जा क्षेत्र में, इससे नवीकरणीय ऊर्जा सहित अन्य सहयोग और निवेश को बढ़ावा मिलेगा।'

मारुति का वाहन निर्यात जून तिमाही में 96 हजार इकाई के पार

नई दिल्ली (भाषा)।

वाहन विनिर्माता कंपनी मारुति सुजुकी इंडिया (एमएसआई) ने चालू वित्त वर्ष की अप्रैल-जून तिमाही में 96,000 से ज़्यादा गाड़ियों का निर्यात किया है।

कंपनी ने बृहस्पतिवार को बताया कि उसका मॉडल फ्रॉन्क्स भारत से सबसे तेजी से एक लाख इकाई के निर्यात को पार करने वाला स्पोर्ट्स यूटिलिटी वाहन (एसयूवी) बन गया है। अप्रैल-जून तिमाही में भारत से यात्री वाहन निर्यात में मारुति सुजुकी की हिस्सेदारी 47 प्रतिशत रही। कंपनी वर्तमान में लगभग 100 देशों को 17 मॉडल का निर्यात करती है। पिछले वित्त वर्ष (2024-25) में कंपनी का निर्यात 3.3 लाख इकाइयों को पार कर गया, जो किसी भी वित्त वर्ष में अबतक का सबसे ऊंचा आंकड़ा है।

ब्रिटेन को जेनेरिक दवाओं के निर्यात में होगी बढ़ोतरी

■ एफटीए से चिकित्सा उपकरणों का निर्यात भी बढ़ेगा

नई दिल्ली (भाषा)।

ब्रिटेन के मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) के तहत शून्य शुल्क पर सहमति के बाद भारत के जेनेरिक दवाओं और चिकित्सकीय उपकरणों जैसे एक्स-रे सिस्टम और सर्जिकल उपकरणों के निर्यात को बड़ा बढ़ावा मिलेगा। वाणिज्य मंत्रालय के एक अधिकारी ने कहा, 'सर्जिकल उपकरण, जांच में उपयोग (डायग्नोस्टिक) वाले उपकरण, ईसीजी मशीन, एक्स-रे सिस्टम जैसे चिकित्सकीय उपकरणों के एक बड़े हिस्से पर कोई शुल्क नहीं लगेगा।'

उन्होंने कहा कि इससे भारतीय चिकित्सकीय-प्रौद्योगिकी कंपनियों की लागत कम होगी और उनके उत्पाद ब्रिटेन के बाजार में अधिक प्रतिस्पर्धी बनेंगे। अधिकारी ने कहा, 'यूरोपीय संघ छोड़ने (ब्रेक्जिट) और कोविड-19 वैश्विक महामारी के बाद ब्रिटेन के चीनी आयात पर निर्भरता से दूर होने के मद्देनजर भारतीय विनिर्माता एक पसंदीदा, लागत प्रभावी विकल्प बनने के लिए तैयार है खासकर चिकित्सकीय उपकरणों के लिए शून्य-शुल्क मूल्य निर्धारण के साथ।' मंत्रालय ने कहा कि एफटीए के तहत शून्य शुल्क प्रावधानों से ब्रिटेन के बाजार में भारतीय जेनेरिक दवाओं की प्रतिस्पर्धात्मकता में उल्लेखनीय वृद्धि होने की उम्मीद है, जो यूरोप में भारत का सबसे बड़ा दवा निर्यात गंतव्य बना हुआ है।

भारत वैश्विक स्तर पर दवा क्षेत्र के तहत 23.31 अरब अमेरिकी डॉलर का निर्यात करता है और ब्रिटेन करीब 30 अरब अमेरिकी डॉलर का आयात करता है। हालांकि, ब्रिटेन के आयात में भारतीय दवा क्षेत्र का योगदान एक अरब डॉलर से कम है, जो विकास की पर्याप्त गुंजाइश दर्शाता है। दस्तावेज के अनुसार, दवा क्षेत्र में केवल 56 शुल्क श्रेणियां है, जो कुल शुल्क श्रेणियों का केवल 0.6 प्रतिशत है। इसके बावजूद दवा क्षेत्र आमतौर पर खासकर वैश्विक व्यापार में उच्च मूल्य और रणनीतिक महत्व रखता है।

भारतीय दवा उद्योग मात्रा के हिसाब से दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा और मूल्य के मामले में 14वां सबसे बड़ा उद्योग है। वित्त वर्ष 2024-25 में भारतीय दवा निर्यात सालाना आधार पर 10 प्रतिशत बढ़कर 30.5 अरब अमेरिकी डॉलर हो गया।

यह उद्योग पिछले 30 वर्षों में प्रतिस्पर्धी कीमतों पर उच्च गुणवत्ता वाली जेनेरिक दवाएं बनाने में अग्रणी बन गया है। भारत जेनेरिक दवाओं का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता है। इसकी वैश्विक आपूर्ति में 20 प्रतिशत हिस्सेदारी है और यह 60 चिकित्सीय श्रेणियों में 60,000 विभिन्न जेनेरिक ब्रांड पर काम कर रहा है।

भारतीय उत्पाद दुनियाभर के 200 से अधिक देशों में भेजे जाते है, जिनमें जापान, ऑस्ट्रेलिया, पश्चिमी यूरोप और अमेरिका मुख्य गंतव्य है। भारत में चिकित्सकीय उपकरण क्षेत्र का वर्तमान बाजार आकार 11 अरब अमेरिकी डॉलर होने का अनुमान है और 2030 तक इसके 50 अरब डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद है।

ब्रिटेन को इंजीनियरिंग वस्तुओं का निर्यात बढ़ेगा

नई दिल्ली (भाषा)।

भारत और ब्रिटेन के बीच बृहस्पतिवार को संपन्न एफटीए में इंजीनियरिंग वस्तुओं पर सीमा शुल्क को 18 प्रतिशत से घटाकर शून्य कर दिया गया है, जिससे इनका निर्यात अधिक प्रतिस्पर्धी हो जाएगा।

वाणिज्य मंत्रालय के एक अधिकारी ने कहा कि इस एफटीए के तहत शुल्क को समाप्त करने के साथ ब्रिटेन को इंजीनियरिंग उपकरणों का निर्यात अगले पांच वर्ष में लगभग दोगुना हो सकता है, जो 2029-30 तक 7.5 अरब डॉलर से अधिक हो जाएगा। ब्रिटेन, भारत का छठा सबसे बड़ा इंजीनियरिंग निर्यात बाजार है। ब्रिटेन के साथ व्यापार में वित्त वर्ष 2024-25 के दौरान सालाना आधार पर 11.7 प्रतिशत की मजबूत वृद्धि देखी गई।

पूर्व वित्त सचिव अजय सेठ इरडा के चेयरमैन नियुक्त

नई दिल्ली (भाषा)।

सरकार ने बृहस्पतिवार को वित्त एवं आर्थिक मामलों के विभाग के पूर्व सचिव अजय सेठ को भारतीय बीमा नियामक एवं विकास प्राधिकरण (इरडा) का चेयरमैन नियुक्त किया। एक सरकारी अधिसूचना में कहा गया है कि मंत्रिमंडल की नियुक्ति समिति ने बीमा नियामक के चेयरमैन के रूप में सेठ की नियुक्ति को तीन साल की अवधि या 65 वर्ष की आयु प्राप्त करने तक या अगले आदेश तक, जो भी पहले हो, तक के लिए मंजूरी दे दी है।

कर्नाटक कैडर के 1987 बैच के भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के अधिकारी सेठ, चार साल के कार्यकाल के बाद इस साल जून में आर्थिक मामलों के सचिव के पद से सेवानिवृत्त हुए थे। देबाशीष पांडा के इस साल मार्च में कार्यकाल पूरा होने के बाद लगभग चार महीने पश्चात इरडा के चेयरमैन की नियुक्ति हुई है। नियामकों की नियुक्ति की प्रक्रिया के अनुसार, मंत्रिमंडल सचिव की अध्यक्षता वाली वित्तीय क्षेत्र नियामक नियुक्ति खोज समिति नाम का सुझाव देती है। पात्र उम्मीदवारों के साथ बातचीत के आधार पर, समिति अंतिम मंजूरी के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता वाली मंत्रिमंडल की नियुक्ति समिति को नाम की सिफारिश करती है।

देश के बाजारों में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है गेहूं

■ सरकार ने कहा, सरकारी भंडार से गेहूं जारी करने की अभी कोई जरूरत नहीं

नई दिल्ली (भाषा)।

खाद्य सचिव संजीव चोपड़ा ने बृहस्पतिवार को कहा कि खुला बाजार हस्तक्षेप योजना के तहत सरकारी भंडार से गेहूं बेचने की कोई जरूरत नहीं है, क्योंकि आपूर्ति पर्याप्त है और कीमतें स्थिर है।

सरकार, भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) द्वारा प्रबंधित केंद्रीय पूल से अधिशेष भंडार को पूर्व निर्धारित आरक्षित मूल्य पर सीधे बाजार में बेचकर गेहूं की आपूर्ति और कीमतों को विनियमित करने के लिए खुला बाजार बिक्री योजना (ओएमएसएस) का संचालन करती है।

चोपड़ा ने भारतीय वनस्पति तेल उत्पादक संघ (आईवीपीए) की वैश्विक गोलमेज बैठक से इतर पत्रकारों से कहा, 'पर्याप्त भंडार मौजूद है। हमने काफी अच्छी मात्रा में खरीद की है। इसलिए बाजार में पर्याप्त आपूर्ति है। कीमतें पहले से ही स्थिर है। इसलिए (गेहूं ओएमएसएस) की कोई जरूरत नही है।' भारत ने वित्त वर्ष 2024-25 में ओएमएसएस के तहत करीब 30 लाख टन गेहूं बेचा, जबकि 2023-24 में करीब 1.01

करोड़ टन गेहूं की बिक्री की गई थी। देश का गेहूं उत्पादन फसल वर्ष 2024-25 में रिकॉर्ड 11.75 करोड़ टन रहने का अनुमान है।

ओएमएसएस के माध्यम से चावल की बिक्री के बारे में चोपड़ा ने कहा कि सरकार 50 लाख टन चावल की बिक्री कर रही है, जिससे पंजाब, छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश और हरियाणा सहित चार-पांच राज्यों में टूटे चावल की मात्रा 25 प्रतिशत से घटकर 10 प्रतिशत रह जाएगी। इसका उद्देश्य 100 प्रतिशत टूटे चावल में से 15 प्रतिशत चावल 'डिस्टिलरी' और अन्य को बेचना है, जबकि शेष 10 प्रतिशत टूटे चावल की नीलामी निजी व्यापारियों को की जाएगी।

चोपड़ा ने बिक्री लक्ष्य को आसानी से हासिल करने का विश्वास व्यक्त करते हुए कहा , 'यह बिक्री घरेलू बाजार के लिए है। मिलें 15 प्रतिशत टूटे चावल को अलग करने के लिए तैयार है। अब तक की प्रतिक्रिया अच्छी रही है।' टूटा चावल फिलहाल निजी कंपनियों को बेचा जा रहा है और शायद अगले चरण में हम सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) को भी शामिल करेंगे।'

दूरसंचार नीति के मसौदे में 10 लाख नौकरियां देने का लक्ष्य

नई दिल्ली (भाषा)।

राष्ट्रीय दूरसंचार नीति (एनटीपी) का लक्ष्य 2030 तक एक लाख करोड़ रुपये का वार्षिक निवेश आकर्षित करना और 10 लाख नए रोजगार के अवसर सृजित करना है। दूरसंचार विभाग द्वारा जारी दस्तावेजों के मसौदे में यह कहा गया है।

मसौदा नीति का उद्देश्य 5जी और 6जी, कृत्रिम मेधा (एआई), इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) और क्वांटम संचार जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों में नवोन्मेषण और अनुसंधान के लिए भारत को शीर्ष 10 वैश्विक केंद्रों में शामिल करना है। बृहस्पतिवार को जारी नीति के मसौदा दस्तावेज के अनुसार, 'एनटीपी-25 का लक्ष्य 2030 तक दूरसंचार क्षेत्र में विभिन्न रणनीतिक उद्देश्यों को पूरा करना है। इनमें सभी के लिए सार्वभौमिक और सार्थक संपर्क, भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में इस क्षेत्र का योगदान दोगुना करना और एक लाख करोड़ रुपये का वार्षिक निवेश प्राप्त करना है।'

दूरसंचार विभाग ने परिपत्र जारी होने की तिथि से 21 दिन के भीतर प्रस्तावित नीति पर जनता से टिप्पणियां आमंत्रित की है। इस नीति का उद्देश्य भारत को न केवल डिजिटल प्रौद्योगिकियों का अग्रणी उपभोक्ता बनाना, बल्कि दूरसंचार उत्पादों, सेवाओं और समाधान का एक विश्वसनीय वैश्विक प्रदाता भी बनाना है।

दस्तावेज के अनुसार एनटीपी-25 भारत को दुनिया के लिए दूरसंचार उत्पादों का पसंदीदा विनिर्माता बनाने के लिए काम करेगी। यह स्मार्ट शहरों, उद्योग 4.0, ग्रामीण ब्रॉडबैंड, आपातकालीन प्रतिक्रिया और डिजिटल कामकाज में उभरते उपयोग के मामलों को स्थायी रूप से समर्थन देने के लिए अनुसंधान, कार्यबल के कौशल विकास, बुनियादी ढांचे के आधुनिकीकरण और प्रभावी स्पेक्ट्रम प्रबंधन में निवेश के लिए एक व्यापक खाका पेश करती है।'

इस नीति का उद्देश्य दूरसंचार उत्पादों और सेवाओं के निर्यात, दूरसंचार स्टार्टअप की संख्या और उभरती दूरसंचार प्रौद्योगिकियों पर क्षेत्रीय अनुसंधान एवं विकास (आरएंडडी) खर्च को दोगुना करना है।

इसने एक नवाचार-केंद्रित गैर-लाभकारी कंपनी बनाने और 2030 तक 6जी-संबंधित बौद्धिक संपदा अधिकारों (आईपीआर) में 10 प्रतिशत वैश्विक हिस्सेदारी हासिल करने का लक्ष्य रखा है।

बिकवाली से सेंसेक्स 543 अंक लुढ़का

मुंबई (भाषा)। स्थानीय शेयर बाजार में बृहस्पतिवार को गिरावट आई और बीएसई सेंसेक्स 543 अंक लुढ़क गया। मुख्य रूप से प्रमुख कंपनियों के शेयरों में मुनाफावसूली और विदेशी संस्थागत निवेशकों की पूंजी निकासी जारी रहने से बाजार में गिरावट आई। सकारात्मक शुरुआत के बावजूद 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स इस गति को बनाये नहीं रख सका और बाद में इसमें गिरावट आई। सेंसेक्स 542.47 अंक यानी 0.66 प्रतिशत की गिरावट के साथ 82,184.17 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान, एक समय यह 679.42 अंक तक लुढ़क गया था। पचास शेयरों वाला एनएसई निफ्टी भी 157.80 अंक यानी 0.63 प्रतिशत की गिरावट के साथ 25,062.10 अंक पर बंद हुआ।

सेंसेक्स की कंपनियों में ट्रेंट, टेक महिंद्रा, बजाज फिनसर्व, रिलायंस इंडस्ट्रीज, इन्फोसिस, कोटक महिंद्रा बैंक, एचसीएल टेक्नोलॉजीज और एनटीपीसी प्रमुख रूप से नुकसान में रहीं। दूसरी तरफ, लाभ में रहने वाले शेयरों में इटर्नल (पूर्व में जोमैटो), टाटा मोटर्स, सन फार्मा, टाटा स्टील और टाइटन शामिल है। इन्फोसिस के शेयर में एक प्रतिशत की गिरावट आई। जून तिमाही के वित्तीय परिणाम के बाद कंपनी के शेयर में मुनाफावसूली का सिलसिला चला।

एशिया के अन्य बाजारों में, दक्षिण कोरिया का कॉस्पी, जापान का निक्की, चीन का शंघाई कम्पोजिट और हांगकांग का हैंगसेंग सकारात्मक दायरे में बंद हुए। यूरोप के प्रमुख बाजारों में दोपहर के कारोबार में तेजी का रुख रहा। बुधवार को अमेरिकी बाजार बढ़त के साथ बंद हुए।

भारत और ब्रिटेन ने बृहस्पतिवार को मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर हस्ताक्षर किए। इससे ब्रिटेन की व्हिस्की, कार और कई वस्तुओं पर शुल्क में कटौती होगी।

एसबीआई कार्ड और फोनपे ने का करार

नई दिल्ली (एजेंसी)।

एसबीआई कार्ड ने फोनपे के साथ मिलकर फोनपे एसबीआई कार्ड लांच किया है। यह जानकारी एमडी एवं सीईओ, एसबीआई कार्ड, सलिला पांडे ने दी। उन्होंने कहा कि इस नए को-ब्रांडेड क्रेडिट कार्ड का लक्ष्य रोज़मर्रा के खर्चों पर एक फायदेमंद अनुभव देना है।

उन्होंने कहा कि यह क्रेडिट कार्ड दो वेरिएंट में फोनपे एसबीआई कार्ड पर्पल और फोनपे एसबीआई कार्ड सेलेक्ट ब्लैक, आता है। इस कॉन्टैक्टलेस क्रेडिट कार्ड के दोनों वेरिएंट रूपे और वीजा पेमेंट नेटवर्क पर उपलब्ध है, जिससे उपभोक्ताओं को उनकी ज़रूरतों के हिसाब से सबसे अच्छा नेटवर्क चुनने का विकल्प मिलता है।

केनरा एचएसबीसी लाइफ का नया बीमा प्लान जारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। केनरा एचएसबीसी लाइफ इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड ने अपने नए उत्पाद 'सिक्योरइन्वेस्ट' को लांच करने की घोषणा की है। यह एक नॉन-पार्टिसिपेटिंग, यूनिट लिंक्ड इंडीविजुअल लाइफ इंश्योरेंस सेविंग प्लान है। सिक्योरइन्वेस्ट वार्षिक प्रीमियम के 100 गुना तक उच्च लाइफ कवर को बाजार से जुड़े विकास की संभावना के साथ जोड़ता है। केनरा एचएसबीसी के चीफ मार्केटिंग आफिसर ऋषि माथुर ने कहा, 'इस प्लान में कई कंज्यूमर-फ्रेंडली फीचर्स है। पॉलिसीधारकों को उनकी दीर्घकालिक प्रतिबद्धता के लिए 10वें पॉलिसी वर्ष के अंत से शुरू होने वाले लॉयल्टी एडिशन और उसके बाद हर 5वें वर्ष में आवर्ती, साथ ही पॉलिसी अवधि के अंत में मैच्योरिटी बूस्टर्स के साथ पुरस्कृत किया जाता है।

इसके अलावा पॉलिसीधारक चुकाये गये प्रीमियम और प्राप्त लाभों पर टैक्स के लागू कानूनों के अनुसार टैक्स लाभ भी प्राप्त कर सकते है। सिक्योरइन्वेस्ट दो योजना विकल्पों के साथ आता है। इसमें सिक्योरइन्वेस्ट चॉइस पॉलिसी अवधि के दौरान लाइफ कवर प्रदान करता है औरपरिपक्वता पर संचित फंड मूल्य देता है। इसके अलावा दूसरा प्लान सिक्योरइन्वेस्ट फॉरएवर 85 वर्ष की आयु तक के लोगों को बीमा सुरक्षा प्रदान करता है।

ईटीएफ-इंडेक्स फंड में निवेश से हर भारतीय के लिए खुला नया रास्ता

नई दिल्ली (एसएनबी)। पिछले कुछ वर्षों में भारत के निवेश परिदृश्य में एक स्थिर लेकिन गहरा परिवर्तन देखने को मिला है। जून 2025 तक, एएमएफआई की ताज़ा रिपोर्ट के अनुसार, निवेशकों का 12 लाख करोड़ से अधिक का एयूएम निष्क्रिय फंडों में है। यह स्थिति महीने-दर-महीने 3% की वृद्धि दर्शाती है और कुल म्यूचुअल फंड उद्योग के एयूएम का लगभग 17% हिस्सा है। यह सिर्फ एक आँकड़ा नहीं, बल्कि इस बात का संकेत है कि भारत में निवेश और धन सृजन के प्रति दृष्टिकोण किस प्रकार से बदल रहा है। यह जानकारी वंदना त्रिवेदी, हैड इंस्टीट्यूशनल बिज़नेस और पैसिव्स, एक्सिस एएमसी ने दी।

पहले जो पैसिव निवेश रणनीतियाँ सीमित या पूरक मानी जाती थीं, वे अब निवेशकों के पोर्टफोलियो का एक मुख्य हिस्सा बनती जा रही है। इसकी लोकप्रियता का मुख्य कारण है: सरलता, पारदर्शिता और लागत प्रभावशीलता, जो आज के नए निवेशकों के साथ गहराई से जुड़ती है। भारत में पैसिव निवेश की यात्रा धीमी लेकिन अहम रही है। 2010 के दशक की शुरुआत में, ईटीएफ और इंडेक्स फंड खुदरा निवेशकों के लिए लगभग अनजाने थे। उस समय उत्पादों की सीमित उपलब्धता (मुख्यतः निफ्टी 50 और बीएससी सेंसेक्स आधारित), पैसिव निवेश को लेकर जागरूकता की कमी और पारंपरिक एक्टिव फंड्स की प्राथमिकता के कारण पैसिव फंड मुख्यधारा से बाहर थे।

सरकार द्वारा ईटीएफ के ज़रिए विनिवेश और ईपीएफओ द्वारा इक्विटी ईटीएफ में निवेश का निर्णय इस बदलाव में अहम रहे। साथ ही, सेबी द्वारा बनाये गये दिशानिर्देशों ने पैसिव फंड्स को सरल और अधिक पारदर्शी बना दिया। नतीजन आज म्यूचुअल फंड कंपनियाँ कई प्रकार के पैसिव फंड्स पेश कर रही है। साथ ही, फिनटेक प्लेटफॉर्म के उदय ने इन उत्पादों तक पहुँच को लोकतांत्रिक बना दिया। निवेशक अब ऐप्स के माध्यम से ईटीएफ और इंडेक्स फंड आसानी से खरीद और ट्रैक कर सकते है, जिससे निवेश अधिक सुलभ और उपयोगकर्ता के अनुकूल हो गया है। नियामकीय सहायता, संस्थागत भागीदारी, परिसंपत्ति प्रबंधन उद्योग द्वारा निवेशकों को निष्क्रिय निवेश के बारे में शिक्षित करने के प्रयासों और तकनीकी नवाचार के इस संगम ने निष्क्रिय फंडों को विशिष्ट पेशकशों से मुख्यधारा के निवेश विकल्पों की ओर प्रेरित किया है।

इन बदलावों के अलावा, पैसिव फंड्स की सबसे बड़ी ताकत है इनकी कम लागत। ईटीएफ और इंडेक्स फंड्स के खर्च अनुपात कई अन्य विकल्पों की तुलना में बहुत कम होते है, जिससे वे लागत-संवेदनशील निवेशकों के लिए आदर्श बन जाते है। निवेशकों की परिपक्वता भी एक अहम कारक रही है। भारतीय निवेशक अब दीर्घकालिक संपत्ति निर्माण, विविधता, और बार-बार ट्रेडिंग या बाज़ार के समय को लेकर जोखिम के प्रति अधिक सजग हो गए है। पैसिव फंड्स इन सभी ज़रूरतों को अपने डिज़ाइन में ही समाहित करते है संपूर्ण बाज़ार में निवेश, कम जोखिम, और स्थिरता। डिजिटल क्रांति ने निवेश की प्रक्रिया को और सरल बना दिया है। सैशे इन्वेस्टिंग यानी छोटी-छोटी राशि के जरिये, पैसिव फंड्स में सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान के सहारे छोटे, नियमित निवेश। इस तरह नए निवेशकों के लिए निवेश की दुनिया में प्रवेश अब बहुत आसान हो गया है। अब यह निवेश केवल महानगरों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि टियर-2 और टियर-3 शहरों तक भी पहुँच गया है। अब पैसिव निवेश केवल ब्रॉड मार्केट इंडेक्स तक सीमित नहीं है।

पियाजियो आपे की नई ईवी रेंज

पुणे (एजेंसी)।

पियाजियो व्हीकल्स ने बृहस्पतिवार को अपनी नई 2025 आपे इलेक्ट्रिक ईवी रेंज लांच की, जिसमें दो नए मॉडलों आपे ई-सिटी अल्ट्रा और आपे ई-सिटी एफएक्स मैक्स को शामिल किया गया है।

कंपनी ने कहा कि ये इलेक्ट्रिक थ्री-व्हीलर, यात्री वाहन श्रृंखला को और मजबूती देते है। इस अवसर पर पियाजियो व्हीकल्स प्रा. लि. के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर डिएगो ग्राफ़ी ने कहा, 'भारत तेजी से इलेक्ट्रिक मोबिलिटी की ओर अग्रसर है। एक्जीक्यूटिव वाइस प्रेसिडेंट अमित सागर ने कहा, 'इलेक्ट्रिक थ्री-व्हीलर यात्री वाहन क्षेत्र तेज़ी से आगे बढ़ रहा है।

संक्षिप्त समाचार

बारिश और बाढ़ से मरने वालों की संख्या 223 हुई

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान के राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) ने मंगलवार को बताया कि पिछले 24 घंटों में बारह और लोगों की मौत के साथ ही पाकिस्तान में बारिश से जुड़ी घटनाओं में मरने वालों की संख्या 223 हो गई है। एनडीएमए के अनुसार, पिछले 24 घंटों में बारिश से जुड़ी घटनाओं में दो पुरुष, इतनी ही महिलाएं और आठ बच्चे मारे गए हैं, जबकि दस अन्य घायल हुए हैं। इस मानसून सीजन में भारी बारिश के कारण हुई दुर्घटनाओं में अब तक 594 लोग घायल हुए हैं। पंजाब सबसे ज्यादा प्रभावित प्रांत रहा, जहां 135 लोगों की मौत हुई है और 470 लोग घायल हुए हैं। खैबर पख्तूनख्वा में 56 लोगों की मौत हुई है और 71 लोग घायल हुए हैं। सिंध में 24 लोगों के हताहत होने और 40 के घायल होने की खबर है। बलूचिस्तान में 16 लोगों की मौत की पुष्टि हुई है, जबकि पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में एक व्यक्ति की मौत हुई है और छह लोग घायल हुए हैं। पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर के गिलगित-बाल्टिस्तान क्षेत्र में तीन गैर-घातक मौतें हुईं, जबकि इस्लामाबाद में एक व्यक्ति की मौत हुई। ज्यादातर मौतें इमारतों के ढहने, डूबने, भूस्खलन, अचानक बाढ़, बिजली गिरने और बिजली का झटका लगने से हुई हैं।

रूस की पहली महिला चीफ जस्टिस इरिना पोदनोसोवा का निधन

मास्को, एजेंसी। रूस की पहली महिला मुख्य न्यायाधीश इरिना पोदनोसोवा का मंगलवार को निधन हो गया। वह 71 वर्ष की थीं और कैंसर से जूझ रही थीं। पोदनोसोवा को उनके पूर्ववर्ती जस्टिस व्याचेलाव लेबेदेव के निधन के बाद अप्रैल 2024 में सर्वसम्मति से रूसी संघ के सर्वोच्च न्यायालय का चीफ जस्टिस चुना गया था। जस्टिस लेबेदेव 1989 से फरवरी 2024 में अपने निधन तक मुख्य न्यायाधीश रहे।

जिम्बाब्वे में सड़क हादसे में17 लोगों की मौत

हरारे, एजेंसी। जिम्बाब्वे के उत्तरपूर्व में राजधानी हरारे से लगभग 25 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व में घनी आबादी वाले शहर चिटुंगविजा के पास मंगलवार को भीषण सड़क हादसा हो गया। यहां एक मिनीबस टैक्सी और एक मालवाहक ट्रक के बीच हुई आमने-सामने की टक्कर में 17 लोगों की मौत हो गई। हादसे के बारे में पुलिस प्रवक्ता पॉल न्याथी ने बताया कि कुछ पैदल यात्रियों सहित सभी 17 पीड़ितों की दुर्घटना स्थल पर ही मौत हो गई। उन्होंने बताया कि ये हादसा तब हुआ जब ट्रक चालक के नियंत्रण खो देने के बाद ट्रक विपरीत लेन में घुस गया और मिनी बस से टकरा गया। उन्होंने बताया कि टक्कर से पहले ट्रक ने फुटपाथ पर जा रहे दो पैदल यात्रियों को टक्कर मार दी। उन्होंने बताया कि मिनी बस में सवार 17 यात्रियों में से 15 की तत्काल मृत्यु हो गई, जबकि अन्य घायल हो गए, जिन्हें अस्पताल ले जाया गया।

इमरान खान की पार्टी के 7 नेताओं को10 साल की जेल

इस्लामाबाद, एजेंसी। पूर्व पीएम इमरान खान की पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ पार्टी के सात प्रमुख नेताओं को मंगलवार को नौ मई 2023 के दंगों के मामलों में 10 साल कैद की सजा सुनाई गई। लाहौर की आतंकवाद निरोधी अदालत (एटीसी) ने सीनेटर एजाज चौधरी, पंजाब के पूर्व गवर्नर सरफराज चीमा, पूर्व प्रांतीय मंत्रियों यास्मीन राशिद और महमूदुर राशिद, और वकील अज़ीम पाहट को 9 मई, 2023 के शारपाओ ब्रिज दंगों से संबंधित मामले में 10-10 साल की सजा सुनाई है। ये सभी नेता आतंकवाद के आरोपों के तहत 9 मई के कई मामलों का सामना कर रहे हैं।

अमेरिका- कोर्ट ने न्यू जर्सी के हिरासत केंद्र पर रोक लगाने वाले कानून को रद्द किया

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका की एक अपीलीय कोर्ट ने मंगलवार को न्यू जर्सी राज्य के उस कानून को रद्द कर दिया, जो निजी कंपनियों को संघीय सरकार के साथ आव्रजन हिरासत केंद्र चलाने का अनुबंध करने से रोकता था। इस फैसले के बाद कंपनी कोरसीविक कॉर्पोरेशन अब न्यू जर्सी के एलिजाबेथ हिरासत केंद्र का संचालन जारी रख सकेगी। यह फैसला अमेरिका में प्रवासियों पर कार्रवाई तेज करने की ट्रंप प्रशासन की कोशिशों के लिए एक बड़ी जीत माना जा रहा है, जिसमें हिरासत केंद्रों का नेटवर्क बढ़ाना भी शामिल है। जस्टिस स्टेफानोस बिबास ने कहा, जैसे राज्यों को संघीय सरकार पर सीधे नियंत्रण का अधिकार नहीं है, वैसे ही वह निजी कंपनियों पर भी ऐसा नियम नहीं बना सकते जो संघीय कामकाज को बाधित करे। उन्होंने कहा कि यह कानून संघीय सरकार की आव्रजन कानून लागू करने की मूल शक्ति में दखल देता है। इस कानून पर साल 2021 में न्यू जर्सी के गवर्नर फिल मर्फी ने हस्ताक्षर किए थे, जिसमें कोरसीविक कॉर्पोरेशन को इमिग्रेशन एंड कस्टम्स एनफोर्समेंट (आईसीई) के साथ अपना अनुबंध नवीनीकृत करने से रोका गया था। कंपनी ने इस कानून को अदालत में चुनौती दी थी और निचली अदालत ने उसके पक्ष में फैसला दिया था। राज्य सरकार ने उस फैसले के खिलाफ अपील की थी, जिसे अब तीसरे सर्किट कोर्ट ने खारिज कर दिया है।

आप लोग अकेले नहीं हैं, इमरान खान के बेटों से मिले ट्रंप के करीबी सहयोगी; रिहाई की मांग

कैलिफोर्निया, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के विशेष दूत रिचर्ड ग्रेनेल ने मंगलवार को कैलिफोर्निया में पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के संस्थापक और पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के बेटों, सुलेमान ईसा खान और कासिम खान से मुलाकात की। इस मुलाकात में ग्रेनेल ने इमरान खान की रिहाई की मांग को दोहराया और उनकी गिरफ्तारी को राजनीतिक उत्पीड़न करार दिया। ग्रेनेल ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ङ्क पर सुलेमान और कासिम के साथ एक तस्वीर शेयर करते हुए लिखा, कैलिफोर्निया में आपका स्वागत है, मेरे दोस्तों। आज आपके साथ समय बिताकर बहुत अच्छा लगा। सुलैमान और कासिम खान आपको मजबूत रहना होगा। दुनिया भर में लाखों लोग राजनीतिक उत्पीड़न से तंग आ चुके हैं। आप अकेले नहीं हैं।

क्यों खास मानी जा रहा मुलाकात : यह मुलाकात ऐसे समय में हुई है जब इमरान खान की जेल में हिरासत की स्थिति को लेकर पीटीआई नेता और मानवाधिकार कार्यकर्ता लगातार आलोचना कर रहे हैं। खान अगस्त 2023 से रावलपिंडी की अदियाला जेल में बंद हैं, जहां उन्हें 14 साल की सजा सुनाई गई है। उनके खिलाफ भ्रष्टाचार और राज्य के रहस्यों के दुरुपयोग सहित 100 से अधिक आरोप हैं, जिन्हें वे और उनकी पार्टी राजनीतिक रूप से प्रेरित बताते हैं। ग्रेनेल ने पहले भी इमरान खान का समर्थन किया है। ट्रंप के चुनाव अभियान के दौरान न्यूजमैक्स को दिए एक इंटरव्यू में, उन्होंने कहा था कि ट्रंप प्रशासन के दौरान इमरान खान के नेतृत्व में अमेरिका-पाकिस्तान संबंध बेहतर थे। उन्होंने इमरान खान को एक व्यक्ति बताया था जो सामान्य भाषा में बात करता था और ट्रंप के साथ उनका अच्छा रिश्ता था। ग्रेनेल ने खान की कानूनी चुनौतियों को ट्रंप के सामने आई कानूनी चुनौतियों से तुलना की।

जेल की स्थिति पर चिंता : पीटीआई के केंद्रीय सूचना सचिव शेख वक्कास अकरम ने हाल ही में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में दावा किया कि इमरान खान को मृत्यु कक्ष में रखा गया है, जहां उन्हें किताबें, टेलीविजन या समाचार पत्र तक की पहुंच नहीं है। उन्होंने कहा कि एक पूर्व प्रधानमंत्री होने के बावजूद, खान को सामान्य कैदियों के बुनियादी अधिकारों से भी वंचित किया जा रहा है, जो एक गंभीर चिंता का विषय है। इमरान खान के बेटों, कासिम और सुलेमान, ने भी अपने पिता की जेल की स्थिति को अमानवीय बताया है। मई 2025 में, उन्होंने एक इंटरव्यू में कहा कि उनके पिता को एक उच्च-सुरक्षा कक्ष में पूरी तरह से अलग-थलग रखा गया है, जिसे उन्होंने मृत्यु कक्ष कहा। उन्होंने डोनाल्ड ट्रंप और अन्य वैश्विक नेताओं से अपने पिता की रिहाई के लिए हस्तक्षेप करने की अपील की थी। इमरान खान और ट्रंप का रिश्ता इमरान खान और डोनाल्ड ट्रंप के बीच 2019 और 2020 में कई मुलाकातें हुई थीं, जिनमें जुलाई 2019 में वाशिंगटन डीसी में और जनवरी 2020 में दावोस में हुई बैठकें शामिल हैं। ट्रंप ने खान को लोकप्रिय और महान एथलीट कहकर उनकी तारीफ की थी। दोनों नेताओं ने अफगानिस्तान में शांति प्रक्रिया और कश्मीर पर भी चर्चा की थी, जिसमें ट्रंप ने मध्यस्थता की पेशकश भी की थी। ग्रेनेल की टिप्पणियों को पीटीआई समर्थकों के बीच उत्साह के साथ देखा गया है, खासकर अमेरिका में रहने वाले पाकिस्तानी डायस्पोरा के बीच, जो खान की रिहाई के लिए अभियान चला रहे हैं। हालांकि, पाकिस्तानी सरकार ने इन टिप्पणियों को खारिज करते हुए इसे आंतरिक मामला बताया है। सत्तारूढ़ पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज के सीनेटर तलाल चौधरी ने कहा कि खान के खिलाफ भ्रष्टाचार और संवैधानिक उल्लंघन के आरोप हैं, और उनकी रिहाई की संभावना नहीं है। इसके अलावा, खान की पूर्व पत्नी जेमिमा गोल्डस्मिथ ने भी पिछले साल अक्टूबर में खान की जेल की स्थिति की निंदा की थी, जिसमें उन्होंने दावा किया था कि उनकी बिजली काट दी गई थी और उन्हें वकीलों और परिवार से मिलने से रोका गया था।

एडिलेड में भारतीय व्यक्ति पर जानलेवा हमला, संदिग्ध नस्लवादी लोगों ने गालियां भी दीं

एडिलेड, एजेंसी। ऑस्ट्रेलिया के एडिलेड में सड़क पर

एक भारतीय युवक पर जानलेवा हमला किया गया और फिर उसे वहीं बेहोशी की हालत में मरने के लिए छोड़ दिया गया। युवक की पहचान चरणप्रीत सिंह के रूप में हुई है। बताया जा रहा है कि कार पार्किंग को लेकर विवाद हुआ, जिसके बाद कुछ लोगो ने उनके खिलाफ नस्लीय टिप्पणियां कीं और मारपीट की।ऑस्ट्रेलियाई मीडिया रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई।

चैनल 9न्यूज की रिपोर्ट के मुताबिक, हमले से पहले सिंह से कहा गया, यहां से भाग जा, इंडियन और फिर उस पर लगातार घूंसे बरसाए गए। घटना शनिवार रात (स्थानीय समय अनुसार) शहर के केंद्र में स्थित किंटोर एवेन्यू के पास हुई। चरणप्रीत सिंह (23 वर्षीय) अपनी कार में था, तभी कुछ लोगों का एक समूह उसके पास आया, नस्लवादी बातें करने लगे लगे और बिना किसी उकसावे के उस पर हमला कर दिया। हमले में चरणप्रीत को गंभीर चोटें आईं। उनके सिर पर गहरी चोट और चेहरे की कई हड्डियां टूटी हैं। उसे तुरंत अस्पताल ले जाया गया, जहां उसका रातभर उपचार चलता रहा।

साउथ ऑस्ट्रेलिया पुलिस ने रविवार को एनफील्ड इलाके से एक युवक (20 वर्षीय) को गिरफ्तार किया है और उस पर हमला कर नुकसान पहुंचाने का आरोप लगाया गया है। हालांकि, बाकी हमलावर घटना के बाद मौके से फरार हो गए और उनकी पहचान अब तक नहीं हो पाई है। पुलिस ने आम लोगों से मदद मांगी है ताकि वह बाकी हमलावरों को पकड़ सके। इस हमले से एडिलेड में भारतीय समुदाय आक्रोश में है।

आयरलैंड में भारतीय पर नस्लभेदी हमला और मारपीट

डबलिन , एजेंसी। आयरलैंड की राजधानी डबलिन इलाके में 40 वर्षीय भारतीय व्यक्ति पर नस्लभेदी हमला किया गया है। घायल शख्स अस्पताल में भर्ती है। पीड़ित तीन हफ्ते पहले काम की तलाश में वहां पहुंचा था। हमलावरों ने उसे बेरहमी से पीटा। उसके चेहरे, हाथों और पैरों में गहरी चोटें आई हैं। आयरलैंड में भारतीय राजदूत ने अपराधियों को न्याय के कटघरे में लाने का आह्वान किया है। स्थानीय रिपोर्टों के अनुसार शनिवार शाम को टैलाट के पार्कहिल रोड पर उस पर हमला हुआ। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। पुलिस ने कहा, सूचना मिलते ही घटनास्थल पर पहुंचे। घायल को टैलाट विश्वविद्यालय अस्पताल ले जाया गया। आयरलैंड में भारतीय राजदूत अखिलेश मिश्रा ने सोशल मीडिया पर इस हमले पर अपनी हैरानी जताई। उन्होंने इस हिंसक हमले की आयरिश मीडिया कवरेज पर भी सवाल उठाए। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, एक कथित हमले से इतनी भयानक चोट और खून कैसे आ सकता है? आयरलैंड के राष्ट्रीय मीडिया आउटलेट की असंवेदनशीलता और अस्पष्टता देखकर स्तब्ध हूं। उम्मीद है कि दोषियों को न्याय के कटघरे में लाया जाएगा। एक स्थानीय अखबार के अनुसार टैलाट साउथ के फाइन गेल पार्टी के पार्षद बेबी पेरेप्पाडन ने सोमवार को उस व्यक्ति से मुलाकात की। उन्होंने कहा कि वह अब भी सदमे में है।

एक कमजोर पासवर्ड और चली गईं 700 नौकरियां, साइबर अटैक ने बर्बाद कर दी 158 साल पुरानी कंपनी

लंदन, एजेंसी। एक साधारण-सा कमजोर पासवर्ड 158 साल पुरानी ब्रिटिश कंपनी के पतन का कारण बन गया। इसके चलते 700 कर्मचारियों की नौकरियां चली गईं। दरअसल डेढ़ सदी पुरानी लॉजिस्टिक्स कंपनी केएनपी को एक साइबर अटैक के चलते अपना ऑपरेशन पूरी तरह बंद करना पड़ा और लगभग 700 कर्मचारियों को नौकरी से निकालना पड़ा। यह हमला एक कमजोर पासवर्ड के जरिए हुआ, जिससे हैकरों ने कंपनी की पूरी आईटी सिस्टम को जकड़ लिया। बीबीसी की जांच में सामने आया है कि अकिरा नामक रैनसमवेयर गिरोह ने कंपनी के सिस्टम में सेंध लगाकर इसके महत्वपूर्ण डेटा को एन्क्रिप्ट कर दिया और एक भारी-भरकम राशि की फिरौती मांगी, जिसे कंपनी चुका नहीं सकी।

आखिर क्या हुआ था? केएनपी लॉजिस्टिक्स को पहले नाइट्स ऑफ ओल्ड के नाम से जाना जाता था। यह एक नॉर्थम्प्टनशायर आधारित परिवहन कंपनी थी, जो 1865 से संचालित हो रही थी। कंपनी के पास लगभग 500 लॉरियां थीं और यह 700 से अधिक कर्मचारियों को रोजगार दे रही थी। इसके बावजूद कि कंपनी ने उद्योग मानकों के अनुरूप आईटी सिस्टम और साइबर हमले के खिलाफ बीमा लिया हुआ था फिर भी यह एक साइबर हमले का शिकार हो गई। बीबीसी की रिपोर्ट के

अनुसार, अकिरा रैनसमवेयर गिरोह ने कंपनी के सिस्टम में प्रवेश करने के लिए एक कर्मचारी के कमजोर पासवर्ड का फायदा उठाया। संभवतः हैकर्स ने इस पासवर्ड का अनुमान लगाकर कंपनी के आंतरिक नेटवर्क तक पहुंच बनाई। इसके बाद, उन्होंने कंपनी के डेटा को एन्क्रिप्ट कर दिया और महत्वपूर्ण सिस्टम को लॉक कर दिया, जिससे कंपनी का संचालन पूरी तरह ठप हो गया।

हैकर्स ने फिरौती के लिए एक नोट छोड़ा, जिसमें लिखा था, अगर आप यह पढ़ रहे हैं, तो इसका मतलब है कि आपकी कंपनी का आंतरिक ढांचा पूरी तरह या आंशिक रूप से नष्ट हो चुका है... आंसुओं और नाराजगी को छोड़कर आइए एक रचनात्मक संवाद बनाएं। हालांकि हैकर्स ने फिरौती की राशि स्पष्ट नहीं की, लेकिन एक विशेषज्ञ रैनसमवेयर वार्ता फर्म ने अनुमान लगाया कि यह राशि 50 लाख पाउंड (लगभग 58 करोड़ रुपये) तक हो सकती थी। केएनपी के पास इतनी बड़ी राशि नहीं थी, और अंततः सारा डेटा नष्ट हो गया, जिसके बाद कंपनी दिवालिया हो गई।

संघीय अपील अदालत में ट्रंप के खास एमिल बोवे को आजीवन न्यायाधीश बनाने की तैयारी, विरोध में डेमोक्रेट सांसद

वॉशिंगटन, एजेंसी। संघीय अपील अदालत में ट्रंप के खास माने जाने वाले न्याय विभाग के शीर्ष अधिकारी एमिल बोवे को स्थायी न्यायाधीश बनाने की तैयारी हो गई है। सीनेट ने बोवे के नामांकन पर विचार करना शुरू कर दिया है। हालांकि उनके नामांकन को लेकर विरोध भी शुरू हो गया। डेमोक्रेट सांसद ने बोवे के नामांकन के विरोध में मतदान किया है। इसमें एक रिपब्लिकन सांसद भी शामिल है। डेमाक्रेट सांसदों का कहना है कि अगर बोवे न्यायाधीश बन जाते हैं तो न्यायिक प्रक्रिया निष्पक्ष नहीं रह जाएगी।

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के पूर्व आपराधिक बचाव वकील एमिल बोव अब न्याय विभाग में एक शीर्ष अधिकारी हैं। तीसरे अमेरिकी सर्किट कोर्ट ऑफ अपील्स के लिए उनके नामांकन की डेमोक्रेट्स ने कड़ी आलोचना की है। सांसदों का कहना है कि न्यूयॉर्क शहर के मेयर एरिक एडम्स के खिलाफ न्याय विभाग द्वारा खारिज किए गए भ्रष्टाचार के मामले में वह सबसे आगे थे। बोवे ने एफबीआई अधिकारियों पर अवज्ञा का भी आरोप लगाया है क्योंकि उन्होंने 2021 में अमेरिकी कैपिटल पर हुए हमले की जांच करने वाले एजेंटों के नाम देने से इनकार कर दिया गया था। उनके नामांकन के बाद डेमोक्रेट सांसदों ने अतिरिक्त प्रक्रियात्मक मतदान के लिए दबाव डाला। यह सांसदों की ओर से नामांकन का विरोध करने और प्रक्रिया में देरी करने की एक कोशिश थी। इस दौरान 50-48 वोट पड़े। सीनेट के डेमोक्रेटिक नेता चक शूमर ने बोव को ट्रंप का अब तक का सबसे खराब न्यायिक उम्मीदवार कहा। उन्होंने कहा कि बोव का पूरा करिअर एक ही बात पर आधारित है और वह है डोनाल्ड ट्रंप के प्रति निष्ठा। अलास्का की सीनेटर और रिपब्लिकन सांसद लिसा मुर्कोव्स्की ने नामांकन पर विचार करने के खिलाफ डेमोक्रेट्स के साथ मतदान किया। जबकि मेन से रिपब्लिकन सीनेटर सुसान कॉलिन्स ने आगे बढ़ने के लिए रिपब्लिकन के साथ मतदान किया। मगर उन्होंने कहा कि वह अंतिम मतदान में बोव की नियुक्ति का विरोध करेंगी। कॉलिन्स ने कहा कि हमें ऐसे न्यायाधीश चाहिए जो कानून के शासन और संविधान का पालन करें और ऐसा उनके व्यक्तिगत विचारों की परवाह किए बिना करें। बोव की राजनीतिक छवि और न्याय विभाग में उनके नेतृत्वकारी कार्यों के कारण मैं इस निष्कर्ष पर पहुंची हूं कि वे एक निष्पक्ष न्यायविद के रूप में काम नहीं कर पाएंगे। पैनल के शीर्ष डेमोक्रेट इलिनोइस सीनेटर डिक डर्बिन ने कहा कि बोव ने अपने पद का इस्तेमाल राष्ट्रपति के दुश्मनों के खिलाफ न्याय विभाग को हथियार बनाने के लिए किया है। जबकि सीनेट न्यायपालिका समिति के अध्यक्ष चक ग्रासली ने बोव का बचाव किया और कहा कि उन्हें उचित व्यवहार मिलना चाहिए। डेमोक्रेट्स ने बर्खास्त वकील की शिकायत को छिपाया था और उनके स्टाफ ने दावों की जांच की थी। बोव के नामांकन को लेकर तनाव और देरी ऐसे समय में हो रही है जब रिपब्लिकन ट्रंप के नामांकनों को जल्द से जल्द आगे बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। ट्रंप ने सीनेट के बहुमत नेता जॉन थून पर सत्र में बने रहने और अधिक न्यायाधीशों और कार्यकारी शाखा के अधिकारियों की नियुक्ति के लिए अगस्त अवकाश छोड़ने का दबाव डाला है।

भारत-पाकिस्तान संघर्ष विराम का श्रेय लेने से बाज नहीं आ रहे ट्रंप, फिर बोले- मैंने युद्ध रुकवाया

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप भारत-पाकिस्तान संघर्ष विराम का श्रेय लेने से बाज नहीं आ रहे हैं। करीब 20 से अधिक बार ट्रंप संघर्ष विराम का दावा कर चुके हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने मंगलवार को एक बार फिर कहा कि उन्होंने भारत और पाकिस्तान के बीच संघर्ष विराम कराया। इस संघर्ष में पांच फाइटर जेट मार गिराए गए थे। उन्होंने यह भी दावा किया कि भारत और पाकिस्तान के बीच संघर्ष परमाणु युद्ध में बदलने वाला था। जबकि भारत बार-बार इसका खंडन कर रहा है। वहीं ट्रंप के इस दावे को कांग्रेस ने सिल्वर जुबली करार दिया है। रिपब्लिकन सीनेटरों के लिए आयोजित एक रात्रिभोज के दौरान व्हाइट हाउस में बोलते हुए ट्रंप ने कहा कि हमने भारत और पाकिस्तान, कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य और रवांडा के बीच युद्ध रोक दिए। ये गंभीर युद्ध थे। भारत और पाकिस्तान में जो चल रहा था। वहां से विमानों को मार गिराया जा रहा था। मुझे लगता है कि पांच जेट मार गिराए गए थे। मैंने उन्हें फोन किया और कहा कि सुनो, अब और व्यापार नहीं। अगर तुम ऐसा करोगे, तो तुम्हारा भला नहीं होगा। वे दोनों शक्तिशाली परमाणु संपन्न देश हैं और ऐसा होता ही और कौन जानता है कि इसका क्या नतीजा होता। मैंने इसे रोक दिया। ट्रंप ने यह भी दावा किया कि अमेरिका ने ईरान की पूरी परमाणु क्षमता को नष्ट कर दिया है और कोसोवो और सर्बिया के

बीच संघर्ष को भी रोक दिया है। उन्होंने कहा कि कुछ लोग कह रहे हैं कि हमने युद्ध नहीं रोका, लेकिन हमने वह रोका जो युद्ध में बदल सकता था। हम सदन में अमेरिका की सराहना के लिए ऐसा कर रहे हैं। ठीक है, क्या आपको लगता है कि पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ऐसा करते? मुझे ऐसा नहीं लगता। क्या आपको लगता है कि उन्होंने कभी इनमें से किसी देश के बारे में सुना है? मुझे ऐसा नहीं लगता। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भी श्रेय लेने की कोशिश इससे पहले कार्यवाहक अमेरिकी प्रतिनिधि राजदूत डोरोथी शी ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में बहुपक्षवाद और विवादों के शांतिपूर्ण समाधान विषय पर आयोजित बैठक में भी भारत-पाकिस्तान संघर्ष विराम का श्रेय लेने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि दुनियाभर में जहां तक संभव हो अमेरिका विवादों से जुड़े पक्षों के साथ शांतिपूर्ण समाधान खोजने के लिए काम करता रहता है।

बलूच नेता का दावा- बुरी तरह नाकाम हुआ पाकिस्तानी सेना का शाहीन-3 मिसाइल परीक्षण

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तानी सेना ने हाल ही में अपनी शाहीन-3 मिसाइल का परीक्षण किया। लेकिन यह परीक्षण में बुरी तरह नाकाम रहा। यह मिसाइल परमाणु हथियार ले जाने में सक्षम है। मिसाइल बलोचिस्तान के डेरा गाजी खान इलाके से छोड़ी गई थी, जो नागरिक इलाकों के पास जाकर गिरी। बलूच नेता मीर यार बलोच ने मंगलवार को इसकी जानकारी दी। बलूच विद्रोही बलूचिस्तान को पाकिस्तान का हिस्सा नहीं मानते हैं और इस पर पाकिस्तान के कब्जे का विरोध करते हैं। बलूच नेता मीर यार बलोच ने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा, बलूच गणराज्य पाकिस्तान के बार-बार नाकाम मिसाइल परीक्षणों की कड़ी निंदा करता है। पाकिस्तान लगातार बलूचिस्तान की क्षेत्रीय अखंडता का उल्लंघन कर रहा है और आम नागरिकों की जान खतरे में डाल रहा है। उन्होंने कहा, पाकिस्तान की कब्जा करने वाली सेना ने 22 जुलाई को बलूचिस्तान गणराज्य में एक नाकाम मिसाइल परीक्षण किया। स्थानीय लोगों ने बताया कि यह मिसाइल बलूचिस्तान के डेरा गाजी खान इलाके से छोड़ी गई, जो नागरिक इलाकों के पास लूप सहरानी लेवी स्टेशन से केवल 500 मीटर उत्तर की ओर गिरी। अगर यह मिसाइल थोड़ी भी दिशा से भटक जाती, तो भारी जनहानि और संपत्ति को बड़ा नुकसान हो सकता था। उन्होंने कहा, यह कोई एकमात्र मामला नहीं है। पाकिस्तानी सेना लंबे समय से मिसाइल परीक्षण को एक बहाना बनाकर रणनीतिक क्षेत्रों से बलूच लोगों को जबरन हटाने का काम कर रही है, जिसमें डेरा बुगती, कहान और आसपास के इलाके शामिल हैं। स्थानीय लोगों ने धमकियों और डराने-धमकाने की घटनाओं की जानकारी दी है, जो एक बेहद

चिंताजनक चलन (पैटर्न) की ओर इशारा करता है। जबरन विस्थापन की नीति सरकारी स्तर पर की जा रही है, ताकि संसाधनों के दोहन के लिए खुला रास्ता मिल सके। मीर यार बलोच ने कहा, हाल के वर्षों में पाकिस्तान ने बलूचिस्तान का और अधिक सैन्यकरण कर दिया है। विदेशी ताकतों के साथ मिलकर इस क्षेत्र को उसने बैलिस्टिक मिसाइलों और अन्य आधुनिक हथियारों के परीक्षण स्थल में बदल दिया है। यह याद रखना जरूरी है कि यह पहली बार नहीं हुआ है। अक्तूबर 2023 में एक और नाकाम मिसाइल परीक्षण किया गया था, जिसमें पंजाब से छोड़ी गई मिसाइल डेरा बुगती की कृषि भूमि में गिर गई थी, जो आबादी वाले इलाकों के बेहद करीब थी। उन्होंने बताया, 28 मई 1998 को पाकिस्तान ने कब्जे वाले बलूचिस्तान के चगई जिले में बिना स्थानीय जनता की सहमति के छह परमाणु परीक्षण किए थे। दशकों बाद भी वह इलाका खतरनाक परमाणु विकिरण से प्रभावित है, जिससे कैंसर, पुरानी त्वचा की बीमारियां और दूसरी गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं अब भी स्थानीय बलूच लोगों में देखी जा रही हैं। उन्होंने आगे लिखा, हम संयुक्त राष्ट्र, यूएन सुरक्षा परिषद और संबंधित अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संगठनों से अपील करते हैं कि पाकिस्तान पर हथियारों की बिक्री पर प्रतिबंध लगाया जाए; उसके बैलिस्टिक मिसाइल और परमाणु कार्यक्रमों पर सख्त प्रतिबंध लगाए जाएं; बलूचिस्तान में आम नागरिकों और संप्रभुता पर बार-बार हो रहे हमलों की जांच करवाई जाए।

फ्रैक्चर के बावजूद बल्लेबाजी के लिए मैदान में उतरे ऋषभ पंत

मैनचेस्टर (भाषा)। ऋषभ पंत इंग्लैंड के खिलाफ चौथे क्रिकेट टेस्ट के पहले दिन पैर के अंगूठे में फ्रैक्चर के कारण मौजूदा टेस्ट में विकेटकीपर की जिम्मेदारी नहीं निभा पाएंगे लेकिन बृहस्पतिवार को दूसरे दिन बल्लेबाजी के लिए उतरे जबकि तमिलनाडु के विकेटकीपर एन. जगदीशन इस स्टार खिलाड़ी के कवर के रूप में भारतीय टीम जुड़ेंगे।

भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने कहा कि इस अहम मुकाबले में पंत टीम की जरूरत के अनुसार बल्लेबाज के रूप में उपलब्ध रहेंगे। ऋषभ पंत बुधवार को इंग्लैंड के तेज गेंदबाज क्रिस वोक्स की गेंद पर रिवर्स स्वीप करने के प्रयास में चोटिल हो गए थे। तब वह 37 रन पर खेल रहे थे। दाहिने पैर में चोट लगने के कारण वह रिटायर्ड हर्ट हो गए और स्कैन के लिए गए। बीसीसीआई ने 'एक्स' पर लिखा, 'मैनचेस्टर टेस्ट के पहले दिन दाहिने पैर में चोट लगने के बाद ऋषभ पंत बाकी मैच में विकेटकीपिंग नहीं कर पाएंगे। ध्रुव जुरेल विकेटकीपर की भूमिका निभाएंगे।'

बोर्ड ने कहा, 'चोट के बावजूद ऋषभ पंत दूसरे दिन टीम से जुड़ गए हैं और टीम की जरूरत के अनुसार बल्लेबाजी के लिए उपलब्ध रहेंगे।' इससे पहले बोर्ड से शुरुआत में संकेत मिले थे कि पंत सीरीज से बाहर हो गए हैं और उनके कवर के तौर पर इशान किशन को बुलाया जाएगा। शार्दुल ठाकुर के रूप में अपना छठा विकेट गंवाया जिसके बाद पंत बल्लेबाजी के लिए उतरे। इस 27 वर्षीय खिलाड़ी ने अपने आक्रामक अंदाज के कारण विश्व क्रिकेट में खास जगह बनाई है। उन्होंने इस सीरीज में भी अच्छा प्रदर्शन किया है।

अतिरिक्त स्कैन के बाद पंत अपने चोटिल पैर को सहारा देने के लिए 'मून बूट' (एक सुरक्षात्मक ऑर्थोपेडिक जूते) पहनकर स्टेडियम पहुंचे। बीसीसीआई के एक सूत्र ने बताया, 'वह अगले छह हफ्तों के लिए बाहर हो गए हैं। इशान किशन को कवर के तौर पर बुलाया जाएगा। उनकी मेटाटार्सल हड्डियों (टखने और पैर के अंगूठे के बीच स्थित पांच हड्डियों का समूह) में फ्रैक्चर लगता है। यह बिल्कुल भी अच्छी स्थिति नहीं है।'

पंत के दाहिने पैर से बहते खून को देखकर चोट की गंभीरता स्पष्ट नजर आ रही थी। उनके प्रभावित हिस्से में काफी सूजन भी थी। भारतीय टीम पहले ही चोटिल खिलाड़ियों की समस्या से जूझ रही है। ऑलराउंडर नितीश कुमार रेड्डी घुटने की चोट के कारण पहले ही सीरीज से बाहर हो चुके हैं जबकि तेज गेंदबाज आकाश दीप और अर्शदीप सिंह क्रमशः कमर में दर्द और उंगली की चोट के कारण चौथे टेस्ट मैच में नहीं खेल रहे हैं। किशन ने हाल ही में नॉटिंघमशर के लिए दो काउंटी मैच खेले थे।

टीम प्रबंधन केएल राहुल को विकेटकीपिंग करने के लिए भी कह सकता है, लेकिन उन्होंने 2023-24 सत्र में दक्षिण अफ्रीका दौरे के बाद से यह भूमिका नहीं निभाई है। टीम के अन्य विकेटकीपर ध्रुव जुरेल को चौथे टेस्ट मैच के लिए अंतिम एकादश में नहीं रखा गया था।

भारत को झटका

- बाकी मैच में ध्रुव जुरेल निभाएंगे विकेटकीपर की भूमिका
- कवर के तौर पर एन. जगदीशन टीम में शामिल होंगे

स्टोक्स के पंजे के बाद डकेट व क्रॉली के अर्धशतक, इंग्लैंड का पलड़ा भारी

मैनचेस्टर (भाषा)। कप्तान बेन स्टोक्स (72 रन पर पांच विकेट) ने आठ साल में पहली बार पांच विकेट चटकाकर भारत को 358 रन पर समेटा जिसके बाद बेन डकेट और जैक क्रॉली ने पहले विकेट के लिए शतकीय साझेदारी कर इंग्लैंड को पहली पारी में दो विकेट पर 225 रन तक पहुंचाकर चौथे क्रिकेट टेस्ट के दूसरे दिन मेजबान टीम का पलड़ा भारी रखा।

डकेट ने 100 गेंदों में 13 चौकों की मदद से 94 रन की पारी खेलने के अलावा क्रॉली (84) के साथ पहले विकेट के लिए 166 रन की साझेदारी करते हुए भारतीय गेंदबाजी आक्रमण की धज्जियां उड़ाकर इंग्लैंड को मजबूत स्थिति में पहुंचाया। दोनों सलामी बल्लेबाजों ने भारतीय तेज गेंदबाजों की दिशाहीन गेंदबाजी का पूरा फायदा उठाया और इस दौरान 'बैजबॉल' (हर हाल में आक्रामक होकर बल्लेबाजी करना) की झलक भी दिखाई जिसके लिए टीम मशहूर है।

दिन का खेल खत्म होने पर ओली पोप 20 जबकि जो रूट 11 रन बनाकर खेल रहे थे। इंग्लैंड अब भारत के पहली पारी के 358 रन के स्कोर से सिर्फ 133 रन पीछे है जबकि उसके आठ विकेट शेष हैं। स्टोक्स और जोफ्रा आर्चर (73 रन पर तीन विकेट) ने दूसरे दिन बेहतर गेंदबाजी करते हुए भारत को 358 रन पर समेटने में अहम भूमिका निभाई। ऋषभ पंत ने पैर में फ्रैक्चर के बावजूद 75 गेंद में 54 रन की पारी खेली। उन्हें चलने में परेशानी हो रही थी लेकिन इसके बावजूद उन्होंने अर्धशतक पूरा किया।

शार्दुल ठाकुर (41 रन, 88 गेंद) ने भी जुझारू पारी खेलकर भारत का स्कोर 350 रन के पार पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई। भारतीय तेज गेंदबाजों ने अच्छी शुरुआत नहीं की और दिशाहीन गेंदबाजी की। पदार्पण कर रहे तेज गेंदबाज अंशुल कंबोज (48 रन पर एक विकेट) अपने शुरुआती दो स्पैल में विकेट हासिल नहीं कर पाए जबकि अनुभवी जसप्रीत बुमराह और मोहम्मद सिराज भी अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं कर सके।

क्रॉली ने धीमी शुरुआत के बाद लय हासिल की और कुछ आकर्षक शॉट खेले। डकेट ने शार्दुल की गेंद पर दो रन के साथ सिर्फ 46 गेंद में अर्धशतक पूरा किया जबकि क्रॉली ने भी इसी गेंदबाज पर चौके के साथ 73 गेंद में अर्धशतक जड़ा। क्रॉली ने रविंद्र जडेजा (37 रन पर एक विकेट) का स्वागत छक्के और चौके के साथ किया लेकिन फिर बाएं हाथ के इसी स्पिनर की गेंद पर स्लिप में लोकेश राहुल को कैच देकर पैवेलियन लौट गए। उन्होंने 113 गेंद की अपनी पारी में 13 चौके और एक छक्का मारा।

डकेट और ओली पोप ने इसके बाद पारी को आगे बढाया। डकेट को अति आक्रामकता का खामियाजा भुगतना पड़ा जब वह कंबोज की शॉर्ट और बाहर की गेंद से छेड़छाड़ की कोशिश में विकेटकीपर ध्रुव जुरेल को कैच थमा बैठे जो पंत की जगह विकेटकीपिंग की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं।

स्कोर बोर्ड

भारत (पहली पारी) -		
यशस्वी जायसवाल का. ब्रूक बो. डॉसन		58
लोकेश राहुल का. क्रॉली बो. वोक्स		46
साई सुदर्शन का. कार्स बो. स्टोक्स		61
शुभमन गिल पगबाधा बो. स्टोक्स		12
ऋषभ पंत बो. जोफ्रा आर्चर		54
रविंद्र जडेजा का. ब्रूक बो. आर्चर		20
शार्दुल ठाकुर का. डकेट बो. स्टोक्स		41
वाशिंगटन सुंदर का. वोक्स बो. स्टोक्स		27
अंशुल कंबोज का. स्मिथ बो. स्टोक्स		00
जसप्रीत बुमराह का. स्मिथ बो. आर्चर		04
मोहम्मद सिराज (नाबाद)		05
अतिरिक्त -		**30**
कुल - (114.1 ओवर में सभी आउट)		**358**
विकेटपतन - 1/94, 2/120, 3/140, 4/235, 5/266, 6/314, 7/337, 8/337, 9/349		
गेंदबाजी - क्रिस वोक्स 23-5-66-1, जोफ्रा आर्चर 26.1-3-73-3, कार्स 21-1-71-0, बेन स्टोक्स 24-3-72-5, डॉसन 15-1-45-1, जो रूट 5-0-19-0		
इंग्लैंड (पहली पारी) -		
जैक क्रॉली का. राहुल बो. जडेजा		84
बेन डकेट का. स्थानापन्न बो. कंबोज		94
ओली पोप (खेल रहे हैं)		20
जो रूट (खेल रहे हैं)		11
अतिरिक्त -		**16**
कुल - (46 ओवर में दो विकेट पर)		**225**
विकेटपतन - 1/166, 2/197		
गेंदबाजी - बुमराह 13-4-37-0, कंबोज 10-1-48-1, सिराज 10-0-58-0, शार्दुल 5-0-35-0, जडेजा 8-0-37-1		

मैनचेस्टर : वाशिंगटन सुंदर को आउट करने पर बेन स्टोक्स और साथ में है ऋषभ पंत।

चौथा टेस्ट

- इंग्लैंड ने दो विकेट पर बनाए 225 रन
- बेन डकेट ने 94 रन व जैक क्रॉली ने 84 रन की पारी खेली
- भारत की पहली पारी 358 रन पर सिमटी
- पंत ने खेली 54 रन की पारी
- बेन स्टोक्स ने 72 रन देकर झटके पांच विकेट

संक्षिप्त खबरें

भारत इंग्लैंड में पांच टी-20 और तीन वनडे खेलेगा

मैनचेस्टर। इंग्लैंड एवं वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) ने बृहस्पतिवार को घोषणा की कि भारत अगले साल सीमित ओवरों की सीरीज के लिए इंग्लैंड का दौरा करेगा जिसमें पांच टी-20 अंतरराष्ट्रीय और तीन वनडे अंतरराष्ट्रीय मैच शामिल हैं। भारत का दौरा एक जुलाई को डरहम में टी-20 मैच से शुरू होगा, जिसके बाद मैनचेस्टर (चार जुलाई), नॉटिंघम (सात जुलाई), ब्रिस्टल (नौ जुलाई) और साउथम्प्टन (11 जुलाई) में मैच खेले जाएंगे। दोनों टीमों के बीच तीन मैचों की वनडे सीरीज 14 जुलाई से बर्मिंघम में शुरू होगी। इसके बाद 16 जुलाई को कार्डिफ और 19 जुलाई को लॉर्ड्स में मैच खेले जाएंगे। भारतीय महिला टीम भी अगले साल फिर से इंग्लैंड का दौरा करेगी। वह इंग्लैंड की महिला टीम के खिलाफ तीन मैचों की टी-20 सीरीज और एक टेस्ट मैच खेलेगी। एकमात्र टेस्ट मैच 10 जुलाई से लॉर्ड्स में खेला जाएगा।

श्रेयंका, प्रिया भारत 'ए' महिला टीम से बाहर

नई दिल्ली। ऑफ स्पिनर श्रेयंका पाटिल और लेग स्पिनर प्रिया मिश्रा भारत महिला 'ए' टीम के आगामी आस्ट्रेलिया दौरे से बाहर हो गई हैं। दोनों खिलाड़ियों का इस दौरे में भाग लेना बीसीसीआई द्वारा 10 जुलाई को दी जाने वाली फिटनेस मंजूरी पर निर्भर था लेकिन दोनों खिलाड़ी अभी 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस' में बीसीसीआई की मेडिकल टीम की देखरेख में हैं और वर्तमान में अपने खेलने के लिए वापसी के प्रोटोकॉल का पालन कर रही हैं। भारत 'ए' को आस्ट्रेलिया 'ए' के खिलाफ तीन टी-20, तीन 50 ओवर के मैच और चार दिवसीय एक लाल गेंद के मैच वाली बहु प्रारूप सीरीज खेलनी है। सात अगस्त को मैकाय में पहले टी-20 मैच के साथ शुरू होगी जिसके बाद नौ और 10 अगस्त को इसी मैदान पर अन्य दो मैच खेले जाएंगे। तीन वनडे मैच 13, 15 और 17 अगस्त को नॉर्थ्स में खेले जाएंगे।

फ्रिट्ज तीसरे दौर में, वीनस विलियम्स युगल में बाहर

वाशिंगटन। शीर्ष वरीयता प्राप्त टेलर फ्रिट्ज ने सीधे सेट में जीत दर्ज कर डीसी ओपन टेनिस टूर्नामेंट के तीसरे दौर में जगह बनाई लेकिन एक साल से भी अधिक समय बाद वापसी करने वाली वीनस विलियम्स को महिला युगल में हार का सामना करना पड़ा। विम्बलडन के सेमीफाइनल में पहुंचने वाले फ्रिट्ज ने अलेक्जेंडर वुकिक पर 6-3, 6-2 से जीत हासिल की। वीनस विलियम्स और उनकी जोड़ीदार हैली बैप्टिस्ट का युगल में टाईब्रेकर में दूसरी वरीयता प्राप्त टेलर टाउनसेंड और झांग शुआई की जोड़ी से 6-4, 3-6, 10-6 से हार गयी।

स्पेन की महिला फुटबाल टीम यूरो कप के फाइनल में

ज्यूरिख। टूर्नामेंट शुरू होने से पहले बीमार होने के कारण कुछ दिन अस्पताल में बिताने वाली ऐताना बोनमाटी के अतिरिक्त समय में किए गए गोल की मदद से स्पेन ने जर्मनी को 1-0 से हराकर महिला यूरोपीय फुटबाल चैंपियनशिप (यूरो 2025) के फाइनल में प्रवेश किया जहां रविवार को उसका सामना इंग्लैंड से होगा। दोनों टीम निर्धारित समय में गोल नहीं कर पाई थी इसके बाद दो बार की बैलन डी'ओर विजेता बोनमाटी ने अतिरिक्त समय में 113वें मिनट में निर्णायक गोल किया।

बीसीसीआई यूएई में एशिया कप की मेजबानी के लिए तैयार, भारत-पाक मैच की संभावना

नई दिल्ली/ढाका (भाषा)। बीसीसीआई संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में आगामी एशिया कप टी-20 टूर्नामेंट की मेजबानी के लिए तैयार है और इसकी औपचारिक घोषणा कुछ ही दिनों में होने की उम्मीद है। एशियाई क्रिकेट परिषद (एसीसी) के सूत्रों ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। एसीसी की बैठक के बाद यह फैसला हुआ जिसमें सभी 25 सदस्य देशों ने आयोजन स्थल पर चर्चा के लिए हिस्सा लिया।

बीसीसीआई का प्रतिनिधित्व इसके उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला ने वर्चुअली किया। एसीसी के एक सूत्र ने बताया, 'बीसीसीआई यूएई में एशिया कप की मेजबानी करेगा। भारत के अपने सभी मैच दुबई में खेलने की संभावना है। कार्यक्रम पर अब भी विचार-विमर्श चल रहा है।' यह टूर्नामेंट सितम्बर में दो सप्ताह से थोड़ा अधिक समय तक चलेगा। इसे महीने के अंतिम सप्ताह से पहले समाप्त करना होगा क्योंकि इसी समय भारत को वेस्ट इंडीज के खिलाफ टेस्ट सीरीज खेलनी है।

एसीसी बैठक

बीसीसीआई सचिव देवजीत सैकिया ने बताया, 'हमारे उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला एसीसी बैठक में शामिल हुए। वह सदस्यों को जानकारी देंगे। मैं अटकलों पर विश्वास नहीं करता इसलिए आपको कुछ दिनों में आधिकारिक तौर पर पता चल जाएगा।' ढाका में एसीसी अध्यक्ष और पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के प्रमुख मोहसिन नकवी ने भी महाद्वीपीय प्रतियोगिता में संभावित भारत-पाक मैच के बारे में पूछे जाने पर कुछ नहीं बताया। नकवी ने पत्रकारों से कहा, 'हम जल्द ही इसकी घोषणा करेंगे। हमने बीसीसीआई के साथ चर्चा की थी और कुछ मुद्दे हैं जिन्हें हम जल्द ही सुलझा लेंगे।

उन्नति ने सिंधु को हराया, प्रणय बाहर सात्विक-चिराग क्वार्टर फाइनल में

चांग्झू (भाषा)। उन्नति हुड्डा ने अपने कॅरियर का सबसे बड़ा उलटफेर करते हुए दो बार की ओलंपिक पदक विजेता और भारतीय बैडमिंटन की दिग्गज खिलाड़ी पीवी सिंधु को तीन गेम तक चले रोमांचक मुकाबले में हराकर बृहस्पतिवार को चाइना ओपन सुपर 1000 टूर्नामेंट के क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया।

अपनी प्रतिष्ठित हमवतन खिलाड़ी का केवल दूसरी बार सामना करते हुए 17 वर्षीय हुड्डा ने कठिन क्षणों में धैर्य बनाए रखा और 73 मिनट में 21-16, 19-21, 21-13 से जीत दर्ज की। वह पहली बार किसी सुपर 1000 प्रतियोगिता के क्वार्टर फाइनल में पहुंची है। रोहतक की इस किशोरी ने 2022 ओडिशा मास्टर्स और 2023 अबू धाबी मास्टर्स में सुपर 100 खिताब जीते थे। वह अगले दौर में जापान की तीसरी वरीयता प्राप्त और दो बार की विश्व चैंपियन अकाने यामागुची से भिड़ेगी।

चाइना ओपन बैडमिंटन

उन्नति ने कहा कि वह खुद भी इस जीत से हैरान हैं। उन्होंने मैच के बाद कहा, 'मुझे उम्मीद नहीं थी कि मैं आज जीत जाऊंगी। लेकिन मैं यह सोचकर आई थी कि मैं अपना सर्वश्रेष्ठ करूंगी। मैच का नतीजा भले ही कुछ भी रहे। इसलिए उनके खिलाफ जीतना मेरे लिए भी हैरानी भरा था।' उन्नति कहा, 'लेकिन मैं खुश हूं कि मैं आज उनके खिलाफ जीतने में सफल रही। यह मेरे लिए काफी मुश्किल मैच था।'

सिंधु ने कहा कि शटल को नियंत्रित करना मुश्किल था। उन्होंने कहा, 'मुझे लगा कि शटल को नियंत्रित करना थोड़ा मुश्किल था। तीसरे गेम में उसने बढ़त बनाई और इसे बरकरार रखा।' हुड्डा के बारे में सिंधु ने कहा, 'यह उसके लिए अच्छा है। मैं उसे शुभकामना देती हूं। वह आगे बढ़ रही है, उसे शुभकामनाएं।' सिंधु सात साल में पहली बार किसी अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में किसी साथी भारतीय से हारी हैं। पिछली बार उन्हें 2018 कॉमनवेल्थ गेम्स के फाइनल में सायना नेहवाल से हार का सामना करना पड़ा था। वह 2019 राष्ट्रीय चैंपियनशिप के फाइनल में भी सायना से ही हार गई थी।

इससे पहले सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की जोड़ी ने इंडोनेशिया के लियो रोली कार्नाडो और बगास मौलाना को सीधे गेम में हराकर पुरुष युगल के क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया। विश्व की पूर्व नंबर एक भारतीय जोड़ी ने अपने धैर्य का अच्छा नमूना पेश करते हुए एक कड़े मुकाबले में आठवीं वरीयता प्राप्त इंडोनेशियाई जोड़ी पर 21-19, 21-19 से जीत हासिल की। चिराग ने मैच के बाद कहा, 'यह काफी उतार चढाव वाला मैच था और कोई भी टीम किसी भी समय बड़ी बढ़त हासिल नहीं कर पाई।

पहले गेम के आखिर में हम लगातार तीन-चार अंक बनाने में सफल रहे। दूसरे गेम के शुरू में हम थोड़ा अधिक धैर्य के साथ खेल सकते थे लेकिन उन्होंने अच्छा प्रदर्शन किया। मुझे खुशी है कि हम आखिर में मैच जीतने में सफल रहे।' एचएस प्रणय 65 मिनट तक चले पुरुष एकल के दूसरे दौर के मैच में चीनी ताइपे के छठे वरीय चोऊ टिएन चेन से 21-18, 15-21, 8-21 से हारकर बाहर हो गए।

फिडे महिला विश्व कप फाइनल में हम्पी की भिड़ंत दिव्या से

बातुमी, जॉर्जिया (भाषा)। ग्रैंडमास्टर कोनेरू हम्पी ने बृहस्पतिवार को फिडे महिला विश्व कप सेमीफाइनल में चीन की टिगजी लेई को टाईब्रेकर में पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए हरा दिया और अब फाइनल उनका सामना हमवतन भारतीय दिव्या देशमुख से होगा। शनिवार से होने वाले फाइनल में जगह बनाने वाली हम्पी और दिव्या दोनों ने अगले साल होने वाले महिला कैंडिडेट्स टूर्नामेंट के लिए क्वालीफाई कर लिया है।

सामान्य समय नियंत्रण में पहली दो बाजी ड्रा होने के बाद हम्पी को टाईब्रेकर में 1-1 से ड्रा के साथ संतोष करना पड़ा जिसमें दोनों खिलाड़ियों के लिए 15-15 मिनट की दो बाजी अतिरिक्त समय के साथ थी। अगली दो टाईब्रेक बाजी 10-10 मिनट की थी। लेई ने पहली बाजी जीतकर बढ़त बनाई लेकिन हम्पी ने मुश्किल स्थिति में होने के बावजूद दूसरी बाजी जीतकर मुकाबला फिर बराबर कर दिया।

टाईब्रेक बाजी के तीसरे सेट में हम्पी ने पहली बाजी में सफेद मोहरों से शुरुआत की और खेल के सभी विभागों में लेई को परास्त करते हुए इसे जीत लिया। पहली बाजी जीतने के बाद फाइनल में पहुंचने के लिए हम्पी को बस एक ड्रा की जरूरत थी और उन्होंने जीत हासिल कर खिताबी मुकाबले में जगह बनाई।

चांग्झू : चाइना ओपन में पीवी सिंधु को हराने के दौरान एक्शन में भारत की उन्नति हुड्डा।

तन्वी शर्मा और वेन्नाला क्वार्टर फाइनल में

इंडोनेशिया (भाषा)। तन्वी शर्मा और वेन्नाला कलागोटला ने बृहस्पतिवार को यहां बैडमिंटन एशिया जूनियर चैंपियनशिप के क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई जबकि भार्गव राम और विश्व तेज की जोड़ी अंतिम चार में पहुंच गई। दूसरी वरीयता प्राप्त तन्वी शर्मा ने राउंड ऑफ 32 में चीन की शि सी चेन को 21-19, 21-14 से हराया और इसके बाद थाईलैंड की फन्नाचेट पासा-ओर्न को 21-14, 21-15 से हराकर अंतिम आठ में जगह बनाई। लगातार दूसरे दिन वेन्नाला ने लगातार दो दौर के मुकाबले जीतकर क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया।

पुरुष युगल में राम और तेज ने जापान के हारू मसुदा और शोगो मियाशिता को 21-15, 21-15 से हराया। पुरुष एकल में रौनक चौहान ने थाईलैंड के उत्चन रूएसप को 25-23, 21-18 से हराया जबकि अंश नेगी ने वियतनाम के ले मिन्ह सोन को 21-14, 21-16 से शिकस्त दी। दोनों भारतीय खिलाड़ी अंतिम 16 में पहुंच गए। महिला युगल में वेन्नाला कलागोटला और रेशिका यू की भारतीय जोड़ी ने हांगकांग की एयू यंग विंग ची और यी किउ यू को 21-7, 21-16 से हराकर अंतिम 16 में जगह पक्की की।

नागल टैम्पियर ओपन के क्वार्टर फाइनल में

नई दिल्ली (भाषा)। भारत के शीर्ष एकल खिलाड़ी सुमित नागल ने नीदरलैंड के मैक्स हूकेस को हराकर टैम्पियर चैलेंजर स्पर्धा के क्वार्टर फाइनल में प्रवेश कर लिया जबकि अर्जुन काधे और विजय सुंदर प्रशांत स्विट्जरलैंड में जुग ओपन के पुरुष युगल क्वार्टर फाइनल में हार गए। मैच के लिए सर्विस करते हुए नागल को दूसरे सेट के 10वें गेम में कई ब्रेक प्वाइंट का सामना करना पड़ा लेकिन वह 6-2, 6-4 से जीत के साथ अगले दौर में जगह बनाने में सफल रहे।

अगले दौर में नागल का सामना अर्जेंटीना के क्वालीफायर निकोलस किकर से होगा जिन्होंने नॉर्वे के पांचवीं वरीयता प्राप्त विक्टर डुरासोविक को हराया। इस महीने इटली के ट्राइस्टे में क्वालीफायर के रूप में सेमीफाइनल तक पहुंचना नागल का इस सत्र का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रहा है। नागल ने अपने कॅरियर में छह चैलेंजर एकल खिताब जीते हैं।

इस बीच एटीपी चैलेंजर जुग ओपन में शीर्ष वरीयता प्राप्त काधे और प्रशांत क्वार्टर फाइनल में शिमोन कीलन और फिलिप पिएजोंका की पोलैंड की जोड़ी से 3-6, 4-6 से हारकर बाहर हो गए। काधे और प्रशांत ने जिरिज बर्नाट और फिलिप डूडा की चेक गणराज्य की जोड़ी को 6-1, 6-4 से हराकर अंतिम आठ में जगह बनाई थी।

आईओए ने सीईओ को लेकर विवाद किया खत्म डोपिंग से निपटने के लिए पैनल का गठन

नई दिल्ली (भाषा)। भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) की कार्यकारी परिषद ने बृहस्पतिवार को एक लंबे विवाद को खत्म करते हुए मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) रघुराम अय्यर की नियुक्ति को मंजूरी दे दी और डोपिंग से निपटने के लिए एक पैनल का गठन किया। अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक परिषद (आईओसी) ने 2036 ओलंपिक की दावेदारी के लिए भारतीय प्रतिनिधिमंडल के दौरे के दौरान डोपिंग में देश के खराब रिकॉर्ड पर चिंता जताई थी, इसलिए इससे निपटना काफी अहम है।

कार्यकारी परिषद के सदस्यों ने जनवरी 2024 में अध्यक्ष पीटी ऊषा द्वारा की गई अय्यर की नियुक्ति को मंजूरी देने से इनकार कर दिया था जिसका मुख्य कारण उनका 20 लाख रुपए प्रति माह का वेतन और अन्य भत्ते थे। हालांकि खेल मंत्री मनसुख मांडविया के हस्तक्षेप के बाद इस संबंध में मतभेद सुलझ गए जिससे अय्यर की औपचारिक नियुक्ति का रास्ता साफ हो गया। ऊषा ने आईओए मुख्यालय में अय्यर के साथ प्रेस कांफ्रेंस में कहा, 'सब कुछ सुलझ गया है इसलिए सीईओ (अय्यर) मेरे साथ बैठे हैं। वरना वह मेरे साथ यहां नहीं बैठे होते।'

उन्होंने कहा, 'अब आगे भी सब कुछ सुचारू रूप से चलेगा। वैसे भी आईओए के कामकाज में कोई रुकावट नहीं आई। हमने पेरिस ओलंपिक और एशियाई खेलों में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया। हमने दो राष्ट्रीय खेलों का भी आयोजन किया।' आईओए के संयुक्त सचिव कल्याण चौबे ने बताया कि बृहस्पतिवार को हुई कार्यकारी परिषद की बैठक में अय्यर की नियुक्ति को मंजूरी दे दी गई। उन्होंने कहा, 'कुछ मतभेद थे। हम यह नहीं कहेंगे कि कुछ नहीं था। पत्रों का आदान-प्रदान हुआ था। लेकिन लोकतंत्र में जब दो लोग होते हैं तो दो राय होती हैं और हमेशा मतभेद होते हैं। कोई भी सदन, कोई भी संगठन पूरी तरह से त्रुटिरहित नहीं हो सकता।'

उन्होंने कहा, 'बल्कि हमें खुशी है कि आईओए एक ऐसा सदन है जहां अलग अलग राय हैं। लेकिन अभी, हम आगे देखना चाहते हैं और राष्ट्रहित में आगे देखना चाहते हैं।' अय्यर ने कहा, 'हम सब यहां हैं और मैं भी यहीं हूं तो इसका मतलब है कि सब कुछ सुलझ गया है।' हालांकि पता चला है कि अय्यर के वेतन पैकेज पर बातचीत होने की संभावना है। एक अधिकारी ने बताया, 'उन्हें बहुत कम या बहुत ज्यादा वेतन नहीं मिलना चाहिए। लेकिन इतना ज्यादा भी नहीं। एनएसएफ में सीईओ स्तर के अधिकारियों की तुलना में भारतीय मानकों के हिसाब से उनका वेतन थोड़ा ज्यादा है।'

हरीश और हेमेश कुमार के प्रदर्शन से केसीए जीती

मैन ऑफ द मैच हेमेश कुमार (16 रन, तीन विकेट) के हरफनमौला खेल और हरीश (35 रन ना.) की बदौलत केसीए तमिलनाडु (179/6) ने द्वितीय स्वर्गीय श्री चमन लाल आसीवाल क्रिकेट टूर्नामेंट की पांच मैचों की सीरीज के चौथे मैच में आरकेवाई क्रिकेट अकादमी (175/10) पर चार से जीत दर्ज कर खुद को क्लीन स्वीप से बचाया। **संक्षिप्त स्कोर -** केसीए तमिलनाडु : 25 ओवर में 179/6 (हरीश 35 रन ना., प्रवीण राज 34 रन, चंदन पाठक 2/15, विक्की महतो 2/24)। आरकेवाई क्रिकेट अकादमी : 23.5 ओवर में 175/10 (प्रथम राज 71 रन ना., सरगुन 26 रन, हेमेश कुमार 3/27, हरि कॅष्णन 3/34)।

गुरांश और आदित्य चमके

मैन ऑफ द मैच आदित्य मौर्य (49 रन) की शानदार पारी और गुरांश सहगल के तीन विकेट की बदौलत राइजिंग स्टार क्रिकेट अकादमी (74/1) ने चौथे कांता देवी मेमोरियल अंडर-14 क्रिकेट टूर्नामेंट के लीग मैच में रॉयल गुलमोहर स्पार्टन्स क्रिकेट अकादमी (69/10) के खिलाफ नौ विकेट से जीत हासिल की। **संक्षिप्त स्कोर -** रॉयल गुलमोहर स्पार्टन्स क्रिकेट अकादमी : 20.1 ओवर में 69/10 (ओमकार 41 रन, गुरांश सहगल 3/8, वीरेन चड्ढा 2/6, युवराज शर्मा 2/16)। राइजिंग स्टार क्रिकेट अकादमी : 3.5 ओवर में 74/1 (आदित्य मौर्य 49 रन ना., वीरेन चड्ढा 14 रन, प्रांजवल 1/31)।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं संपादक प्रहलाद तेली के लिए मुद्रक अनिल राठी द्वारा अनिल प्रिन्टर्स एण्ड ऑफसेट, 5/एफ-2, न्यू हाउसिंग बोर्ड, शास्त्रीनगर, भीलवाड़ा 311001 (राज.) से मुद्रित एवं ऑफिस 957 वार्ड नंबर 24 धाकड़ मोहल्ला, शाहपुरा, भीलवाड़ा 311404 (राज.) से प्रकाशित। मो. नं. 9115108888, ई-मेल : kismatbhilwara@gmail.com (सभी प्रसंगों का न्याय क्षेत्र भीलवाड़ा होगा)